123 मिलियन मीट्रिक टन चीनी की खपत हुई थी पूरी दुनिया में वर्ष 2001 में, जो वर्ष 2018 में बढ़कर 172 मिलियन मीट्रिक टन तक पहुंच गई, इंटरनेशनल शुगर ऑर्गेनाइजेशन के आंकड़ों के अनुसार।

आजकल

कम्युनिस्ट भी हैं गांधी के गुनहगार

अनंत विजय

महात्मा गांधी पर भारतीय सिनेमा जगत में बहुत ही कम फिल्में बनाई गई हैं। गांधी पर बनी पहली स्तरीय फिल्म का निर्माण भी किसी भारतीय ने नहीं, बल्कि एक विदेशी ने किया। जवाहरलाल नेहरू के बारे में भी कहा जाता है कि उन्होंने गांधी पर फिल्म बनाए जाने के प्रति ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई। कम्युनिस्ट विचारधारा से जुड़े निर्माता-निर्देशकों ने भी गांधी पर फिल्म नहीं बनाई। इसके क्या कारण रहे, इस दौर में इस पर व्यापक चर्चा प्रासंगिक है

पिछले दिनों दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में एक पुस्तक चर्चा के दौरान बेहद दिलचस्प बातें हुईं। पुस्तक थी लेखक इकबाल रिजवी की गांधी और सिने संसार। इस पुस्तक में लेखक ने मोहनदास करमचंद गांधी और फिल्मों के रिश्तों पर रोचक तरीके से लिखा है। इस पुस्तक का प्रकाशन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने किया है। पुस्तक विमोचन के बाद उस पर एक चर्चा का आयोजन भी किया गया था जिसमें नेशनल अवॉर्ड से सम्मानित लेखक शरद दत्त, भारतीय ज्ञानपीठ के पूर्व निदेशक लीलाधर मंडलोई समेत कई अन्य लोग शामिल हुए थे। चर्चा के दौरान एक बात बार-बार आ रही थी कि गांधी पर किसी भारतीय निर्माता ने समग्रता में फिल्म क्यों नहीं बनाई? एक वक्ता ने इसको गांधी के व्यक्तित्व से जोड़ा और कहा कि बापू का जीवन इतना विराट था कि उसको तीन घंटे में समेटना बहुत मुश्किल काम है। एक अन्य वक्ता ने कहा कि टुकड़ों-टुकड़ों में गांधी को लेकर कई फिल्में बनीं और उन्होंने इसको कलात्मक स्वतंत्रता से जोड़ा और तर्क दिया कि फिल्मकार अपनी सोच के हिसाब से फिल्में बनाता है, किसी शख्सियत को ध्यान में रखकर नहीं। काफी देर तक यह मंथन होता रहा कि किसी भारतीय निर्माता-निर्देशक ने गांधी पर मुकम्मल फिल्म क्यों नहीं बनाई? नेहरू जी का संसद में दिया गया वह बयान भी सामने आया जिसमें उन्होंने कहा था कि भारतीय निर्माताओं में गांधी पर फिल्म बनाने की क्षमता नहीं है।

सवाल अनुत्तरित रहा कि गांधी पर भारतीय फिल्म निर्माताओं ने फिल्म क्यों नहीं बनाई। घंटे भर की चर्चा में यह संभव भी नहीं था कि इस गंभीर और गूढ़ विषय पर किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके। अब जरा अगर हम ऐतिहासिक तथ्यों पर गौर करें और वहां से मिल रहे संकेतों को जोड़ें तो शायद निष्कर्ष तक पहुंचने का रास्ता मिल सके। जब गांधीजी ने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की थी तो कम्युनिस्ट पार्टी ने इसका विरोध किया था। विरोध की वजह स्थानीय राजनीति या गांधी से मतभेद नहीं था, इसकी वजह थी कि कम्युनिस्ट पार्टी को मास्को ये इस आंदोलन का विरोध करने का निर्देश प्राप्त हुआ था। दरअसल जनवरी 1941 में रूस और जर्मनी के बीच व्यापक व्यावसायिक हितों को ध्यान में रखकर समझौता हुआ था। उसके पहले भी नाजी जर्मनी और सोवियत रूस ने युद्ध सामग्री का जमकर आदान-प्रदान किया था। लेकिन जब जून 1941 में हिटलर ने अपने पूर्व सहयोगी सोवियत रूस पर हमला कर दिया तो रातों-रात नाजियों के खिलाफ संघर्ष को सोवियत रूस ने दूसरा रंग देते हुए उसको जन-युद्ध बना दिया। इस रणनीति के तहत सोवियत रूस ने अपने एक विशेष दूत लार्किन को संदेश लेकर भारत भेजा जिसने कम्युनिस्ट पार्टियों को 'भारत छोड़ो आंदोलन' का विरोध करने का संदेश दिया। कम्युनिस्ट पार्टी ने 'पितृभूमि' से आए संदेश को ग्रहण करते हुए जोरदार तरीके से भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध शुरू कर दिया।

भारत उस वक्त गुलामी के खिलाफ अपनी लड़ाई के अंतिम दौर में प्रवेश कर चुका था और कम्युनिस्ट पार्टी भारत छोड़ो आंदोलन के खिलाफ जुलूस आदि निकालने लगी थी। देश की जनता को कम्युनिस्टों का ये रुख पसंद नहीं आ रहा था। जब कम्युनिस्टों ने भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध तेज किया तो जनता के सब्र का बांध टूट गया। हालात इतने बदतर हो गए और लोगों को गुस्सा इतना बढ़ गया था कि कम्युनिस्ट पार्टी कार्यकर्ता भारत छोड़ो आंदोलन के खिलाफ जुलूस निकालते थे तो लोग छतों से उन पर खौलता हुआ पानी फेंकते थे।

भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध करने की वजह से वर्ष 1942-43 में कम्युनिस्ट पार्टी की साख बुरी तरह से छीज गई थी। अपनी उसी छीज गई साख को नई पहचान और स्वीकृति देने के लिए कम्युनिस्टों ने भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) की स्थापना की। देश आजाद हुआ और कम्युनिस्टों ने देश की आजादी को झूठी आजादी करार दिया। इन सबके बीच भारतीय जन नाट्य संघ से जुड़े लोग हिंदी फिल्म जगत में स्थापित हो चुके थे या माहौल ऐसा बनाया गया कि हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की फिल्मों से जुड़े लोग इप्टा से जुड़ते चले गए। फिल्म जगत में कम्युनिस्टों का दबदबा बढ़ने लगा था, लेकिन कोई गांधी पर समग्रता में फिल्म बनाने की नहीं सोच रहा था। कोशिश भी नहीं हो रही थी। क्या इससे कोई संकेत निकलता है। क्या कम्युनिस्टों और उनसे संबद्ध संगठनों के कलाकारों ने गांधी की उपेक्षा उस वजह से की।

हिंदी फिल्मों में कम्युनिस्टों के प्रभाव को एक ही उदाहरण से समझा जा सकता है। वर्ष 1945 में महबूब खान ने एक फिल्म बनाई- हुमायूं। इस फिल्म में अशोक कुमार, नरगिस और वीणा ने अभिनय किया था और इसकी कहानी लिखी थी वाकिफ मुरादाबादी ने। फिल्म के शुरुआती फ्रेम को ध्यान से देखने और उस पर विचार करने की जरूरत है। सेंसर सर्टिफिकेट और फिल्म में योगदान स्मरण के बाद तीसरे फ्रेम में महबूब प्रोडक्शंस और उसका लोगो है। इस फिल्म कंपनी के लोगो को ध्यान से देखा जाना चाहिए। इसमें हंसिया और हथौड़ा है और उसके बीच में अंग्रेजी का एम लिखा है। एम से दो चीजें हो सकती हैं या तो महबूब या मार्क्स। एम से मार्क्स का अंदाज इस वजह से लगाया जा सकता है कि कम्युनिज्म का अंतरराष्ट्रीय निशान हंसिया और हथौड़ा है। जो शख्स कम्युनिस्ट पार्टी से इतना गहरे तक जुड़ा हो, उससे क्या यह उम्मीद की जा सकती है कि वह पार्टी के विरोधी के खिलाफ फिल्म बनाए। यह तो गांधी और उनके विचारों की ताकत थी जो महबूब खान की फिल्म 'मदर इंडिया' में उभर कर सामने आती है। मदर इंडिया में महबूब खान गांधी से बचते हैं, लेकिन फिल्म को गांधी के प्रभाव से नहीं बचा पाते। इस फिल्म की कहानी नायिका का यौन शोषण और हिंसा के खिलाफ अहिंसक तरीके से प्रतिकार का है।

हिंदी फिल्मों में इप्टा के प्रभाव वाले निर्माताओं, निर्देशकों और लेखकों ने भी गांधी को दरकिनार किया और गांधीवाद को अपनाया, चाहे वो फिल्म 'श्री 420 हो', 'नया दौर' हो या फिर 1952 में बनी फिल्म 'आंधियां' हो। इन फिल्मों में समाजवाद और मार्क्सवाद को परोक्ष रूप से लाया गया, लेकिन यहां भी मार्क्सवाद को गांधी के कंधे की जरूरत पड़ी। फिल्म आंधियां में जब गांववाले सूदखोर का विरोध करते हैं तो सिद्धांत तो समाजवादी होता है, पर विरोध का औजार गांधीवादी। गांववाले सूदखोरों के खिलाफ सत्याग्रह करते हैं। ऐसे दर्जनों उदाहरण हैं जहां इप्टा से जुड़े फिल्मकारों ने गांधी का उपयोग किया, पर गांधी पर फिल्म नहीं बनाई।

नेहरू ने भी किसी पर भरोसा नहीं किया कि वो गांधी पर फिल्म बना सकें, बल्कि उन्होंने तो संसद में कहा कि भारत में किसी में क्षमता नहीं है कि वह गांधी पर फिल्म बना सकें। रिचर्ड एटनबरो जब नेहरू से मिले थे तब गांधी पर फिल्म बनाने की बात बहुत गंभीरता से आगे बढ़ी थी। तब भी नेहरू ने एटनबरो से यह कहा था कि 'गांधी जी एक महान व्यक्ति थे, लेकिन उनके व्यक्तित्व में भी कमजोरियां थीं, उनकी विफलताएं भी थीं। हम हिंदुओं में एक प्रवृत्ति है कि जब हम किसी को महान समझते हैं तो उसको भगवान भी समझने लगते हैं। गांधी जी भी मनुष्य थे, एक जटिल मनुष्य और उनको उसी तरह से देखा जाना चाहिए।' वर्ष 1958 के बाद नेहरू और एटनबरो की कई बैठकों में से एक बैठक में नेहरू ने उनसे यह भी कहा था कि गांधी पर बनने वाली फिल्म में उनको भगवान या संत नहीं बनाना चाहिए। फिर गांधी के जीवन पर बनने वाली फिल्म में होनेवाले खर्चे को लेकर भी लंबे समय तक भारत सरकार फैसला नहीं ले सकी। दरअसल एटनबरो चाहते थे कि भारत सरकार गांधी पर फिल्म बनाने के उनके प्रोजेक्ट को वित्तीय मदद मुहैया कराए। आखिरकार इंदिरा गांधी ने दस लाख डॉलर का अनुदान दिया और एटनबरो ने फिल्म बनाई।

यह आज तक रहस्य बना हुआ है कि किसी भी भारतीय फिल्म निर्माता ने गांधी पर समग्रता में फिल्म क्यों नहीं बनाई। आज जब बॉयोपिक का दौर चल रहा है और मैरी कॉम से लेकर सचिन तेंदुलकर तक पर बयोपिक बन रहे हैं, लेकिन अब भी गांधी पर फिल्म बनाने को लेकर किसी तरह की कोई पहल दिखाई नहीं देती। इस बात पर संवाद होना चाहिए, चर्चा होनी चाहिए कि आजादी के बाद के दशकों में किसी भारतीय फिल्म निर्माता ने फिल्म क्यों नहीं बनाई? इस लेख में जिन बिंदुओं की ओर इशारा किया गया है उस पर व्यापक बहस से किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है।

फिर से

सबसे ज्यादा कहां खाते हैं चीनी

वर्ष 2018 में इजराइल में प्रति व्यक्ति चीनी की खपत 60 किलोग्राम से ज्यादा थी यानी औसतन प्रति व्यक्ति रोजाना 165 ग्राम से ज्यादा चीनी। इंटरनेशनल शुगर ऑर्गेनाइजेशन (आइएसओ) से प्राप्त आंकड़ों के मुताबिक दुनिया में सबसे ज्यादा चीनी की प्रति व्यक्ति खपत इजराइल में होती है। इजराइली नेशनल काउंसिल ऑफ डायबिटीज के प्रमुख प्रोफेसर इटामार राज कहते हैं, 'इजराइल में औसत वयस्क हर दिन 30 चम्मच से ज्यादा चीनी खाता है।

सबसे ज्यादा चीनी खाने वाले पांच देशों में इजराइल के बाद मलेशिया, बारबाडोस, फिजी और ब्राजील का स्थान आता है। वहीं सबसे कम चीनी की खपत उत्तर कोरिया में है, जहां 2018 में प्रति व्यक्ति चीनी की खपत मात्र साढ़े तीन किलोग्राम थी, जबकि दक्षिण कोरिया में यह खपत प्रति व्यक्ति 30 किलोग्राम थी। जहां तक अमेरिका की बात है तो वहां प्रति व्यक्ति चीनी की खपत 31 किलोग्राम थी। लेकिन आंकड़ों के हिसाब से चीनी की खपत सबसे ज्यादा भारत में होती है। वर्ष 2018 में भारत में 25.39 मिलियन मीट्रिक टन चीनी की खपत हुई है, जो यूरोपीयन यूनियन के सभी देशों को मिलाकर चीनी की खपत से कहीं ज्यादा है।

कई बार खपत के आंकड़ों से यह पता नहीं चलता है कि लोग अपने खाने पीने में चीनी का कितना इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके अलावा यह भी समझने की जरूरत है कि जिसे स्वास्थ्य विशेषज्ञ शुगर फ्री कहते हैं उसे तैयार करते वक्त ही उसमें चीनी मिला दी जाती है। कुछ खान-पान में तो चीनी की मात्रा स्वाभाविक तौर पर ज्यादा होती है, जैसे फलों का जूस। दुनिया भर में चीनी की खपत लगातार बढ़ रही है। इंटरनेशनल शुगर ऑर्गेनाइजेशन के आंकड़ों के मुताबिक 2001 में चीनी की खपत 123.4 मिलियन मीट्रिक टन थी जो 2018 में बढ़कर 172.4 मिलियन मीट्रिक टन तक पहुंच गई है।

इस हिसाब से देखें तो दुनिया भर में प्रति व्यक्ति चीनी की वार्षिक खपत 22.6 किलो के करीब है। लेकिन सवाल यही है कि हम लोग ज्यादा चीनी क्यों खा रहे हैं? इसकी एक प्रमुख वजह तो यही है कि परंपरागत तौर पर हमारे शरीर के लिए ऊर्जा के स्रोत के तौर पर चीनी सस्ता और सुलभ है। अमेरिकी फूड एंड एग्रीकल्चरल ऑर्गेनाइजेशन (एफएओ) के मुताबिक भारत में चीनी, 'आम लोगों के इस्तेमाल का जरूरी अवयव और गरीबों के लिए ऊर्जा का सबसे सस्ता स्रोत है।'

हाल के समय में देश भर में चीनी की खपत बढ़ी है। बीती सदी के सातवें दशक में देश में वर्ष भर में 2.6 मिलियन मीट्रिक टन चीनी की खपत होती थी जो 1995 तक 13 मिलियन मीट्रिक टन तक बढ़ गया था। बीते पांच दशकों में हमारे खान-पान में प्रोसेस्ड फूड की खपत भी दुनिया भर में बढ़ी है।

अमेरिकी कृषि विभाग के आंकड़ों के मुताबिक 2012 के शुरुआती माह तक दुनिया भर में फूड प्रोडक्ट की बिक्री में 77 प्रतिशत हिस्सा प्रोसेस्ड फूड का है। प्रोसेस्ड

फूड का सबसे अहम अवयव होता है चीनी। कई बार स्वाद और कई बार प्रोडक्ट के इस्तेमाल की अवधि को बढ़ाने के लिए इसका इस्तेमाल होता है।

इंटरनेशनल शुगर ऑर्गेनाइजेशन के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर जोस ओराइव का कहना है, 'लोग स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाला बहुत कुछ खाते हैं, लेकिन चीनी को निशाना बनाया जा रहा है। चीनी की आलोचना ज्यादा होती है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह ऊर्जा का मुख्य स्रोत रही है चीनी। यह मां के दूध में भी होता है।' ओराइव का कहना है, 'मोटापे की महामारी से निपटने के लिए केवल चीनी को निशाना नहीं बनाया जाना चाहिए। दूसरे कारकों की भी भूमिका है, जैसे कि हमलोगों की डाइट की तुलना में शारीरिक गतिविधि भी कम हुई है। लेकिन हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि ज्यादा खाना किसी के लिए भी अच्छा नहीं है।'

(बीबीसी से संपादित अंश, साभार)

ट्वीट-ट्वीट

'गुड टच' और 'बैड टच' के अंतर के साथ-साथ शायद बच्चियों को अब सहायता के लिए बढ़ते हाथों का 'सच' भी बताना होगा!
प्रियंका शुक्ला@PriyankaJShukla

पेड़ बचाने की उद्धव ठाकरे की बात काबिले तारीफ है, लेकिन 250 स्टेशनों वाली 276 किमी लंबी मेट्रो जिंदगियां बचाएगी। बेतहाशा भीड़ से भरी लोकल ट्रेन के चलते रोजाना औसतन सात लोग मारे जाते हैं। मेट्रो से लोकल पर बोझ घटेगा और तस्वीर सुधरेगी।
मिन्हाज मर्चेंट@MinhazMerchant

इसे गलत तरीके से पेश किया जा रहा है। उद्धव ठाकरे ने एक वाहियात से कार शेड के निर्माण को रोकने के लिए ही हजारों पेड़ों के काटने पर रोक लगाई है। उन्होंने मेट्रो परियोजना पर रोक नहीं लगाई है। केवल कार शेड को दूसरी जगह बनाया जाएगा जोकि होना भी चाहिए। आम नागरिक भी यही मांग कर रहे थे।
प्रीतीश नंदी@PritishNandy

कोर सेक्टर के आंकड़े दर्शाते हैं कि तीसरी तिमाही में हालात और खराब रह सकते हैं। इसकी और भी वजहें हैं। मसलन बैंक-एनबीएफसी संकट में हैं, कर्ज की मांग में किसी सुधार के आसार नहीं हैं। इसका कोई चुटकी में हल संभव नहीं, लेकिन अगर रविशंकर प्रसाद, पीयूष गोयल और धर्मेंद्र प्रधान मिलकर काम करें तो निवेश का माहौल अवश्य सुधारा जा सकता है, क्योंकि हालात सुधारना केवल निर्मला सीतारमण की ही जिम्मेदारी नहीं है।
सुनील जैन@thesuniljail

जागरण जनमत

कल का परिणाम

गोडसे पर बयान देने के लिए भाजपा को साध्वी प्रज्ञा ठाकुर को पार्टी से निकाल देना चाहिए?

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

मुख्य आर्थिक सलाहकार के दावे पर भरोसा किया जा सकता है कि तीसरी तिमाही में विकास दर बढ़ेगी?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर Y, N या C लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, N-नहीं, C-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

शिवसेना के राज में मेट्रो का क्या काम,
लोकल के धक्के भले फिर घर में विश्राम।
फिर घर में विश्राम खूब बैठाओ भट्ठा,
करके डेवलपमेंट कहां आती है सत्ता!
इनको कहां विकास कार्य से लेना-देना,
सदी बीसवीं आज दिखाएगी शिवसेना।
- ओमप्रकाश तिवारी

रचनाकर्म

महिला क्रिकेटरों के संघर्ष की दास्तान

ब्रजबिहारी

हरमनप्रीत कौर ने महिला विश्व कप क्रिकेट में 20 जुलाई 2017 को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपनी असाधारण पारी के दौरान जब छक्का जड़कर टीम को जीत दिलाई थी तो पूरे देश ने इस उपलब्धि को सीने से लगाकर जश्न मनाया था। कहना न होगा कि इस एक जीत ने महिला क्रिकेट के प्रति उदासीन रवैया रखने वाले इस देश को गहरी नींद से जगाने का काम किया। महिला क्रिकेट के इतिहास में आए इस मोड़ ने महिला क्रिकेटरों को रातोंरात हीरो बना दिया। हर घर में उनकी चर्चा होने लगी, लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने के लिए उनको न सिर्फ सामाजिक कुरीतियों से लड़ना पड़ा, बल्कि दुनिया के सबसे धनी क्रिकेट बोर्ड बीसीसीआइ के कर्ता-धर्ताओं से भी दो-दो हाथ करना पड़ा। यह उनके संघर्ष का ही नतीजा है कि अब महिला क्रिकेटरों पर सम्मान और पैसा दोनों बरस रहे हैं।

महिला क्रिकेट की इसी यात्रा को खेल पत्रकार करूण्य केशव और सिद्धांत पटनायक ने अपनी पुस्तक 'द फायर बर्न्स ब्लू- ए हिस्ट्री ऑफ वुमेंस क्रिकेट इन इंडिया' का विषय बनाया है। देश में महिला क्रिकेट की शुरुआत पिछली सदी के आठवें दशक में हुई थी, जब देश के अलग-अलग कोनों से आई किशोरियों ने तय किया कि वे खेल की दुनिया में अपनी छाप छोड़ कर ही मानेंगी। शुरुआत में उन्हें कोई तवज्जो नहीं मिली। शुरू के दौर की महिला क्रिकेटरों ने तमाम बाधाओं के बाद भी हिम्मत नहीं हारी और सारे झंझावातों से लड़ते हुए आगे बढ़ती रहीं। आज अगर महिला क्रिकेटरों की उपलब्धियों पर देश को गर्व हो रहा है और हर लड़की मिताली राज, हरमनप्रीत कौर, झूलन गोस्वामी या स्मृति मंधाना की तरह बनना चाहती है तो इसमें शांता रंगास्वामी, डायना इडुल्जी, चंद्रा नायडू, शुभांगी कुलकर्णी और उनकी जैसी ढेरों महिला क्रिकेटरों के संघर्ष का अहम योगदान है। इस पुस्तक की प्रस्तावना में मशहूर खेल पत्रकार शारदा उग्रा ने बताया है कि कैसे आकाशवाणी के खेल कार्यक्रमों में सिर्फ पुरुष क्रिकेटरों की उपलब्धियों की चर्चा होती थी। कभी-कभार महिला क्रिकेटरों का नाम आता भी था तो ऐसा लगता था जैसे आयोजक बेमन से उनका जिक्र कर रहे हैं। लेकिन धीरे-धीरे महिला क्रिकेटरों ने अपने कारनामों से ध्यान खींचा और उन्हें खेल पत्रिकाओं और आकाशवाणी के कार्यक्रमों में भी जगह मिलने लगी। इस बीच 1983 में पुरुष क्रिकेटरों की विश्व कप क्रिकेट के फाइनल में वेस्टइंडीज के खिलाफ मिली अप्रत्याशित जीत ने उन्हें पूरे देश का हीरो बना दिया। इसके बाद केबल टीवी के आगमन ने क्रिकेट की मार्केटिंग की संभावनाओं के लिए नए दरवाजे खोल दिए।

बहरहाल, पुरुष क्रिकेटरों के दबदबे के इस दौर में भी महिला क्रिकेटर अपने प्रदर्शन से खेल प्रेमियों के बीच चर्चा का विषय बनी रहीं। नई सदी में इंटरनेट के आगमन ने जैसे महिला क्रिकेटरों को नया जीवन दे दिया। झूलन गोस्वामी, मिताली राज, अंजुम चोपड़ा जैसी नई

इस पुस्तक को पढ़कर आपको हैरानी के साथ खुशी का भी अहसास होगा, क्योंकि यह सिर्फ किसी खेल की कहानी नहीं है, बल्कि महिला सशक्तीकरण की भी गाथा है

पुस्तक : द फायर बर्न्स ब्लू- ए हिस्ट्री ऑफ वुमेंस क्रिकेट इन इंडिया
लेखक : करूण्य केशव/ सिद्धांत पटनायक
प्रकाशक : वेस्टलैंड स्पोर्ट
मूल्य : 799 रुपये

पीढ़ी की महिला क्रिकेटरों ने मीडिया में जगह बनानी शुरू की। इसके बावजूद बीसीसीआइ की उपेक्षा, भेदभाव और उदासीनता बरकरार रही। अब भले ही महिला क्रिकेटरों को पुरुष क्रिकेटरों की तरह बीसीसीआइ का कांट्रैक्ट दिया जा रहा है, लेकिन पुरुषों के साथ बराबरी की उनकी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। क्रिकेट में अभी पुरुषों और महिलाओं को एकसमान पारिश्रमिक नहीं मिल रहा है। इस मामले में पिछली पीढ़ी की क्रिकेटर ज्यादा मुखर थीं। इसकी वजह यह हो सकती है कि पुराने जमाने की क्रिकेटरों के मुकाबले आज की क्रिकेटरों को नौकरी और स्पांसरशिप की समस्या नहीं है।

गहन शोध और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ लिखी गई यह पुस्तक न सिर्फ खेल प्रेमियों के लिए, बल्कि गंभीर शोधकर्ताओं के लिए भी काफी उपयोगी साबित होगी। करूण्य केशव विज्डन पत्रिका के लिए क्रिकेट की रिपोर्टिंग करती रही हैं। बकौल, करूण्य जब वह खेल की रिपोर्टिंग नहीं कर रही होती हैं तो किताबें लिखने में व्यस्त रहती हैं। सिद्धांत पटनायक पुरुष और महिला क्रिकेट पर लंबे समय से रिपोर्टिंग कर रहे हैं और अब तक आइसीसी के छह टूर्नामेंट कवर कर चुके हैं। लेखकों के दीर्घ अनुभव की छाप पुस्तक के हर पन्ने पर नजर आती है। यह पुस्तक महिला क्रिकेट के उस दौर की दास्तान सुनाती है, जब कोई उसे तवज्जो नहीं दे रहा था।

ठेठ अंदाज वाला देसी उपन्यास

कन्हैया झा

'आपने अपने शहर में सड़क पर लगे कपड़े के बैनर देखे होंगे जिनमें चलनी की तरह बहत्तर छेद होते हैं। आपने सोचा होगा कि हवा से गिर जाने के डर से वे छेद कर दिए जाते हैं। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। यह एक प्रयोग है, और इसकी शुरुआत बलिया से ही हुई। दरअसल कपड़े के बैनर में जगह-जगह छेद न करने पर लोग इसे उतारकर ले जाते थे और इसका कच्छा-बनियान सिलवा-बनवा लेते थे। इसी से परेशान होकर शुरू हुई यह छिद्रण प्रथा। अब इस बैनर को कोई उतारकर नहीं ले जा सकता।' बागी बलिया नामक इस उपन्यास में आपको इस तरह के कई तथ्य मिल जाएंगे जिनके बारे में यह दावा किया गया है कि इस तरह की प्रथा बलिया से ही शुरू हुई और देश को इतना बड़ा आइडिया बलिया ने ही दिया। हालांकि यह दावा कितना सही है, यह एक अलग चर्चा का विषय है।

विगत वर्षों हिंदी के उदीयमान लेखक के रूप में उभरे सत्य व्यास ने इस उपन्यास में बलिया की ठेठ या भदेस बोली, लहजे और रहन-सहन समेत अनौपचारिक संवादों को बेहद अनूठे तरीके से पिरोया है जो इस उपन्यास की बड़ी विशेषता है। बलिया को ऐतिहासिक रूप से बागी के तौर पर समझा जाता रहा है और उपन्यास को संजीदगी से पढ़ने पर इसे कुछ हद तक समझा भी जा सकता है।

इसमें सरस्वती को सरसत्ती और पॉलिटिक्स को पालटिक्स (जैसाकि पूर्वांचल में कई जगह बोला जाता है) पढ़ते समय फणीश्वर नाथ रेणु के लेखन की याद भी आती है। शायद यही कारण है कि सत्य व्यास ने हिंदी में एक नया पाठक वर्ग तैयार करके इस धारणा को गलत साबित किया है कि हिंदी में पाठकों की कमी है, बल्कि पाठक बढ़ रहे हैं। सत्य व्यास की यह चौथी पुस्तक है। इससे पहले उनकी बनारस टॉकीज, दिल्ली दरबार और चौरासी नामक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस उपन्यास में छात्रसंघ राजनीति, यारी-दोस्ती से लेकर कस्बाई कॉलेजों में छात्रों आदि के बीच होने वाले वार्तालापों आदि को बेहद सामान्य तरीके से उकेरा गया है। बलिया जैसे शहरों में छात्र जीवन व्यतीत कर चुके पाठकों को इसे पढ़ने में अधिक मजा आएगा, क्योंकि इसमें एक आम इंसान की जिंदगी के बहुत से पहलुओं को सामान्य तरीके से संवाद के तौर पर दर्शाया गया है।

पुस्तक : बागी बलिया
लेखक : सत्य व्यास
प्रकाशक : हिंदी युग्म, दिल्ली
मूल्य : 150 रुपये

मध्य प्रदेश डायरी

गांधी की खादी को मन से अपनाएं नेताजी

आशीष व्यास
संपादक, नई दुनिया, मध्य प्रदेश

मां खादी की चादर दे दे, मैं गांधी बन जाऊं- पाठ्यपुस्तकों की यह कविता पुरानी पीढ़ी के प्रत्येक सदस्य को ठीक से याद है। महात्मा गांधी की इसी चादर को लेकर मध्य प्रदेश की राजनीति में इन दिनों हलचल मची हुई है। कांग्रेसी या भाजपाई, हर कोई इस चादर को ओढ़कर अब 'गांधीवादी' बनना चाहता है। दरअसल 17 दिसंबर से शुरू होने जा रहे मध्य प्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र में किसी एक दिन की कार्यवाही को महात्मा गांधी के नाम समर्पित करने की तैयारी चल रही है। राष्ट्रपिता के 150वीं जयंती वर्ष पर यह पहल कमलनाथ सरकार द्वारा की जा रही है। सभी विधायकों के लिए एक दिन का ड्रेस-कोड खादी का कुर्ता-पायजामा, साड़ी या सलवार-सूट होगा। करीब 110 विधायकों के कपड़ों के नाप भी विधानसभा तक पहुंच गए हैं। इस दिन विधायकों को गांधीजी की प्रतिमा भी भेंट की जाएगी। डाक टिकट भी जारी होंगे। इस आयोजन की विशेषता यह है कि कांग्रेस और भाजपा दोनों दलों के वरिष्ठ नेता मिलकर इसमें भागीदारी कर रहे हैं।

गांधीजी को सम्मान देने के लिए विपरीत विचारधारा का एक मंच पर आना स्वागत योग्य है, लेकिन गांधीजी के नाम पर नेता राजनीति नहीं करेंगे, फिलहाल यह कहा नहीं जा सकता। कांग्रेस सरकार में उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी की भावनाएं परंपरागत कांग्रेसी के रूप में सामने आ ही गईं- 'महात्मा गांधी के सैद्धांतिक भाव को पूरा देश जीता है। खादी महात्मा गांधी के साथ जुड़ी हुई है, इसलिए कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता भी खादी को मानता है। लेकिन बात जैसे ही भारतीय जनता पार्टी तक पहुंची, मंत्रीजी की धारणाएं नए रूप में सामने आ गईं- 'गोडसे को मानने वाले लोग अब हमें सैद्धांतिक शिक्षा देने लगे हैं। खुशी है कि भारतीय जनता पार्टी भी अब महात्मा गांधी की बात करने लगी है। हालांकि ऐसा वो लोग सामने से ही करते हैं, पीठ पीछे कुछ और ही करते हैं।'

जवाब में भाजपा के पूर्व मंत्री विश्वास सारंग सामने आ गए, 'हमें खादी पहनने में कोई परेशानी नहीं है। विधानसभा अध्यक्ष के निर्णय का स्वागत है। हम सभी विधायक खादी पहनकर जाएंगे। गांधी के विचारों को हम मानते हैं, लेकिन गांधी उपनाम लगाकर क्या वे गांधी की राह पर चल पड़ेंगे? पिछले पांच-छह महीनों में कांग्रेस सरकार के नुमाइंदों के रिश्तेदार गलत कारणों को लेकर चर्चा में हैं। दूध के दाम बढ़ रहे हैं और शराब ज्यादा लोगों तक पहुंच रही है। क्या कांग्रेस सरकार का यही गांधी दर्शन है?'

गांधी अनुसरण के नाम पर शुरू हुई यह राजनीति कहां जाकर रुकेगी, अभी इस बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन इतना अवश्य है कि मध्य प्रदेश की राजनीति में गांधी अब समर्थन और विरोध की राजनीति का पर्याय बन रहे हैं। विधानसभा की कार्यवाही का एक दिन गांधीजी के नाम पर समर्पित जरूर हो रहा है, लेकिन गांधी-दर्शन के नाम पर राजनीति करने वाले नेताओं की नई जमात भी खड़ी होती जा रही है। उम्मीद की जानी चाहिए कि गांधी के नाम पर मध्य प्रदेश विधानसभा में की जा रही पहल गांधीवादी तरीके से ही आगे बढ़ेगी!

ट्विटर पर ट्रेंड कर गए सिंधिया!

मध्य प्रदेश में राजनीति के रंग तेजी से चढ़-उतर रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष की दौड़ में शामिल ज्योतिरादित्य सिंधिया का विरोध कुछ नए संदर्भ के साथ फिर तेज हुआ है। ट्विटर के बायो स्टेटस से कांग्रेस हटाकर सामाजिक कार्यकर्ता व क्रिकेट प्रेमी बने सिंधिया के नए 'अंदाज' ने इसे और हवा दे दी है। चर्चा इस बात से ज्यादा बढ़ गई कि सिंधिया के ट्विटर प्रोफाइल में कहीं भी कांग्रेस पार्टी का उल्लेख नहीं है। हालांकि सिंधिया और समर्थकों ने स्पष्ट तौर पर किसी असंतोष का खंडन कर दिया, इससे बगावत जैसी कोई बात दिखाई तो नहीं दे रही है।

सच तो यह भी है कि महाराष्ट्र में चल रहे महासंग्राम के बीच सिंधिया का 'स्टेटस' ज्यादा चर्चा में आ भी नहीं पाया, लेकिन जो धुआं उठ रहा है, उससे अंदर ही अंदर थोड़ी आग सुलगती हुई नजर जरूर आ रही है। इस आग की आंच भांपने के लिए विधानसभा चुनाव से लेकर अब तक, सिंधिया का संघर्ष भी कम नहीं है। मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री पद पर दावेदारी जताने से लेकर अध्यक्ष पद तक के लिए ज्योतिरादित्य सिंधिया को जितने विरोध का सामना करना पड़ रहा है, ऐसा शायद उनके राजनीतिक जीवन के किसी कालखंड में कभी नहीं हुआ होगा।

अधिकांश समय केंद्र की राजनीति में मशगूल रहने वाले 'महाराज' अब अपने इलाकों में जा-जाकर बैठक ले रहे हैं। हाल के दिनों में उनके कुछ ऐसे बयान आए थे, जिससे यह लग रहा था कि उनके और कांग्रेस पार्टी के बीच सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। सिंधिया ने कर्जमाफी, बाढ़ राहत राशि के लिए सर्वे और बिजली कटौती के मामले में कमलनाथ सरकार को कठघरे में खड़ा किया था। इससे विपक्षी भारतीय जनता पार्टी को कांग्रेस सरकार पर हमला करने के मौके लगातार मिलते चले गए।

खेल मंत्रियों की खेल भावना!

केंद्रीय खेल मंत्री किरण रिजिजू इंदौर आए। उन्होंने कमलनाथ सरकार के खेल मंत्री जीतू पटवारी का आतिथ्य भी स्वीकार किया। यहां तक कि मालवा के परंपरागत भोजन दाल-बाफले का आनंद भी पटवारी के घर पर ही लिया। स्वाद के इस नए समीकरण की खबर जब तक भाजपाइयों को लगती, रिजिजू लौट चुके थे। दरअसल, रिजिजू उज्जैन में बने अंतरराष्ट्रीय स्तर के स्विमिंग पुल के उद्घाटन के लिए आए थे। लेकिन प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी के निधन के कारण राजकीय शोक घोषित हो गया। इस वजह से उद्घाटन कार्यक्रम तो नहीं हो पाया, लेकिन दोनों खेलमंत्रियों ने खेल-भावना का परिचय दिया और भोजन के बहाने साथ में लंबा वक्त गुजार लिया।

एक एयरपोर्ट जो बदल देगा तस्वीर

टर्निंग प्वाइंट

धर्मेंद्र चंदेल, ग्रेटर नोएडा

किसी भी जगह का विकास वहां के परिवहन साधनों से होता है। आज वैश्वीकरण से पूरी दुनिया एक-दूसरे के बेहद करीब आ गई है और इसमें हवाईअड्डों की अहम भूमिका है। ऐसे में बात करें देश के सबसे बड़े एयरपोर्ट की तो निःसंदेह इसकी कल्पना रोमांचित कर देती है। जल्द ही यह कल्पना धरातल पर साकार होगी क्योंकि दिल्ली-एनसीआर के लोगों को एक और अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा 2023 तक मिलने का रास्ता साफ हो गया है। देश की राजधानी दिल्ली से सटे उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्धनगर स्थित जेवर में बनने वाला यह हवाईअड्डा भारत का सबसे बड़ा इंटरनेशनल एयरपोर्ट होगा, जहां से शुरुआती दौर में एक करोड़ 20 लाख से ज्यादा यात्री सालाना उड़ान भरेंगे। इसके निर्माण का ठेका स्विट्जरलैंड की कंपनी ज्यूरिख इंटरनेशनल एयरपोर्ट एजी को दिया गया है। यह कंपनी दुनिया में चार इंटरनेशनल एयरपोर्ट का संचालन करती है। हालांकि, काम शुरू करने से पहले इस कंपनी की सरकार अपनी एजेंसियों के माध्यम से जांच कराएगी ताकि कोई कमी न रहे। जनवरी, 2020 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसकी आधारशिला रखेंगे। आइए जानते हैं इससे जुड़ी कुछ खास बातें...

2023 में दिल्ली-एनसीआर के लोगों को जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट से उड़ान भरने का मौका मिलेगा। शुरुआती दौर में यहां से करीब एक करोड़ 20 लाख यात्रियों के सालाना सफर करने की उम्मीद जताई गई है। इसका सबसे अधिक फायदा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लोगों को होगा, क्योंकि उन्हें हवाई सफर के लिए दिल्ली जाने की जरूरत नहीं होगी...

पहले चरण में चार रनवे का होगा एयरपोर्ट : 1334 हेक्टेयर जमीन पर पहले चरण में चार रनवे का एयरपोर्ट होगा। उड़ान शुरू होने के बाद इसका पांच हजार हेक्टेयर जमीन पर विस्तार होगा। इस पर कुल आठ रनवे बनेंगे। यात्रियों की सुविधा के लिए इसके आसपास आधुनिक एयरो सिटी विकसित करने की भी योजना है। इसके बनने के साथ ही दिल्ली-एनसीआर में ट्रांसपोर्ट कनेक्टिविटी का नया अध्याय जुड़ेगा। इस एयरपोर्ट से करीब एक लाख लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलने की संभावना है।

2007 में तैयार किया गया था प्रस्ताव : दरअसल, इस हवाईअड्डे का प्रस्ताव 2007 में उत्तर प्रदेश की तत्कालीन बसपा सरकार ने तैयार किया था। दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट से 150 किमी की दूरी के कारण एयरपोर्ट का प्रस्ताव शुरुआत में ही फंस गया था। 2012 में सत्ता बदलने के बाद सपा सरकार ने इसे आगरा या फीरोजाबाद में बनाने का प्रयास किया, लेकिन वह इसमें सफल नहीं हो पाई।

2014 में केंद्र में भाजपा की सरकार बनी तो गौतमबुद्धनगर के सांसद डॉ. महेश शर्मा को नागरिक उड्डयन विभाग में राज्यमंत्री का पद मिला। इसके बाद उन्होंने इस परियोजना को आगे बढ़ाने के प्रयास शुरू किया। 2017 में उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की सरकार बनने के बाद जेवर एयरपोर्ट को धरातल पर लाने में तेजी आई। मुख्यमंत्री के निर्देश पर जिलाधिकारी, यमुना प्राधिकरण के सीईओ व जेवर के विधायक ने गांव-गांव जाकर किसानों से संपर्क किया। इनके प्रयासों से ही किसान जमीन देने को राजी हुए। वहीं, जून 2017 में जेवर में इंटरनेशनल एयरपोर्ट को केंद्र ने सैद्धांतिक मंजूरी दी। करीब एक साल के अंदर एयरपोर्ट को केंद्र के सभी संबंधित मंत्रालयों से एनओसी भी मिल गई।

एयरपोर्ट तक जाएगी मेट्रो : जेवर एयरपोर्ट के लिए बेहतर कनेक्टिविटी करने के लिए मेट्रो का भी संचालन होगा। इससे लोगों को यहां तक पहुंचने में सुविधा होगी। इसकी डीपीआर बन चुकी है।

लाखों लोगों को मिलेगा रोजगार

इस एयरपोर्ट के बनने से गौतमबुद्धनगर के साथ-साथ समूचे पश्चिमी उत्तर प्रदेश की तस्वीर बदल जाएगी। इन शहरों में रहने वाले लोगों को हवाई यात्रा के लिए दिल्ली नहीं जाना पड़ेगा। वे ग्रेटर नोएडा से ही देश-विदेश के लिए जहाज में उड़ान भर सकेंगे। साथ ही लाखों लोगों को इससे रोजगार उपलब्ध होगा।

2020

में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसकी आधारशिला रखेंगे

पहले चरण में दो रनवे का होगा निर्माण

जेवर में बनने वाले इस इंटरनेशनल एयरपोर्ट की शुरुआत प्रथम चरण में दो रनवे के साथ होगी। इसके लिए छह गांवों की 1334 हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण कर 80 फीसद भूमि सरकार को सौंपी जा चुकी है।

दिल्ली-जेवर एयरपोर्ट को सड़क से भी जोड़ा जाएगा

इस एयरपोर्ट को एलिवेटिड रोड के जरिये दिल्ली से जोड़ने के लिए प्रदेश सरकार ने केंद्र को प्रस्ताव भेजा है। यह प्रस्ताव अभी केंद्र में विचाराधीन है। हालांकि एयरपोर्ट की कनेक्टिविटी के लिए दिल्ली-जेवर मेट्रो की डीपीआर (डिटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट) तैयार हो चुकी है।

चार एयरपोर्ट का संचालन कर रही है ज्यूरिख एयरपोर्ट इंटरनेशनल

जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट के निर्माण के लिए चयनित ज्यूरिख एयरपोर्ट इंटरनेशनल एजी दुनिया में चार इंटरनेशनल एयरपोर्ट का संचालन करती है। इनमें ज्यूरिख के अलावा ब्राजील में बेलो हॉरिजोंटे एयरपोर्ट, चिली में एंटोफोगास्टा एयरपोर्ट, कोलंबिया एयरपोर्ट शामिल हैं।

एयरपोर्ट की कहानी आंकड़ों की जुबानी

- करीब 5000 करोड़ रुपये की लागत से बनेगा जेवल इंटरनेशनल एयरपोर्ट
- 5000 हेक्टेयर भूमि पर विकसित होगा जेवर एयरपोर्ट
- दो रनवे के साथ होगी शुरुआत
- प्रथम चरण में 1334 हेक्टेयर भूमि पर बनेगा एयरपोर्ट
- कुल 14 गांवों की भूमि का होगा अधिग्रहण
- नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के नाम से जाना जाएगा
- प्रथम चरण में एक करोड़ 20 लाख यात्री सालाना भरेंगे उड़ान
- बाद में आठ रनवे का होगा एयरपोर्ट

गन को खिलौने की तरह देखते हैं मानवादित्य

इनसे मिलिए

अभिषेक त्रिपाठी, नई दिल्ली

खेलो इंडिया यूथ गेम्स के चैंपियन मानवादित्य सिंह राठौर ने हाल ही में खत्म हुई 63वीं राष्ट्रीय शॉटगन चैंपियनशिप में दमदार प्रदर्शन करते हुए तीन स्वर्ण पदक जीतकर सभी का दिल जीत लिया था। पूर्व खेल मंत्री और ओलंपिक पदक विजेता राज्यवर्धन सिंह राठौर के बेटे मानवादित्य अब सीनियर निशानेबाजी में कमाल दिखाना चाहते हैं और पिता की तरह ओलंपिक में भी पदक जीतना चाहते हैं।

मानवादित्य ने दैनिक जागरण को बताया कि उनका इस खेल में आना कैसे हुआ। उन्होंने कहा, 'घर का माहौल ऐसा था कि गन आसपास रहती थी। मैंने कभी भी गन को एक हथियार की नजर से नहीं देखा। हमेशा से एक खेल उपकरण के नजरिये से देखा है। बचपन से ही मेरी गन में दिलचस्पी थी और मैं उन खिलौनों के साथ ही इससे भी खेला करता था। घर पर निशानेबाजी रेंज थी तो पापा को भी बंदूक चलाते हुए देखता था। इस तरह मेरी इस खेल की तरफ रुचि बढ़ने लगी। फिर पापा ने मुझे चलाने के लिए बंदूक दी और इस तरह मेरी निशानेबाजी की शुरुआत हुई।'

11 साल की उम्र में पहली बार गन उठाई : मानवादित्य कहते हैं, 'मैंने पहली बार 11 साल की उम्र में गन उठाई थी। वह पापा की गन थी। बच्चों को गन देखकर और उसकी आवाज सुनकर डर लगता है, लेकिन मुझे नहीं। मुझे गन देखकर बहुत खुशी होती थी क्योंकि उसे चलाते वक्त जो आवाज निकलती थी और धुआं निकलता था, उसे देखकर मुझे मजा आता था। वही सफर आगे बढ़ा और इस साल मैंने जूनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप जीतकर अपने जूनियर करियर को समाप्त किया। अब मैं सीनियर करियर में बढ़ रहा हूं और आने वाले विश्व कप में भाग लेना चाहता हूं और अगले ओलंपिक के लिए कोटा हासिल करने की कोशिश करूंगा।'

शुरू में था पापा के नाम का दबाव : राज्यवर्धन सिंह राठौर के बेटे होने के कारण अपने ऊपर दबाव होने को लेकर मानवादित्य ने कहा, 'जब मैंने निशानेबाजी शुरू की थी तब थोड़ा दबाव रहता था। मैं पहली बार इस खेल में आया तो लोग सोचते थे कि मैं एक निशानेबाजी का चैंपियन हूं। मैं शुरुआत में काफी दबाव लेता था, लेकिन धीमे-धीमे यह सीख लिया कि आप राज्यवर्धन सिंह राठौर के नाम को दो तरह से ले सकते हैं। एक या तो आप इसे बहुत बोझ की तरह ले सकते हैं, दूसरा इसको अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। मेरे पिता का इतने साल का अनुभव है और उनसे मैं क्या सीख सकता हूं और उसे कैसे अपने प्रशिक्षण में शामिल कर सकता हूं।'

काफी एडवेंचरस हैं राठौर : निशानेबाजी के अलावा खाली समय में मानवादित्य काफी एडवेंचरस हैं। उन्हें रॉक क्लाइंबिंग और तैराकी पसंद हैं। वह जब खाली होते हैं तो दोस्तों के साथ फुटबॉल खेलना और गाने सुनना पसंद करते हैं।

मानवादित्य सिंह राठौर अपना जूनियर करियर समाप्त कर सीनियर करियर की ओर बढ़ रहे हैं। फाइल

हाल ही में संपन्न हुई 63वीं राष्ट्रीय शॉटगन चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन के दम पर मानवादित्य सिंह राठौर ने अपने नाम किए हैं तीन स्वर्ण पदक। वह पिता राज्यवर्धन सिंह राठौर के पदचिह्नों पर आगे बढ़ते हुए सीनियर करियर की ओर कदम बढ़ा चुके हैं। अब उनका लक्ष्य ओलंपिक में पदक हासिल करना है...

पापा सुनाते हैं किस्से

निशानेबाजी में पिता राज्यवर्धन की मदद लेने पर मानवादित्य कहा, 'मैं उनसे निशानेबाजी की सलाह लेता हूं। वह मुझे तकनीकि रूप से कोई सलाह नहीं देते। वह मुझे अपने अलग-अलग चैंपियनशिप के अनुभव बताते हैं, जिसमें वह हिस्सा लिया करते थे। उन्होंने कैसे दबाव को झेला और जो चुनौतियां आईं उनका कैसे सामना करके आगे बढ़े। वह मुझे किस्से सुनाते हैं, जिससे मैं सीख लेता हूं और उस पर अमल करता हूं।'

शिवांगी : जिद की और सपने हो गए हकीकत

बदली तस्वीर

अंकित कुमार, मुजफ्फरपुर

यह कहानी है बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में रहने वाली एक बेटी की। उसके सपने हमेशा से आकाश से भी ऊंचे रहे। इंजीनियर बनी। एक दिन इच्छा जताई कि पायलट बनकर आकाश छूना है। जवाब मिला-तुमसे न हो पाएगा। इस पर उसने हंसकर उत्तर दिया, 'मेहनत से हर मंजिल आसान हो जाती है।' ...और फिर पकड़ ली एक जिद, जिसने उनके सपनों को हकीकत बनाकर ही छोड़ा। हम बात कर रहे हैं नौसेना में सब लेफ्टिनेंट शिवांगी की, जो जल्द ही नौसेना में देश की पहली महिला पायलट होंगी। इंडियन नेवी कोच्चि के पीआरओ कमांडर श्रीधर वारियर कहते हैं, 'शिवांगी को दो दिसंबर को प्रशिक्षण पूरा होने पर विंग्स प्रदान किया जाएगा। इसके बाद वह आधिकारिक रूप से इंडियन नेवी की पायलट बन जाएंगी।' इसी दिन वह ड्रोनियर प्लेन उड़ाएंगी और कोच्चि में ऑपरेशन ड्यूटी में शामिल होंगी।

कहते हैं, हर सपने का कहीं न कहीं से बीज जरूर पड़ता है। शिवांगी के मन में नौसेना में पायलट बनने का बीज उनके कॉलेज के दिनों में पड़ा। डीएवी स्कूल, बखरी से अच्छे अंकों से 12वीं पास करने के बाद शिवांगी जब सिक्किम मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से बीटेक कर रही थीं, उसी दौरान 2015 में नौसेना की एक टीम कॉलेज में आई। इस दौरान टीम ने नौसेना के अधिकारियों के ड्रेस कोड और अनुशासन के बारे में जो कुछ बताया उससे शिवांगी काफी प्रभावित हुईं। तभी उन्होंने नौसेना में अधिकारी बनने की ठान ली। बीटेक की पढ़ाई के साथ जी-जान से तैयारी में जुट गईं। कुछ महीने एक प्राइवेट बैंक में नौकरी भी की, लेकिन अपने सपने को पूरा करने के लिए तैयारी जारी रखी। एमटेक की पढ़ाई के दौरान ही वर्ष 2017 में एसएससी (शॉर्ट सर्विस कमीशन) की परीक्षा पास की। उन्हें भारतीय नौसेना अकादमी में 27 एनओसी कोर्स के तहत एसएसी (पायलट) के तौर पर शामिल किया गया। 25 जून, 2018 में वाइस एडमिरल एके चावला ने औपचारिक तौर पर उन्हें नौसेना का हिस्सा बना लिया।

पारू प्रखंड के फतेहाबाद गांव के मूल निवासी और अभी मुजफ्फरपुर शहर के सर गणेशदत्त मोहल्ले में रहने वाले हरिभूषण सिंह को बेटी शिवांगी पर गर्व है। भाई-बहन में शिवांगी सबसे बड़ी हैं। पिता उच्च विद्यालय में प्रभारी प्रधानाध्यापक हैं। मां कुमारी प्रियंका गृहिणी हैं। पिता का कहना है कि बिटिया के बीटेक करने पर ही खुश था, क्योंकि वह परिवार की पहली इंजीनियर थी। अब पायलट बनने से ऐसा लग रहा जैसे बोनस के रूप में दोहरी खुशी मिल गई हो।

सही मार्गदर्शन मिला तो छू लिया आसमां : डीएवी स्कूल, बखरी की एकेडमिक इंचार्ज सीमा श्रीवास्तव बताती हैं, 'शिवांगी प्रतिभावान छात्रा रही है। हमेशा से अनुशासन के प्रति काफी गंभीर। उसने पायलट बनकर स्कूल और शिक्षकों का सिर गर्व से ऊंचा किया है।' शिवांगी के चचेरे भाई शिक्षक विनय सुमन का कहना है कि जब उसने सेना में जाकर प्लेट उड़ाने की इच्छा जताई तब उससे कहा कि यह तुमसे नहीं हो पाएगा। इस पर उसने हंसते हुए जवाब दिया था कि मेहनत से हर मंजिल आसान हो जाती है और हकीकत में उसने ऐसा कर दिखाया।' लेफ्टिनेंट कर्नल मनमोहन ठाकुर कहते हैं कि लड़कियों को प्रोत्साहन और सही मार्गदर्शन मिले तो वह किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकती हैं। सेना या नौ सेना में आने के लिए कड़ा शारीरिक परिश्रम अत्यंत आवश्यक होता है। शिवांगी को घर से सहयोग मिला तो उसने आसमां छू लिया। उसने राज्य और देश का नाम रोशन किया है।

ट्रेनिंग के दौरान पढ़ाई करतीं शिवांगी। सौजन्य : शिवांगी के माता-पिता

दुनिया का अब शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो, जहां महिलाएं पुरुषों से पीछे हों। यह आधी आबादी हर मोर्चे पर आगे बढ़कर पूरी दुनिया की तस्वीर तेजी से बदल रही है। इसी कड़ी में शामिल होने जा रहा है बिहार की बेटी शिवांगी का नाम, जो आगामी दो दिसंबर को बनेंगी नौसेना में देश की पहली महिला पायलट और उड़ाएंगी ड्रोनियर प्लेन। एक नजर उनके इस मुकाम पर पहुंचने तक के सफर पर...

शिवाजी पार्क : महाराष्ट्र की राजनीति का केंद्र

चर्चित स्थान

ओमप्रकाश तिवारी

शिवाजी पार्क, यानी शिवसेना के शब्दों में शिवतीर्थ वैसे तो कई ऐतिहासिक घटनाओं का गवाह रहा है, लेकिन इसके साथ-साथ यह मुंबई के ठाकरे परिवार की राजनीतिक यात्रा का भी गवाह रहा है।

मुंबई के मध्य क्षेत्र दादर के निकट 28 एकड़ में बना यह पार्क जब 1925 में मुंबई नगर निगम ने विकसित किया तो इसे माहिम पार्क के नाम से जाना जाता था, लेकिन दो साल बाद ही इसे छत्रपति शिवाजी महाराज के नाम पर शिवाजी पार्क के नाम से जाना जाने लगा। उसके बाद से ही पार्क स्वतंत्रता आंदोलन की कई सभाओं का गवाह तो बना ही, आजादी मिलने के बाद संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन का भी केंद्र बिंदु रहा। इस आंदोलन का नेतृत्व वैसे तो आचार्य प्रह्लाद केशव अत्रे ने किया था, लेकिन इसमें अन्य आंदोलनकारियों के साथ बालासाहब ठाकरे के पिता केशव सीताराम ठाकरे उर्फ प्रबोधनकार ठाकरे की भूमिका भी प्रमुख थी। यानी शिवाजी पार्क से ठाकरे परिवार का नाता प्रबोधनकार के समय से ही शुरू हो गया था।

फिर अक्टूबर 1966 में शिवसेना के गठन के समय जब बालासाहब ठाकरे ने अपनी पहली सभा करने की योजना बनाई, तो उन्होंने शिवाजी पार्क को ही चुना। उनके कई शुभचिंतकों को आशंका थी कि इस सभा के लिए शिवाजी पार्क शायद बहुत बड़ा पड़ेगा। लोगों ने उन्हें यह सभा किसी छोटे सभागार में करने की सलाह भी दी, लेकिन बालासाहब ठाकरे यह सलाह नहीं जमी। हालांकि, स्वयं उन्हें भी मैदान भरने को लेकर आशंका थी। इसलिए सभा का मंच मैदान के बीचों-बीच लगाया गया, लेकिन जब सभा शुरू हुई तो न सिर्फ मैदान, बल्कि मैदान के बाहर बना मार्ग भी भर गया था। उसके बाद से हर साल दशहरे के दिन होने वाली शिवसेना की सभा तो मुंबई की एक वार्षिक राजनीतिक घटना बन चुकी है।

शिवसेना संस्थापक बालासाहब ठाकरे इस मैदान में न सिर्फ अपनी विशाल दशहरा रैली को संबोधित करते रहे, बल्कि 1995 में बनी शिवसेना-भाजपा गठबंधन की सरकार का शपथग्रहण भी इसी मैदान में हुआ। शिवसेना से अलग होकर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना बनाने वाले राज ठाकरे की भी पहली सभा इसी मैदान में हुई। यहां तक कि बालासाहब ठाकरे के निधन के बाद शिवाजी पार्क से उनके जुझाव को देखते हुए उनकी अंत्येष्टि भी इसी मैदान के पश्चिमी सिरे पर की गई। इस अंत्येष्टि स्थल को आज भी बालासाहब ठाकरे के स्मृति स्थल के रूप में जाना जाता है। इसी स्मृति स्थल के निकट गत गुरुवार को उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली महाविकास अघाड़ी की सरकार ने भी शपथ ली।

आठ चर्चित क्रिकेट क्लबों में से एक : शिवाजी पार्क के निकट ही डॉ. भीमराव आंबेडकर का पुण्यस्थल चैत्यभूमि भी है। प्रतिवर्ष उनकी जयंती 14 अप्रैल एवं पुण्य तिथि पर छह दिसंबर को अनुसूचित समाज के लोगों का भी बड़ा जमावड़ा इसी शिवाजी पार्क में होता है। शिवाजी पार्क इन राजनीतिक जमावड़ों के लिए ही नहीं जाना जाता, बल्कि यह पार्क देश के आठ चर्चित क्रिकेट क्लबों में से भी एक है। इसी मैदान में क्रिकेट गुरु रमाकांत आचरेकर ने सचिन तेंदुलकर एवं विनोद कांबली जैसे क्रिकेटर्स भी गढ़े। अजीत वाडेकर भी इसी मैदान की देन हैं।

मुंबई हाई कोर्ट ने घोषित किया शांत क्षेत्र : राजनीतिक कार्यक्रमों की अधिकता को देखते हुए कुछ वर्ष पहले एक सामाजिक संगठन की जनहित याचिका पर मुंबई हाई कोर्ट ने शिवाजी पार्क को शांत क्षेत्र घोषित कर दिया है। इसके बाद से अन्य राजनीतिक दलों की रैलियां तो मुंबई के दूसरे मैदानों में होने लगी हैं, लेकिन शिवसेना की दशहरा रैली अब भी यहीं होती है।

ऐतिहासिक शिवाजी पार्क जहां महाराष्ट्र में राजनीति का केंद्र कहा जाता है, वहीं इसने देश को दिए हैं कई शानदार क्रिकेटर भी। शिवसेना के गठन के बाद पार्टी संस्थापक बालासाहब ठाकरे ने अपनी पहली सभा यहीं की थी। गत गुरुवार को यह पार्क एक बार फिर चर्चा में तब आ गया, जब उद्धव ठाकरे ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के लिए इसे चुना...

ऐतिहासिक शिवाजी पार्क फाइल

दुनिया की भूख को शांत करेंगी संरक्षित

आलू की प्रजातियां

पेरू के आलू संग्रहालय रखी गईं दुनियाभर में उगने वाली आलू की हजारों प्रजातियों में से कुछ चुनिंदा प्रजातियां। सभी फोटो साभार : इंटरनेशनल पोटेटो सेंटर

आलू दुनिया की क्षुधापूर्ति का सबसे बड़ा माध्यम है। जलवायु परिवर्तन के चलते फसलों की प्रजातियां तेजी से नष्ट हो रही हैं। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुमान के मुताबिक, 1900 से 2000 के बीच 100 साल में 70 फीसद फसल विविधता चौपट हो चुकी है। ऐसे में दुनिया की खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने को लेकर पेरू के एक आलू संग्रहालय से बड़ी उम्मीदें लगाई जा रही हैं। ये सामान्य संग्रहालय नहीं है। समुद्र तल से 4900 मीटर ऊंचाई पर यह 90 वर्ग किमी में तैयार किया गया है। आलू की किस्मों के संरक्षण वाला यह दुनिया का सबसे बड़ा संग्रहालय है। इसमें दुनिया के सभी देशों की देशी प्रजातियां इस उद्देश्य से संरक्षित की जा रही हैं कि भविष्य में इनकी मदद से दुनिया की भूख शांत की जा सके।

आलू की पैदाइश

आलू की पैदाइश पेरू की बताई जाती है। इतिहासकारों का मानना है कि पेरू में 7000 साल से आलू की खेती हो रही है। यहां राज करने वाले इंका साम्राज्य का आलू की खेती में बड़ा योगदान माना जाता है। बताया जाता है कि इंका सभ्यता के लोग कुशल कृषक थे। 1532 में स्पेन ने सोना-चांदी लूटने के मकसद से पेरू पर हमला किया। वहां उन्हें सोना-चांदी तो मिला ही साथ ही उनका परिचय आलू से भी हुआ। वहां से शुरू हुआ आलू का सफर पूरी दुनिया में फैल कर ही खत्म हुआ।

एंडीज पर्वतमाला पर आलू एकत्र करता किसान।

दुनिया का सबसे बड़ा आलू का बैंक

यह अंतरराष्ट्रीय आलू केंद्र पेरू की राजधानी लीमा में है, जिसे सीआइपी के नाम से भी जाना जाता है। यहां पर 4,600 से अधिक किस्म के आलू पैदा किए जाते हैं। विट्रो जीन बैंक में से यह दुनिया का सबसे बड़ा बैंक हैं। सीआइपी आफ्रीका और एशिया में काम कर रहा है, जहां आलू भुखमरी से लड़ने और नकदी फसल के रूप में आय उत्पन्न करने में मदद कर रहा है। सीपीआइ तेजी से बायोफोर्टिफाइड आलू पैदा करता है।

संग्रहालय का स्वरूप

पेरू के दक्षिण-पश्चिम में एंडीज पर्वतमाला की घाटी में बसे कुज्कों शहर में बना यह संग्रहालय समुद्र तल से 3,400 से 4,900 मीटर (16,000 फीट) ऊंचाई पर 90 वर्ग किमी (35 वर्ग मील) तक फैला है।

जिंक और आयरन से भरपूर आलू की प्रजातियां।

कई रंगों की किस्में

यहां पर 1367 किस्में पैदा की जाती हैं, जो कि पीले, नीले, लाल, बैंगनी और कई बार गुलाबी रंग की होती हैं। कुछ खाने में मीठी होती हैं और कुछ बहुत कड़वी होती हैं। इन आलुओं को महीनों तक संग्रहीत किया जा सकता है और सर्दियों में सूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

तापमान का असर

यहां भी वैश्विक तापमान का असर देखने को मिल रहा है। किसानों को और ऊंचाई पर जागकर आलू बोने के मजबूर होना पड़ रहा है। वैज्ञानिक यह देखने के लिए परीक्षण कर रहे हैं कि देशी किस्मों को ठंड, ओलों और तीव्र धूप से कैसे बचाया जाए।

1 जनवरी, 2020 से भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में पहले सोमनाथ मंदिर में फेस रिकॉग्निशन मशीन से हाजिरी अनिवार्य होगी। मंदिर के 600 कर्मचारी और 18 पुजारी इसी के जरिये मंदिर में प्रवेश कर पाएंगे।

जो अटल और अपरिहार्य है, उसका शोक नहीं मनाता हाथरस

रविवार विशेष ▶ यहां के 50 गांवों में सफलतापूर्वक जीवन पूर्ण करने वाले वृद्धों के निधन पर मनाते हैं उत्सव, नाचते-गाते हैं...

किशोर वार्ष्णेय, हाथरस

जो अटल और अपरिहार्य है, उसके विषय में शोक नहीं करना चाहिए..., गीता के इस ज्ञान को उत्तर प्रदेश के हाथरस के 50 गांवों ने आत्मसात कर दिखाया है। सफलतापूर्वक जीवन पूर्ण करने वाले वृद्धों के निधन पर यहां शोक नहीं, उत्सव मनाते हैं।

जंगला, पल्हावत, बिसावर समेत अन्य गांवों में ऐसे किसी स्वजन की तेरहवीं के दिन पौत्र-पौत्री और परिवार के लोग मिलकर उत्सव करते हैं। संगीत-नृत्य और भव्य भोज के रूप में यह संदेश देते हैं कि दिवंगत वयोवृद्ध, जिन्होंने सफलतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत किया और अपने कर्म-कौशल-आशीर्वाद से अपने पीछे एक भरा-पूरा परिवार और सुख-समृद्धि की विरासत छोड़ गए। कहते हैं, कि ऐसा करने से दिवंगत स्वजन की आत्मा को प्रसन्नता और संतोष की प्राप्ति अवश्य होती होगी, जिससे उन्हें सदगति प्राप्त होगी। इसके पीछे सोच यही है कि समृद्धि के लिए परिजन अपने बुजुर्गों को धन्यवाद दें और दुख की घड़ी से बाहर आकर आगे के कार्य के लिए प्रयत्नशील बनें।

सादाबाद तहसील क्षेत्र में 328 गांव हैं। इनमें शामिल गांव जंगला पल्हावत से करीब पांच साल पहले यह परंपरा शुरू हुई थी, जो आसपास के गांवों में फैलती चली गई। बीते एक नवंबर को गांव पल्हावत के 95 वर्षीय लीलाधर सिंह के निधन पर उत्सव मना। उनके बेटे विजय सिंह ने बताया कि पिता भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए। ऐसे में उनके प्रति सार्वजनिक रूप से आभार व्यक्त कर उनकी आत्मा की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने को उत्सव मनाया गया है। गांव जंगला पल्हावत के कारगिल शहीद सुरेश कुमार के पिता 98 वर्षीय परसराम सिंह का इसी साल अक्टूबर माह में निधन हुआ। 16 अक्टूबर को त्रयोदशी संस्कार था। इसमें पौत्री-प्रपौत्री व अन्य रिश्तेदार नाच-गा रहे थे। नजारा ऐसा था, मानो पार्टी मनाई जा रही हो। परसराम के पौत्र सतीश कुमार बताते हैं कि यह परंपरा राजस्थान के डीग, कुम्हेर, भरतपुर और सीमावर्ती हरियाणा से आई है।

- 100 साल या इसके निकट की उम्र के स्वजनों के निधन पर होता है नृत्य-गायन
- लोगों को समझ में आ रहे निहितार्थ तो तेजी से हो रहा विस्तार

उदयवीर सिंह जागरण

सोहनलाल जागरण

हाथरस स्थित गांव जंगला में स्व. परसराम के त्रयोदशी कार्यक्रम में नाचते-गाते स्वजन। जागरण

वहां कुछ गांवों में जाट समुदाय के परिवारों में यह चलन है। वहां बुजुर्ग की तेरहवीं पर नाच गाना तब तक होता है, जब तक पाग (पगड़ी) नहीं बंध जाती। इन्हें पता है कि सनातन धर्म में यह बात निर्दिष्ट है कि मृत्यु पर शोक नहीं करना चाहिए। लेकिन कहते हैं कि अकाल मृत्यु शोक का कारक हो सकती है, किंतु जीवन को पूर्णता में जी लेने वाले स्वजन के लिए हम शोक नहीं करते। आइए अब देखें कि श्रीमद् भागवद् गीता के अध्याय दो में इस विषय पर क्या निर्देश है। श्लोक 2.27, भगवान कहते हैं- जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च, तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।। अर्थात- जन्मने वाले की मृत्यु निश्चित है, और मरने वाले का जन्म निश्चित है। इसलिए जो अटल है, अपरिहार्य है, उसके विषय में शोक नहीं करना चाहिए...।

काशी विद्वत परिषद, वाराणसी के आचार्य ऋषि द्विवेदी कहते हैं, गीता का यह सार हर परिस्थिति में आदर्श है, किंतु इसे आत्मसात करने के लिए उतनी ही मानसिक परिपक्वता चाहिए। अल्पायु या अकाल निधन पर शोक की स्थिति बनती है, यह स्वाभाविक है। लेकिन दीर्घायु स्वजन के निधन पर भी शोक होना स्वाभाविक है। अंतर केवल इतना है कि दीर्घायु स्वजन ने अपने जीवन को पूर्णता में जी लिया था और देह का अंत अटल सत्य है, अतः यह विचार शोक को कम करने में सहायक होता है। गांव जंगला के बुजुर्ग उदयवीर सिंह और सोहनलाल सिंह इस पर हामी भरते हैं, कहते हैं कि उन्हें इस परंपरा का यह निहितार्थ समझ में आ चुका है।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें

लगभग 100 वर्ष की उम्र में मरने वाले व्यक्ति के यहां शोक के बजाय गीत गायन करते हुए उत्सव मनाते हैं। त्रयोदशी संस्कार में इस रस्म को निभाते हैं।

- उदयवीर सिंह, निवासी गांव जंगला, हाथरस, उत्तर प्रदेश

जो परंपरा यहां प्रारंभ हुई है। वह निश्चित रूप से अछूती मानी जा रही है और धीरे-धीरे आसपास के सभी गांवों में भी इस परंपरा को अपनाया जा रहा है।

- सोहनलाल सिंह, निवासी गांव जंगला

धर्मशास्त्र धर्मसिंधु के अनुसार दिवंगत की आत्म शांति के लिए रामनाम का उद्घोष किया जाता है। अपने सभी दायित्वों का निर्वहन कर चुके इंसान के निधन पर भव्य अंतिम यात्रा व अंतिम संस्कार के मौके पर ढोल-नगाड़े बजाए जाते हैं। अल्पायु या अकाल निधन पर शोक की स्थिति बनती है, लेकिन जीवन को पूर्णता में जी चुके व्यक्ति के निधन की स्थिति में यह कहा जाता है कि आत्मा ने मुक्ति प्राप्त की और अब बैकुंठ में स्थान मिलने जा रहा है, ऐसे में विदाई उत्सव सरीखी होनी चाहिए।

- आचार्य ऋषि द्विवेदी, काशी विद्वत परिषद, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

www.jagran.com/topics/jagran-special

पीएम मोदी भी हैं 94 वर्षीय सरला के सेवाभाव के मुरीद

ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को पानी पिलाती सरला त्रिपाठी। (फाइल फोटो) नईदुनिया

रामेंद्र परिहार, ग्वालियर

जीना इसी का नाम है

- ग्वालियर स्टेशन पर बीते 27 साल से यात्रियों को पिला रहीं पानी
- 'मन की बात' में सरला त्रिपाठी की प्रशंसा कर चुके हैं पीएम

मन में जनसेवा की चाह हो तो उम्र भी आड़े नहीं आती। यह बात ग्वालियर, मप्र की 94 वर्षीय सरला त्रिपाठी पर एकदम सटीक बैठती हैं। 27 साल से वह रेलवे स्टेशन से गुजरने वाली ट्रेनों के यात्रियों को पानी पिलाने का काम रही हैं। उम्र के इस पड़ाव पर सरला त्रिपाठी की जिजीविषा की तारीफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हाल ही में 'मन की बात' कार्यक्रम में कर चुके हैं। दिन में आठ-आठ घंटे तक रेलवे स्टेशन पर सेवाभाव से जुटी रहने वाली सरला कहती हैं- उन्हें ऐसा करने से मन में सुकून मिलता है। इतना ही नहीं, जब भी उन्हें समय मिलता है वह समाज में शिक्षा और स्वच्छता के लिए भी काम करती हैं। कई संस्थाओं के लिए मार्गदर्शक की भूमिका में रहती हैं।

गांधी नगर, ग्वालियर निवासी सरला त्रिपाठी के पति स्व. विष्णुबल्लभ त्रिपाठी एजी (अकाउंटेंट जनरल ऑफ इंडिया) ऑफिस के कर्मचारी थे। सरला त्रिपाठी शुरुआत से ही समाज सेवा से जुड़ी रहीं और ग्वालियर में चर्चित रहीं। लेकिन देश में उनको पहचान हाल ही में (दीपावली के दिन) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात (रेडियो कार्यक्रम) में जिक्र होने पर मिली। मन की बात में पीएम ने उनके 27 साल से लगातार ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को पानी पिलाने के सेवाभाव की सराहना की। उन्होंने उदाहरण भी दिया कि मन में समाज सेवा करने का जच्बा हो तो 94 साल की उम्र भी छोटी नजर आती है। कुछ समय पूर्व ग्वालियर में मिलने वाला मदर टेरेसा सम्मान भी सरला त्रिपाठी को मिल चुका है। पीएम से मिली तारीफ के बाद उनका उत्साह दोगुना है और क्षेत्र में पहले से अधिक चर्चित हो गई हैं।

वर्ष 1993 की बात है सरला त्रिपाठी एक सफर से लौटी थीं। उनका यह सफर गर्मी के दिनों में था। उस दौरान उन्होंने महसूस किया कि रेलवे स्टेशन पर पेयजल को लेकर बड़ी समस्या थी। गर्मी में पानी की समस्या रहती थी। इसके बाद ट्रेन छूटने के डर से यात्री उतर भी नहीं पाते थे। उसके ठीक अगले दिन वह ग्वालियर रेलवे स्टेशन पहुंचीं। यहां पंजाबी परिषद पानी पिलाने की सेवा करता था। सरला त्रिपाठी ने उसी दिन से जन सेवा का ऐसा कार्य शुरू किया कि वह आज 94 साल की होने के बाद भी लगातार उसे कर रही हैं। पंजाबी परिषद के कई अध्यक्ष इन 27 सालों में बदले, सदस्य आए और गए, लेकिन सरला त्रिपाठी वहीं हैं और निस्वार्थ सेवा कर रही हैं।

सरला त्रिपाठी (फाइल फोटो) नईदुनिया

हमारी टीम का अहम हिस्सा हैं सरला त्रिपाठी। यात्रियों का पानी पिलाने का उनका जच्बा देखते ही बनता है। यही कारण है कि हमारी पूरी टीम एक तरफ और 94 साल की सरला त्रिपाठी एक तरफ हैं। वह हमारी सबसे युवा साथी हैं।

- अशोक मारवाह, अध्यक्ष पंजाबी परिषद, ग्वालियर, मप्र

पीएम के मुख से नाम सुन लगा 25 साल की हो गई... : जब इस संबंध में सरला त्रिपाठी से बात की तो उनका कहना था कि यात्रियों को उनकी सीट पर पहुंचकर पानी पिलाकर सुकून मिलता है। लगता है कि उनकी जिंदगी किसी के काम आ सकी। जब प्रधानमंत्री ने मन की बात में उनका नाम लिया तो लगा मानो 94 साल की उम्र से वह वापस 25 वर्ष की हो गईं। अब वह दोगुने जच्बे के साथ फिर काम कर रही हैं। हां, श्रीमति त्रिपाठी का एक और लक्ष्य है। वह चाहती हैं कि वह मानसरोवर यात्रा को इस उम्र में पूर्ण करें।

बंधुआ मजदूरी की बेड़ी तोड़ दूसरों को दिला रहे हक

स्वतंत्रता-समता का अधिकार ▶ उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में अभी भी हजारों परिवार बंधुआ मजदूरी की जद में

आदिवासी रोशन लाल और रवि शंकर लड़ रहे गरीबों की हक की लड़ाई

रमेश यादव, प्रयागराज

देश को आजाद हुए 72 साल हो गए, लेकिन बंधुआ मजदूरी प्रथा अब भी समाप्त नहीं हो पाई है। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज के यमुना पार और गंगा पार क्षेत्र में सैकड़ों परिवार बंधुआ मजदूर हैं। इसी में जकड़े मेजा के रहने वाले रोशन लाल और कोरांव के रवि शंकर ने बेड़ियों को तोड़ा और अपना हक लेने के लिए वकालत की पढ़ाई की। अब कानूनी सहायता केंद्र खोलकर दूसरों को उनका हक दिला रहे हैं।

यमुना पार के मेजा, कोरांव, शंकरगढ़ ब्लॉक में खदान और ईंट-भट्ठे में सैकड़ों मजदूर बंधुआ बने हैं। मेजा तहसील के बिसरी गांव निवासी रोशन लाल और कोरांव तहसील के धूंस गांव के रवि शंकर के माता-पिता बंधुआ मजदूर थे। उन्होंने ठेकेदारों से जो पैसा उधार लिया था, वह सालों तक चुकता नहीं हुआ। होश संभालने पर रोशन लाल और रवि शंकर भी बंधुआ मजदूरी के दलदल में फंस गए। जी-जोड़ मेहनत के बाद भी कर्ज तले जिंदगी घुट रही थी।

करीब एक दशक पहले दोनों युवा प्रगति वाहिनी संस्था से जुड़े। तब उन्होंने जाना कि ठेकेदार कैसे उनका शोषण कर रहे हैं। उन्होंने इसका विरोध किया। एनजीओ की प्रेरणा से पढ़ाई की। वकालत शुरू की तो दिन बदलने शुरू हुए। इसके बाद कानूनी सहायता केंद्र खोलकर गरीब आदिवासियों को उनका हक दिलाने की लड़ाई शुरू की। पिछले तीन साल में रोशन लाल और रवि शंकर 400 से अधिक लोगों की मदद कर उन्हें बंधुआ मजदूरी से निकाल चुके हैं। प्रयागराज के मेजा, कोरांव, देवघाट, पथरा, लोहगरा, नेवडिया वयालिस, सहसों आदि क्षेत्रों में यह सहायता केंद्र चल रहे हैं।

रोशन लाल कहते हैं, 2008 में परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। पिता केशरी प्रसाद ने कर्ज लिया था। मां की मौत के बाद पांच भाई और एक बहन के भरण पोषण के लिए मैं भी पिता के साथ मजदूरी करने लगा, लेकिन इतना पैसा नहीं मिलता था कि सभी पेट भर खा सकें। मैंने दूसरी जगह काम करके कर्ज चुकता किया। वकालत की पढ़ाई की। अब दूसरों की हक की लड़ाई लड़ रहा हूं...। कोहड़ार, मेजा निवासी मंजू बेरी ने बताया, 10 साल से ठेकेदार के पास मैं और मेरे पति पत्थर तोड़ने का काम करते थे। ठेकेदार का कर्ज खत्म ही नहीं हो रहा था। रोशनलाल के संपर्क में आने के बाद हम लोग ठेकेदार के चंगुल से निकल पाए।

उप्र के प्रयागराज में कानूनी सहायता केंद्र में लोगों से बातचीत करके रविशंकर। (मध्य में) जागरण

मोतिया देवी

रोशन लाल

मंजू बेरी सभी फोटो जागरण

प्रयागराज में आज भी बंधुआ मजदूरी प्रथा है। माता-पिता द्वारा लिया गया कर्ज, उनके बच्चे भर रहे हैं। दो दशक पहले बंधुआ मजदूरी प्रथा को समाप्त करने की मुहिम चली। हजारों मजदूरों को आजाद कराया गया, लेकिन पिछले 10 साल से इस दिशा में कोई काम नहीं हुआ, इसलिए लोग दोबारा बंधुआ मजदूरी के दलदल में फंस गए।'

- प्रो सुनीत सिंह, सलाहकार, प्रगति वाहिनी, गोविंद वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज, उप्र

छत्तीसगढ़ के कारली स्थित सीआरपीएफ कैंप में संविधान पर अपनी बात रखती जुंको (बाएं, लाल साड़ी में)। नईदुनिया

आत्मसमर्पित नक्सली ने दिलाई संविधान की रक्षा की शपथ

योगेंद्र ठाकुर, दंतेवाड़ा : 26 को यूं तो पूरा देश संविधान दिवस मना रहा था, लेकिन छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले के कारली स्थित सीआरपीएफ 111वी बटालियन के कैंप चल रहा कार्यक्रम अपने आप में अनूठा था। दरअसल, यहां मुख्य अतिथि कोई नेता या अफसर नहीं, बल्कि आत्मसमर्पित महिला नक्सली थी। गोद में दुधमुंहा और चेहरे पर गर्व भरी चमक लिए यह महिला जब फोर्स के अफसरों, जवानों और ग्रामीणों को संविधान की रक्षा और सम्मान करने का संकल्प दिला रही थी, तो हर कोई गौरवान्वित महसूस कर रहा था। सीआरपीएफ कमांडेंट द्वय अंबेश कुमार और अरुण कुमार, कैंप के जवान और आसपास के ग्रामीण भी इस दौरान उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में जब कुआकोंडा निवासी आत्मसमर्पित नक्सली जुंको कवासी का परिचय दिया गया, तो एकबारगी सभी चौंक गए। जुंको ने सभी को संविधान की रक्षा और सम्मान की शपथ दिलाई। वहां मौजूद ग्रामीणों की ओर मुखातिब होते हुए जुंको ने कहा कि वे संविधान को आत्मसात कर देश की एकता और अखंडता के लिए सदैव तत्पर रहेंगे...। जुंको ने इस मौके पर ग्रामीणों को संदेश देते हुए कहा कि वे नक्सलियों के बहकावे में न आएं। वहां बर्बादी के सिवाय कुछ नहीं है। उनका कोई ईमान नहीं है...।

पहली बार संगम तट पर विदेशी कंपनी करा रही माघ मेले का आयोजन

ज्ञानेन्द्र सिंह, प्रयागराज

- इंग्लैंड की कंपनी ई एंड वाई को मेला प्रशासन कंसल्टेंट बनाया गया
- मेले के ब्लू प्रिंट, ले-आउट और अन्य तैयारियों तक में कंपनी का हस्तक्षेप

गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर युगों-युगों से लगते आ रहे माघ मेले का आयोजन इस बार विदेशी कंपनी करा रही है। इंग्लैंड की अर्नस्ट एंड यंग (ई एंड वाई) कंपनी की सेवाएं ली जा रहीं है। कंपनी के पांच अधिकारी मेले की तैयारियों को अमली जामा पहनाने में जुटे हैं। कंपनी के अधिकारियों को ही टेंडर से लेकर मेले का ब्लू प्रिंट और ले-आउट तक तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने पहली बार माघ मेले में किसी कंपनी को कंसल्टेंट नियुक्त किया है। प्राधिकरण प्रशासन का दावा है कि जिसको कंसल्टेंसी दी गई है, वह कंपनी अंतरराष्ट्रीय स्तर की है। कंपनी के यंग प्रोफेशनल्स भी विज्ञान और तकनीकी में दक्ष हैं। उन्हें बाजार से लेकर प्रबंधन और व्यवस्था का बेहतर ज्ञान है, इसीलिए कंपनी की मदद ली जा रही है। कंपनी ने यहां अखिलेश पांडेय को प्रोजेक्ट डायरेक्टर नियुक्त किया है, जबकि प्रखर श्रीवास्तव, सौम्या त्रिपाठी और तथागत को अन्य विभिन्न पदों पर रखा है। कंपनी को मेला बसाने से लेकर प्रबंधन और श्रद्धालुओं को दी जाने वाली सुविधाओं तक में हस्तक्षेप का अधिकार दिया गया है। कंपनी के अफसर ले-आउट प्लान, सेक्टर प्लान, भीड़ प्रबंधन, यातायात प्रबंधन, स्नान घाटों के निर्माण व रखरखाव, सड़क व पुल निर्माण से लेकर विद्युत और जलापूर्ति की व्यवस्था भी देख रहे हैं। हाल ही में हुए मेला कार्यों की पूरी टेंडर प्रक्रिया को कंपनी ने ही पूरा कराया। कल्पवासियों, श्रद्धालुओं और संत-महात्माओं की सुविधाओं का कार्य भी कंपनी की देखरेख में होगा। जमीन आवंटन से लेकर संस्थाओं व अन्य को बसाने का कार्य भी कंपनी की ही सलाह पर होगा। विज्ञापन, दुकानों और पॉर्किंग के लिए भी कंपनी के अधिकारियों की सलाह मानी जाएगी।

फाइल फोटो

माघ मेले में पहली बार किसी कंसल्टेंट कंपनी की सेवाएं ली जा रही हैं। इंग्लैंड की इस कंपनी में देश के लोग ही कार्यरत हैं, जो प्रबंधन से लेकर अन्य कार्यों में निपुण हैं। इनका अनुबंध मेले तक ही है।

- रजनीश कुमार मिश्र, मेलाधिकारी

पहले अपराधियों का किया खात्मा अब गायों में बसती है इनकी आत्मा

उत्तर प्रदेश के बरसाना स्थित मान मंदिर की गोशाला में गोसेवा में रत बिहार के पूर्व डीजीपी आनंद शंकर। जागरण

विनीत मिश्र, मथुरा

संडे बॉक्स जरा हटके...

- बिहार के पूर्व डीजीपी आनंद शंकर ने गायों की सेवा में समर्पित किया जीवन

साधारण कुर्ता-पायजामा। गले में तुलसी की माला और माथे पर चंदन का लंबा टीका। सुबह-शाम ब्रज में मान मंदिर की गोशाला में गायों की सेवा। गोशाला के ही एक कमरे में जमीन पर चटाई बिछाकर सोना। यह उस शख्सियत की पहचान है जिसे खाकी में देख बदमाश खौफ खाते थे। पुलिस के सर्वोच्च पद पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पर आसीन रहे आनंद शंकर ने कान्हा की नगरी में अपना जीवन गायों की सेवा में समर्पित कर दिया है।

आनंद शंकर 2009-10 में बिहार पुलिस के महानिदेशक रहे हैं। उनका ब्रज आना एक अजीब संयोग रहा। 19 जून, 2008 को पत्नी राज्यश्री का निधन हो गया। सपने में पत्नी का अंतिम संस्कार राधारानी की धरा बरसाना में करते देखा। स्वजनों को इसके बारे में बताया और 20 जून को पत्नी का पार्थिव शरीर विमान से लेकर दिल्ली पहुंचे। वहां से बरसाना पहुंच गहवर वन में अंतिम संस्कार किया। इसके बाद पटना चले तो गए, लेकिन मन नहीं रमा। पत्नी वियोग में अकेलापन अब कृष्ण भक्ति में मन को रमा कटता। बेटा अमृताश व्यापार करता है। आनंद शंकर बताते हैं कि 2010 में सेवानिवृत्त होने के बाद वर्ष 2013 में वह अकेले बरसाना घूमने आए। यहां रहकर रोज सुबह लाड़िली जी के मंदिर में राधा की आराधना करते। बरसाना से जाने की इच्छा नहीं हुई, तो गुजराती कॉलोनी में मकान बनवाने को एक प्लॉट खरीद लिया। आखिर परिवार का मोह त्याग छह अगस्त, 2014 को बरसाना में बस गए। मन था कि जिन गायों को उनके गोपाल (भगवान कृष्ण) चराते थे, उनकी सेवा में अपना जीवन बिताना है। मान मंदिर की गोशाला में एक कमरा ले लिया। यहीं से खाकी वर्दी वाले कड़क अफसर की जिंदगी ने रास्ता बदल लिया। रोज सुबह मंदिर जाते हैं, फिर गायों की सेवा करते हैं। ब्रज के विरक्त संत पद्मश्री रमेश बाबा की मान मंदिर की गोशाला में 53 हजार गाय हैं। सुबह और शाम गायों को चारा देना आनंद शंकर की दिनचर्या में शामिल है। उम्र के 70वें पड़ाव पर पहुंच चुके आनंद शंकर जिस छोटे से कमरे में रहते हैं, वहां किताबों का भंडार है। वह कहते हैं ठाकुर जी की मंगला आरती चरणामृत है। कभी-कभी पटना से बेटा और बहू मिलने आते हैं, लेकिन जबसे बरसाना आए, खुद नहीं गए।

बिहार के पूर्व डीजीपी आनंद शंकर (फाइल फोटो)। जागरण

मैं ब्रजवास के लिए आया हूं, ब्रज में रहकर ही जीवन बिताना चाहता हूं। पत्नी का अंतिम संस्कार भी यहीं हुआ। अब मैं एक रात भी ब्रज से बाहर नहीं बिताना चाहता। यही इच्छा है, जीवन ब्रज, गाय और ब्रजवासियों की सेवा में कटे।

- आनंद शंकर, बिहार के पूर्व डीजीपी

बदलाव

छत्तीसगढ़ कांकेर और कोंडागांव में खुले गोंडी भाषा के स्कूल, आदिवासी समाज कर रहा संचालित, सरकार भी कर ही है प्रोत्साहित

गोंडी भाषा के जरिये आसानी से गणित सीख रहे आदिवासी बच्चे

अनिल मिश्रा, जगदलपुर

अब तक अलिखित रही गोंडी अब तेजी से स्कूलों में शिक्षण का माध्यम बन रही है। इसका लाभ यह हो रहा है कि आदिवासी समाज की मूल भाषा गोंडी में पढ़ाई होने से बच्चे गणित और विज्ञान जैसे विषय को आसानी से समझ पा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बस्तर संभाग के दो जिलों कांकेर और कोंडागांव में गोंडी भाषा के स्कूल खोले गए हैं। ये स्कूल आदिवासी समाज द्वारा संचालित हैं, जिन्हें सरकार भी प्रोत्साहित कर रही है। हालांकि, सरकारी स्तर पर अभी गोंडी भाषा के विकास के लिए कोई खास काम भले ही नहीं हुआ है, मगर बीजापुर के सुदूर इलाकों में दोबारा खोले जा रहे स्कूलों में गोंडी में पढ़ाई कराना मजबूरी बन गई है, क्योंकि आदिवासी बहुल बस्तर संभाग में गोंड समुदाय की आबादी सबसे अधिक है। बस्तर से सटे आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और ओडिशा के सीमावर्ती जिलों में एक एनजीओ के प्रयास से गोंडी पर कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जा रहा है।

देश में गोंड समुदाय सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय माना जाता है। गोंडी बोलने वाले करीब एक करोड़ लोग देश में हैं। द्रविड़ मूल की गोंडी बोली का कोई लिखित दस्तावेज नहीं रहा, लेकिन सीजीनेट संस्था के प्रयासों से विभिन्न राज्यों में बोली जाने वाली गोंडी के तीन हजार शब्दों का मानकीकरण किया जा चुका है। इस संस्था ने माइक्रोसाफ्ट और रायपुर की ट्रिपल आइटी के साथ मिलकर इसका एक साफ्टवेयर भी तैयार कराया है जो मोबाइल फोन पर काम करता है। इसमें जैसे गूगल की मदद से हिंदी से अंग्रेजी का अनुवाद किया जा सकता है वैसे ही हिंदी से गोंडी में भी अनुवाद किया जा सकेगा।

गोंडी में तैयार पुस्तकें बांटेंगे : बीजापुर जिले में सलवा जुडूम के दौर में बंद हुए स्कूलों को दोबारा खोला जा रहा है। यहां सरकार उन्हीं गांवों के पढ़े लिखे युवाओं को शिक्षक बना रही है। शुरुआत में बच्चों को हिंदी का पाठ्यक्रम गोंडी में ही पढ़ाया जा रहा है। गौरतलब है कि जिले के भोपालपटनम के दादा जोकाल ने अरसा पहले साक्षरता अभियान के लिए गोंडी में पुस्तकें तैयार की थीं। उन किताबों को दोबारा खुल रहे स्कूलों में बंटवाने की तैयारी है।

कांकेर के सरोना के जंगो रायतार इंग्लिश गोंडी माध्यम स्कूल में उपस्थित बच्चे। नईदुनिया

तय समय पर आर्थिक लक्ष्य हासिल करेंगे : शाह

मुंबई : गृह मंत्री अमित शाह ने उम्मीद जताई है कि 2024 तक देश की इकोनॉमी पांच लाख करोड़ डॉलर तक पहुंच जाएगी। इसके साथ ही भारत दुनिया की पांच बड़ी इकोनॉमी में शामिल हो जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार ने पांच वर्ष पिछली सरकारों द्वारा की गई गड़बड़ियों को ठीक करने में लगाए हैं। अब आने वाले वर्षों के दौरान आर्थिक सुधार को अंजाम दिया जाएगा, ताकि भारत दुनिया की मजबूत इकोनॉमी में शामिल हो सके। (प्रेट्र)

दो करोड़ यात्री वाहनों का बिक्री आंकड़ा पार करना कंपनी के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। कंपनी भारत में छोटे इलेक्ट्रिक वाहन लांच करने की योजना बना रही है।
— केनिची अयुकावा
एमडी, मारुति सुजुकी

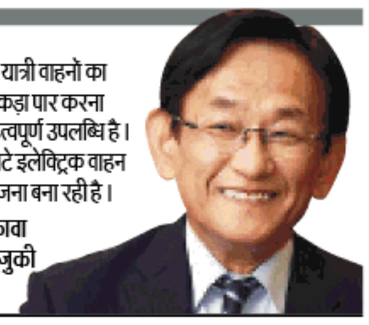

मौका ▶ सरकार के छह महीने पूरे करने के मौके पर वित्त मंत्री ने गिनाए सुधार

लगातार जारी रहेगा आर्थिक सुधारों का सिलसिला : निर्मला सीतारमण

इकोनॉमी के हित में सरकारी प्रयास जारी रहने की कही बात

प्रतीकात्मक

नई दिल्ली, आइएएनएस : केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इकोनॉमिक सुधार जारी रहने की बात कही है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ समय के दौरान इकोनॉमी में ढांचागत सुधार के लिए कई बड़े प्रयास किए गए हैं। इकोनॉमिक हितों को ध्यान में रखते हुए सरकार ऐसे प्रयास जारी रखेगी।

मोदी सरकार द्वारा दूसरे कार्यकाल के छह महीने पूरे करने के मौके पर वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार ने ढांचागत सुधार को गति दी है। इस कड़ी में पिछले कुछ महीनों के दौरान मोदी सरकार ने कॉरपोरेट टैक्स में कटौती की है। घरेलू कंपनियों के मामले में कॉरपोरेट टैक्स 30 परसेंट से घटाकर 22 परसेंट कर दिया गया है। नई कंपनियों के मामले में तो यह 15 परसेंट तक कम कर दिया गया है। इसके साथ ही सरचार्ज और सेस में भी कटौती की गई है। वित्त मंत्री का कहना था कि सरकार ने इन्सॉल्वेंसी एंड बैंक्रप्सी कोड में सुधार किया है। इस दौरान एनबीएफसी सेक्टर को संकट से उबारने के प्रयास भी किए हैं। इसके अलावा बैंकों में लिक्विडिटी बढ़ाने के लिए 70 हजार करोड़ रुपये का फंड इंजेक्ट किया गया है।

सरकार ने ह्यउसिंग मार्केट को गति देने के लिए स्पेशल विंडो की व्यवस्था की है। इसके लिए 25 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इस फंड के द्वारा रुके हुए ह्यउसिंग प्रोजेक्ट की मदद की जाएगी। इसके अलावा सार्वजनिक उपक्रमों के विनिवेश का फैसला लिया गया है। हाल में पांच ऐसी कंपनियों के विनिवेश की घोषणा की गई थी।

वैश्विक सुस्ती से अछूती नहीं है भारतीय इकोनॉमी : जावडेकर

नई दिल्ली, एएनआइ : केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर ने भारतीय इकोनॉमी पर वैश्विक सुस्ती का नकारात्मक प्रभाव पड़ने की बात कही है। मोदी सरकार द्वारा छह महीने पूरे करने के मौके पर जावडेकर ने कहा कि पिछले कुछ समय से पूरी दुनिया में सुस्ती देखी गई है। कुछ हद तक इससे हमारी इकोनॉमी भी प्रभावित हुई है। लेकिन हमारी सरकार ने इससे निपटने के लिए कुछ बड़े कदम उठाए हैं। जावडेकर ने कहा कि मोदी सरकार ने बैंकों के विलय जैसा बड़ा सुधारात्मक कदम उठाया है। इसके अलावा बैंकों को 70,000 करोड़ रुपये की मदद दी गई है और पीएसयू के विनिवेश का महत्वपूर्ण फैसला लिया गया है। टैक्स सुधार का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इकोनॉमिक गतिविधियों को गति देने के लिए कॉरपोरेट टैक्स में कटौती की है। इससे विदेशी कंपनियां भारत में अपना निवेश बढ़ाएंगी। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री के विदेशी दौरे और घरेलू मोर्चे पर मिली उपलब्धियों को गिनाया। जावडेकर ने कहा कि प्रधानमंत्री के विदेशी दौरों से विश्व में भारत की बेहतर छवि निर्माण में मदद मिली है।

अटके घरों के निर्माण से होगी नए वर्ष की शुरुआत : चक्रवर्ती

नई दिल्ली, आइएएनएस : सरकार ने कहा है कि अटके ह्यउसिंग प्रोजेक्ट के लिए प्रस्तावित स्पेशल विंडो की व्यवस्था दो महीने में काम करना शुरू कर देगी। इकोनॉमिक मामलों के सचिव अतनु चक्रवर्ती ने बताया कि हम नए वर्ष का स्वागत अटकी ह्यउसिंग परियोजनाओं में निर्माण की दोबारा शुरुआत से करेंगे। हमें उम्मीद है कि इन प्रोजेक्ट्स की मदद के लिए बनाई गई स्पेशल विंडो दो महीनों के भीतर ऑपरेशनल हो जाएगी।

इससे पहले सरकार ने अटके ह्यउसिंग प्रोजेक्ट को शुरू करने के लिए 25,000 करोड़ रुपये की मदद देने की घोषणा की थी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पिछले महीने की शुरुआत में ह्यउसिंग सेक्टर की मदद करने के लिए यह योजना पेश की थी। इस दौरान उन्होंने कहा था कि सरकार रुके हुए 1,600 ह्यउसिंग प्रोजेक्ट को शुरू करने के लिए आर्थिक सहायता देगी। इससे 4.58 लाख घरों का निर्माण कार्य पूरा किया जाएगा।

- ह्यउसिंग प्रोजेक्ट की मदद के लिए स्पेशल विंडो होगा शुरू
- स्टील, सीमेंट और आयरन सेक्टर को मिलेगी गति
- फंड की कमी से हजारों ह्यउसिंग प्रोजेक्ट अटके पड़े हैं

नए वर्ष से ह्यउसिंग सेक्टर में रौनक आएगी। प्रतीकात्मक

इस योजना के मुताबिक ह्यउसिंग सेक्टर को गति देने के लिए केंद्र सरकार एक स्पेशल फंड का गठन करेगी। इसमें सरकार 10 हजार करोड़ रुपये की मदद देगी। इसके अलावा 15 हजार करोड़ रुपये एलआइसी और एसबीआइ की ओर से दिए जाएंगे। इन 25 हजार करोड़ रुपये की फौरी मदद के अलावा एलआइसी और एसबीआइ के सॉवरेन और पेंशन फंड भी ह्यउसिंग मार्केट में निवेश करेंगे। कर्ज वितरण में किफायती और मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए बनने वाले ह्यउसिंग प्रोजेक्ट को प्राथमिकता दी जाएगी।

ह्यउसिंग मार्केट को संकट से उबारने के लिए की गई इस घोषणा के दौरान वित्त मंत्री ने कहा था कि इससे बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा होंगे। इसके साथ ही स्टील, सीमेंट और आयरन जैसे उद्योगों को सीधा लाभ मिलेगा। गौरतलब है कि एनबीएफसी सेक्टर में लिक्विडिटी के संकट से सबसे ज्यादा नुकसान ह्यउसिंग सेक्टर को उठाना पड़ा है। इस दौरान फंड की कमी के चलते बहुत से ह्यउसिंग प्रोजेक्ट अधूरे पड़े हैं।

न्यूज गैलरी

एयरटेल 300 करोड़ डॉलर जुटाने की तैयारी में

नई दिल्ली : अग्रणी टेलीकॉम कंपनी भारती एयरटेल 300 करोड़ डॉलर (करीब 21,500 करोड़ रुपये) जुटाने की तैयारी में है। निदेशक बोर्ड की चार दिसंबर को होने वाली बैठक में कंपनी इसके लिए प्रस्ताव रखेगी। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक एयरटेल इस फंड का प्रयोग अपना कर्ज चुकाने और विस्तार कार्यों में करेगी। इससे पहले कंपनी ने शेयर बाजारों को बताया कि चार दिसंबर को इसके बोर्ड की बैठक होनी है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक एयरटेल पर 35 हजार करोड़ रुपये से अधिक का कर्ज है। (प्रेट्र)

जियो ने रिलायंस इन्फ्रा के लिए लगाई सबसे मंहगी बोली

नई दिल्ली : रिलायंस जियो ने रिलायंस इन्फ्राटेल के मोबाइल टावर और ऑप्टिकल फाइबर बिजनेस के लिए सबसे मंहगी बोली लगाई है। सूत्रों के मुताबिक जियो ने इस असेट के लिए करीब 3,600 करोड़ रुपये की बोली लगाई है। इसकी प्रतिस्पर्धी कंपनी एयरटेल ने रिलायंस इन्फ्रा के इन असेट्स के लिए करीब 1,800 करोड़ रुपये की बोली लगाई है। इस तरह बड़ी बोली के चलते जियो को रिलायंस इन्फ्रा के यह असेट मिलने की संभावना है। (प्रेट्र)

को-ऑपरेटिव सोसाइटी को बंद करने का आदेश

नई दिल्ली : सरकार ने अहमदाबाद आधारित आदर्श क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसाइटी को बंद करने का आदेश दिया है। इसपर आम लोगों के रुपयों का दुरुपयोग करने का आरोप है। इसके साथ ही सोसाइटी के लिए एक लिक्विडेटर (असेट का आकलन करने वाला) नियुक्त कर दिया गया है। (प्रेट्र)

सैट ने सेबी से कार्वी को जानकारी देने को कहा

नई दिल्ली : सिक्युरिटीज अपीलेट ट्रिब्यूनल (सैट) ने सेबी से कहा है कि वह कार्वी स्टॉक ब्रोकिंग को उसके द्वारा मांगी गई जानकारी उपलब्ध कराए। इससे पहले सेबी ने निवेशकों के फंड का दुरुपयोग करने के मामले में कार्वी पर प्रतिबंध लगा दिए थे। इसके बाद कार्वी ने सैट में अर्जी दाखिल की थी। इसमें ट्रिब्यूनल से कहा गया था कि वह सेबी को कार्वी पर लगाए गए प्रतिबंधों के मामले को स्पष्ट करने का आदेश दे। (प्रेट्र)

पतंजलि ने रुचि सोया के अधिग्रहण के लिए जुटाया फंड

नई दिल्ली : पतंजलि आयुर्वेद ने रुचि सोया के अधिग्रहण के लिए 3,200 करोड़ रुपये जुटाने की बात कही है। बाबा रामदेव की कंपनी ने कहा है कि उसने इन्सॉल्वेंसी प्रक्रिया के माध्यम से रुचि सोया के अधिग्रहण के लिए जरूरी 3,200 करोड़ रुपये का बंदोबस्त कर लिया है। (प्रेट्र)

एनके सिंह ने जीएसटी को बताया क्रांतिकारी टैक्स सुधार

नई दिल्ली : जीएसटी की तारीफ करते हुए 15वें वित्त आयोग के चेयरमैन एनके सिंह ने इसे क्रांतिकारी टैक्स सुधार बताया है। उन्होंने कहा कि इससे देश के टैक्स कलेक्शन में सुधार होगा। सरकार ने टैक्स सुधार में बड़ा कदम उठाते हुए जुलाई 2017 में जीएसटी लागू करने का फैसला किया था। यह सेंटर और स्टेट गवर्नमेंट के 17 अलग-अलग टैक्सों का संयोजन है। (प्रेट्र)

कैश के जरिये हो बैंकों का रिकैपिटलाइजेशन : रंगराजन

हैदराबाद : आरबीआइ के पूर्व गवर्नर सी. रंगराजन ने कहा है कि बैंकों का रिकैपिटलाइजेशन बांड के बजाय कैश के जरिये किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसके लिए बैंकों में कैश डाला जाना बेहतर विकल्प है। इसके साथ ही उन्होंने बैंकों को सलाह दी कि वे सरकार से उचित दूरी बनाकर रखें। गौरतलब है कि इसी वर्ष अगस्त में सरकार ने बैंकों में 70 हजार रुपये की पूंजी डालने की घोषणा की थी। (प्रेट्र)

अपना नुकसान कर कोई कारोबारी समझौता नहीं : गोयल

मुंबई, प्रेट्र : वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने स्पष्ट किया है कि भारत अपने नुकसान की कीमत पर किसी भी मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर नहीं करेगा। गोयल के मुताबिक भारत अपने नागरिकों और उद्योगों के हितों की रक्षा सुनिश्चित करता रहेगा। वाणिज्य मंत्री ने कहा कि इसी सोच के चलते चौतरफा दबाव के बावजूद भारत ने रीजनल कांप्रिहेंसिव इकोनॉमिक पार्टनरशिप (आरसेप) से बाहर रहने का फैसला किया।

गोयल ने कहा, 'जब हम कोई भी मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) करते हैं, तो घरेलू उद्योगों और नागरिकों के हितों की रक्षा सुनिश्चित करना हमारा प्रमुख लक्ष्य होता है। बाकी देशों के साथ भारत के रिश्तों की बुनियाद इसी पर कायम रहेगी। भारत अब किसी भी देश के सामने घुटने नहीं टेकेगा, खुद का नुकसान कर कोई कारोबारी समझौता नहीं करेगा।' गोयल ने ई-कॉमर्स कंपनियों को भी चेताया कि वे कानून का पूरी तरह पालन करें, क्योंकि भारत लाखों छोटे कारोबारियों का देश है। बड़े निवेश के वादे की आड़ लेकर कोई भी बड़ी से बड़ी कंपनी भारत में अनुचित कारोबारी गतिविधियों में लिप्त हो, अब ऐसा नहीं होने देंगे।

उत्पादन में कमी से बढ़ रहा कॉपर का आयात

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कॉपर के घरेलू उत्पादन में कमी की वजह से इसके आयात में लगातार वृद्धि हो रही है। बीते दो वर्षों में घरेलू उद्योग में उथल-पुथल के चलते देश कॉपर के शुद्ध निर्यातक से आयातक में तब्दील हो गया है। वित्त वर्ष 2018-19 में इसके आयात में 182 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई।

मेटल इंडस्ट्री में स्टील और एल्यूमिनियम के बाद तीसरा स्थान रखने वाले कॉपर के निर्यात में धीरे-धीरे कमी आ रही है। केयर रेटिंग की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत करीब 18 वर्ष बाद संशोधित कॉपर का शुद्ध आयातक बन गया है। हालांकि मौजूदा वित्त वर्ष में संशोधित कॉपर के घरेलू उत्पादन में सुधार हुआ है, लेकिन तूतीकोरिन में स्मेल्टर बंद होने के बाद से इसकी घरेलू मांग पर दबाव बना हुआ है।

घरेलू स्तर पर कॉपर उत्पादन में सरकारी क्षेत्र की हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड के अलावा निजी क्षेत्र की हिंडाल्को और वेदांता इंडस्ट्रीज प्रमुख हैं। रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2014-18 में संशोधित कॉपर का उत्पादन 9.6 परसेंट की दर से बढ़ा है। लेकिन मई 2019 में स्टर्लाइट का 4,000 टन क्षमता वाला प्लांट बंद हो जाने से

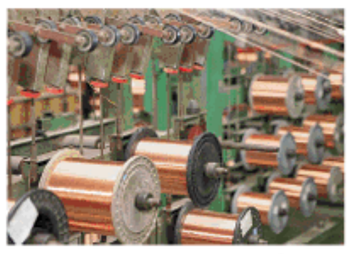
प्रतीकात्मक

वित्त वर्ष 2018-19 में उत्पादन में 46.1 परसेंट की कमी आ गई। देश की कॉपर स्मेल्टिंग क्षमता में इस प्लांट की हिस्सेदारी 40 परसेंट की थी। इसके चलते घरेलू मांग को पूरा करने के लिए इंडस्ट्री कॉपर के आयात पर निर्भर होती चली गई।

केयर रेटिंग के मुताबिक इस वजह से 2018-19 में कॉपर के आयात में 182 परसेंट तक की वृद्धि दर्ज की गई। इस अवधि में देश में 20,000 टन कॉपर का आयात हुआ जो 2017-18 में केवल 7,000 टन था। आयात की रफ्तार चालू वित्त वर्ष में भी जारी है और अब तक 37,000 टन कॉपर का देश में आयात किया जा चुका है।

इकरा ने चीनी उत्पादन का अनुमान घटाया

नई दिल्ली, प्रेट्र : निवेश सूचना प्रदाता कंपनी इकरा ने चीनी उत्पादन का अनुमान घटा दिया है। कंपनी के मुताबिक चालू सीजन वर्ष में चीनी का उत्पादन करीब 7.8 परसेंट गिरकर 2.6 करोड़ टन रहने की संभावना है। इससे पहले कंपनी ने 2.82 करोड़ टन चीनी उत्पादन का अनुमान लगाया था। इसके साथ ही इकरा ने करीब 35 लाख टन चीनी निर्यात होने की संभावना जताई है। सरकार के मुताबिक इस वर्ष करीब 60 लाख टन चीनी को विदेशी बाजारों में भेजा जाएगा। इकरा के मुताबिक चीनी का उत्पादन घटने से इसके दाम में कुछ सुधार होगा।

इकरा रेटिंग्स के वाइस प्रेसिडेंट सब्यसाची मजुमदार ने बताया कि इस सीजन वर्ष में चीनी का क्लोजिंग स्टॉक एक करोड़ टन रहने की संभावना है। इससे चीनी के भाव में सुधार होगा। गौरतलब है कि इस वर्ष चीनी का मूल्य करीब 33 से 34 रुपये प्रति किलो के भाव पर रहा है। इस वर्ष चीनी का एफआरपी 275 रुपये प्रति क्विंटल रखा गया है, जो कि पिछले वर्ष के बराबर है।

साइकिल वैली धनानसू में पहले फेज में बनेंगी 20 लाख साइकिलें

- हीरो मोटर्स कंपनी के डायरेक्टर अभिषेक मुंजाल ने कहा, इंडस्ट्री में नहीं मंदी
- हीरो ने दर्ज की सात प्रतिशत ग्रोथ
- 2022 से 40 लाख साइकिलें बनाएगी हीरो साइकिल

हीरो मोटर्स कंपनी के डायरेक्टर अभिषेक मुंजाल। जागरण

मुनीश शर्मा, लुधियाना

हीरो मोटर्स कंपनी (हीरो साइकिल) धनानसू में बनने वाली साइकिल वैली में 2020 में पहले फेज में दो मिलियन (20 लाख) साइकिलों का निर्माण आरंभ करेगी। इसके बाद कंपनी 2022 में इस प्लांट में चार मिलियन (40 लाख) साइकिलों का निर्माण आरंभ कर देगी। कंपनी के डायरेक्टर अभिषेक मुंजाल ने यह जानकारी दी।

मुंजाल ने बताया कि कंपनी साइकिल वैली के 100 एकड़ के प्रोजेक्ट का विस्तार कर रही है। कंपनी का लक्ष्य विश्व बाजार का 10 प्रतिशत शेयर लेने का है। इस समय ग्लोबल साइकिल मैन्यूफैक्चरिंग में कंपनी की हिस्सेदारी करीब पांच प्रतिशत है। अभिषेक मुंजाल ने कहा कि साइकिल इंडस्ट्री में कोई मंदी नहीं है। हीरो ग्रुप ने पिछले साल के मुकाबले सात प्रतिशत अधिक ग्रोथ की है। कंपनी अब इलेक्ट्रिक व्हीकल पर फोकस कर रही है। इस समय 36 बड़े शहरों में कंपनी इलेक्ट्रो ब्रांड के नाम से इलेक्ट्रिक व्हीकल 18 हजार से 1.50 लाख रुपये में बेच रही है।

350 करोड़ के निवेश से लुधियाना में बनेंगी हाई-एंड साइकिलें : 380 एकड़ भूमि में साइकिल वैली तैयार की जा रही है। इसमें 100 एकड़ जमीन में हीरो पार्क बन रहा है, जिसमें 350 करोड़ के निवेश से हाई-एंड साइकिलों का निर्माण किया जाएगा। कंपनी के वाइस चेयरमैन एसके राय ने बताया कि कंपनी 100 एकड़ में बनने वाले इस प्रोजेक्ट में 2,500 कर्मियों को नौकरियां देगी। कंपनी ने कई मल्टीनेशनल कंपनियों के साथ अनुबंध किया हुआ है।

वीएलसीसी का राष्ट्रीय वॉकथान

नई दिल्ली (वि) : फिट इंडिया मूवमेंट के लिए अपनी प्रतिबद्धता के तहत वीएलसीसी ने एक राष्ट्रव्यापी वॉकथान का आयोजन किया। इसमें देश भर से 70 शहरों के विभिन्न स्थानीय समुदायों के 12000 सदस्यों ने हिस्सा लिया। वॉकथान अपने महीनेभर के सार्वजनिक सेवा अभियान 'टेक द ऑरेंज प्लेज : स्टैंड अप इंडिया एंटी ओबेसिटी ड्राइव' की परिणति थी जिसका लक्ष्य एक सक्रिय और स्वस्थ जीवनशैली की आवश्यकता के बारे में जागरूकता पैदा करना था।

नई दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री किरन रिजिजू ने वॉकथान को झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष शांतनु सेन, वीएलसीसी की संस्थापक वंदना लूथरा और भारतीय खेल प्राधिकरण और फिट इंडिया मिशन के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

यस बैंक जुटाएगा 14 हजार करोड़

मुंबई, रायटर : वित्तीय संकट से जूझ रहा निजी क्षेत्र का कर्जदाता यस बैंक 200 करोड़ डॉलर (करीब 14,000 करोड़ रुपये) जुटाने की तैयारी कर रहा है। बैंक यह फंड संस्थागत निवेशकों को शेयर जारी करके जुटाएगा। यह राशि बैंक के बाजार पूंजीकरण से कुछ ही कम है। बैंक का बाजार पूंजीकरण करीब 240 करोड़ डॉलर (करीब 16,800 करोड़ रुपये) है। असेट के आधार पर यस बैंक देश का पांचवा बड़ा निजी बैंक है।

बैंक ने शेयर बाजारों को बताया कि वह कनाडा के अरबपति इरविन सिंह बराइच और हांगकांग आधारित एसपीजीपी होल्डिंग्स को 120 करोड़ डॉलर की हिस्सेदारी बेचने की तैयारी कर रहा है। इस समझौते के लिए बातचीत अंतिम दौर में है। इससे पहले बैंक ने इसी वर्ष अक्टूबर के अंत में इस सौदे पर बातचीत की जानकारी दी थी। हालांकि बैंक ने उस दौरान निवेशक का नाम नहीं बताया था। बातचीत की जानकारी देने से अब तक बैंक के शेयरों की कीमत में करीब 20 परसेंट का इजाफा हो चुका है।

प्रतीकात्मक

- यह राशि यस बैंक के एम-कैप से कुछ ही कम है
- बैंक ने रिलायंस इन्फ्रा के गिरवी शेयर भी बेचे

इसके साथ ही बैंक ने कहा है कि डिस्कवरी कैपिटल, आदित्य बिड़ला परिवार और साइटैक्स ग्रुप जैसे कुछ अन्य निवेशक उसकी हिस्सेदारी खरीदने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस दौरान बैंक ने कहा कि अमेरिका का एक संस्थागत निवेशक भी हिस्सेदारी खरीदने में रुचि दिखा रहा है। हालांकि बैंक ने निवेशक का नाम नहीं बताया।

इस बीच यस बैंक ने कहा है कि उसने रिलायंस इन्फ्रा के 65 लाख गिरवी शेयर बेच दिए हैं। बैंक ने शेयर बाजारों को बताया कि उसने यह शेयर 25-28 नवंबर के बीच बेचे हैं। इन गिरवी शेयरों की कीमत रिलायंस इन्फ्रा की कुल शेयर पूंजी के करीब 2.7 परसेंट हिस्से के बराबर है।

ब्रोकर्स को मिले बेजा अधिकारों का नतीजा है कार्वी घोटाला

भारत में इक्विटी निवेश का मतलब है कि कंपनियों के बारे में ज्यादा से ज्यादा जांच-पड़ताल की जाए। लेकिन अब कार्वी ब्रोकिंग घपला सामने आने के बाद निवेशक के लिए यह जरूरी हो गया है कि वह न सिर्फ कंपनियों के बारे में अच्छी तरह से जांच पड़ताल करे, बल्कि अपने ब्रोकर पर भी नजर रखे। अपनी तमाम चिंताओं के साथ अब आपको इस बात की चिंता भी करनी चाहिए कि हो सकता है कि ब्रोकर आपके शेयर बेच ले और मिली रकम खुद रख ले। सेबी की जांच में जो बातें सामने आई हैं उनके मुताबिक कार्वी स्टॉक होल्डिंग ने अपने ग्राहकों के सैकड़ो करोड़ रुपये के शेयरों के साथ यही किया है। ग्राहकों के डिपॉजिटरी अकाउंट से शेयर ट्रांसफर किए गए, उन्हें बेचा गया और मिली रकम को कार्वी के रियल एस्टेट बिजनेस में ट्रांसफर कर दिया गया।

सेबी की जांच में अब तक जो बातें सामने आई हैं, उसके हिसाब से यह बड़े पैमाने पर डकैती का मामला है। भारत के इक्विटी मार्केट में यह एक तरह से दुष्कर्म है, और अपनी तरह का सबसे बड़ा दुष्कर्म है। लेकिन इस घपले के बारे में सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि इसे अंजाम देने वालों के पास यह गलत काम करने का अधिकार था। जब शेयर के असली मालिकों को पता चला कि उनके शेयर बेच दिए गए हैं, तब सारा घपला सामने आया और इसमें लंबा समय लगा। अजीब बात है कि इंडस्ट्री से जुड़े हर व्यक्ति के साथ-साथ नियामक ने भी ऐसे हालात को स्वीकार कर लिया है। आपके लिए 'पावर ऑफ अटॉर्नी' पर साइन किए बिना डीमैट अकाउंट खुलवाना और इक्विटी में निवेश करना असंभव है। आपको इसके लिए आपको अपने ब्रोकर को पावर ऑफ अटॉर्नी देनी ही होगी।

धीरेंद्र कुमार, सीईओ
वैल्यू रिसर्च

बोनस

कार्वी घोटाले ने निवेशक और ब्रोकर के रिश्ते की बुनियाद को हिलाकर रख दिया है। इसने निवेशकों को साफ संकेत दिया है कि निवेश के लिए चुनी जाने वाली कंपनियों पर ही नजर रखना काफी नहीं, ब्रोकर के चाल-चरित्र पर भी नजर रखनी पड़ेगी। इक्विटी में खुदरा निवेशकों की भागीदारी के मामले में भारत एक नए मोड़ पर खड़ा है। सरकार की ओर से ऐसे निवेशकों की भागीदारी बढ़ाने के जितने उपाय किए जा रहे हैं, उसे देखते हुए बेहद जरूरी है कि नियामक इस मामले को सख्ती से निपटाए। अगर इस वक्त सख्ती नहीं हुई और ऐसे मामलों के अंत की पटकथा नहीं लिखी गई, तो माना जाएगा कि सेक्टर को चुस्त-दुरुस्त करने का एक बेहतरीन मौका नियामक ने यूं ही गंवा दिया है।

मैं आपको व्यक्तिगत अनुभव बता रहा हूं। कुछ साल पहले मैंने ऐसा ब्रोकरेज अकाउंट तलाशना शुरू किया जहां पावर ऑफ अटॉर्नी साइन करके ब्रोकर को नहीं देनी पड़े। काफी समय बर्बाद करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि ऐसा अकाउंट पाना और इसे इस्तेमाल करना संभव नहीं है। समस्या की जड़ यही है। शेयरों में निवेश करने के लिए आपको अपने निवेश का नियंत्रण हर हाल में ब्रोकर को देना है।

शॉर्ट टर्म के लिए ट्रेडिंग करने वालों या मार्जिन पर ट्रेडिंग करने वालों के लिए यह व्यवस्था ठीक है, क्योंकि ब्रोकर को विशेष परिस्थितियों में आपकी मंजूरी के बिना निवेश बेचने की जरूरत पड़ सकती है। लेकिन सबके लिए यह व्यवस्था सही नहीं है। मेरी तरह बहुत से निवेशक पूरी रकम का भुगतान करके शेयर खरीदते हैं और महीनों या बरसों तक उसे होल्ड करते हैं। मैं नहीं समझ पा रहा हूं कि ऐसे निवेशकों को अपने निवेश का पावर ऑफ अटॉर्नी अधिकार आखिर ब्रोकर को देना ही क्यों देना पड़ता है?

बहुत से निवेशक जिनको मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूं और जो वैल्यू रिसर्च स्टॉक एडवाइजर का इस्तेमाल करते हैं, इसी कैटेगरी में आते हैं। सेबी को यह सुनिश्चित करने के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए कि ऐसे निवेशकों को निवेश पर अपना अधिकार ब्रोकर को नहीं देना पड़े। ब्रोकर्स के लिए ऐसे निवेशक बिजनेस के लिहाज से बेकार हैं क्योंकि वे बहुत कम या लगभग नहीं के बराबर ट्रेड करते हैं। नियामक की जिम्मेदारी है कि वे ऐसे निवेशकों के हितों का ध्यान रखे।

मेरे इस कॉलम का इससे पहले का संस्करण प्रकाशित होने के बाद मुझे कुछ लोगों के ई-मेल मिले। इन लोगों ने कहा कि मैं गलत हूं। उन्होंने विस्तार से समझाया कि कैसे सिस्टम के काम करने के तौर-तरीकों की गहरी जानकारी रखने वाला व्यक्ति चीजों को सेट करके ब्रोकर को पॉवर ऑफ अटार्नी दिए बिना ही इक्विटी में ट्रेड कर सकता है। इससे मेरी ही बात साबित होती है। एक नए निवेशक को यह सुविधा तो अपने आप मिलनी चाहिए। उसे इसके लिए प्रयास क्यों करना पड़े।

कार्वी घपले को लेकर सबसे ज्यादा चिंता की बात यह है कि जरूरी नहीं कि कार्वी अकेली ऐसी कंपनी हो जहां पर यह घपला हुआ है। इस तरह की अवैध गतिविधियां करना संभव है। ऐसे में ऐसी किसी और कंपनी में भी छोटे या बड़े पैमाने पर यह अवैध काम हो रहा होगा। ग्राहकों के शेयर का अस्थायी इस्तेमाल बहुत आम है। ऐसे में दूसरों की रकम का इस्तेमाल कर सकने की काबिलियत एक बड़ा लालच है और इस लालच से बचना आसान नहीं है।

अभी सबसे अहम बात है कि इस मामले का समाधान तेजी से किया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि निवेशकों को जल्द से जल्द उनका पैसा वापस मिले। निवेशक इस भरोसे के साथ इक्विटी में निवेश करते हैं कि उनके निवेश की कीमत का चाहे जो हो, लेकिन जरूरत पड़ने पर कभी भी वे अपना निवेश बेचकर रकम निकाल सकते हैं। इस बात को सुनिश्चित करने के लिए नियम कानून भी हैं। हालांकि कार्वी का मामला नियामकीय ढांचे के लिए एक कड़ी परीक्षा की तरह है। इस समस्या के समाधान का नियामक का तरीका ही यह साबित करेगा कि मौजूदा नियामकीय ढांचा इस तरह की अवैध गतिविधियों को रोकने और ऐसे मामलों में निवेशकों के हितों को सुरक्षित रखने में सक्षम है या नहीं।

निवेशकों को उनकी रकम वापस मिले, यह बात काफी अहम है। लेकिन इस मामले के जरिये इंडस्ट्री के लिए एक उदाहरण स्थापित करना भी उतना ही जरूरी है। संकट का दौर हमेशा एक अवसर लेकर भी आता है। इस मामले में कड़े कदम उठाकर जिम्मेदार लोगों को इस तरह से दंडित किया जाए कि भविष्य में कोई और ऐसा कदम उठाने का दुस्साहस नहीं कर सके। अगर ऐसा नहीं होता है तो इसे सिस्टम को साफ करने का मौका गंवाना माना जाएगा।

2017 में इस्लामिक स्टेट (आइएस) के आतंकियों ने लंदन ब्रिज को निशाना बनाया था। इस हमले में 11 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि 48 लोग घायल हो गए थे और पुलिस ने आतंकियों को मार गिराया था।

अमेरिका में मैसुरु के छात्र की अज्ञात हमलावर ने गोली मारकर की हत्या

बेंगलुरु, प्रेट्र : अमेरिका में कंप्यूटर विज्ञान में मास्टर डिग्री की पढ़ाई कर रहे मैसुरु के रहने वाले एक छात्र की एक अज्ञात हमलावर ने गोली मारकर हत्या कर दी। परिवार के सदस्यों ने शनिवार को यह जानकारी दी। कर्नाटक के स्वास्थ्य मंत्री श्रीरामुलु ने शनिवार को छात्र के घर का दौरा किया। मुलाकात के बाद स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि वह केंद्रीय मंत्री सदानंद गौड़ा और प्रह्लाद जोशी से बात कर अंतिम संस्कार करने के लिए अमेरिका जाने में परिवार की मदद करेंगे।

25 वर्षीय छात्र के रिश्ते के भाई श्रीवत्स ने बताया कि अभिषेक सुदेश भट्ट कैलिफोर्निया में एक मोटल में अस्थायी तौर पर काम करता था। इसी मोटल में उसे गुरुवार को गोली मार दी गई। वह सैन बर्नार्डिनो में कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी में मास्टर डिग्री की पढ़ाई कर रहा था। यह घटना गुरुवार सुबह 11:30 से दोपहर 12.30 बजे के बीच की है। अगले शिफ्ट में काम संभालने वाले व्यक्ति ने परिवार को अभिषेक की हत्या की सूचना दी।

चूंकि पोस्टमार्टम समेत कानूनी प्रक्रिया में कुछ समय लग सकता है, इसलिए परिवार ने कैलिफोर्निया में ही अंतिम संस्कार करने का फैसला किया है। श्रीवत्स ने कहा, 'जांच पूरी होने के बाद पोस्टमार्टम किया जा रहा है। अगले सप्ताह फोरेंसिक पैथोलॉजी की समीक्षा की जाएगी। इस प्रक्रिया में कुछ समय लग सकता है। अभिषेक के माता-पिता वहीं अंतिम संस्कार करने के लिए अमेरिका रवाना होंगे।'

पाकिस्तान में रह चुका था लंदन ब्रिज का हमलावर

नापाक इरादे ▶ ब्रिटिश संसद पर मुंबई जैसा हमला करना चाहता था गुलाम कश्मीर का उस्मान

लंदन स्टॉक एक्सचेंज पर बम हमले की साजिश में उसे सात साल की सुनाई गई थी सजा

लंदन, एजेंसियां : लंदन ब्रिज इलाके में शुक्रवार को चाकूबाजी से दो लोगों की हत्या और तीन अन्य को जख्मी करने वाले आतंकी की पहचान उस्मान खान (28) के रूप में की गई है। उसका किशोरावस्था पाकिस्तान में बीता था। हालांकि, उसका परिवार मूल रूप से गुलाम कश्मीर का रहने वाला है। गुलाम कश्मीर में उसने अपनी जमीन पर आतंकी प्रशिक्षण शिविर बना रखा था। लंदन स्टॉक एक्सचेंज पर बम हमले की साजिश में उसे सात साल की सजा सुनाई गई थी। वह पिछले साल दिसंबर में पैरोल पर जेल से निकला था। वह ब्रिटिश संसद पर मुंबई जैसा हमला करना चाहता था।

स्कॉटलैंड यार्ड में आतंकरोधी पुलिस प्रमुख नील बसु ने बताया कि लंदन ब्रिज इलाके में चाकू से हमला करने वाले हमलावर की पहचान हो गई है। वह स्टैफोर्डशायर इलाके में रहता था। अधिकारी उसे पहचानते थे, क्योंकि 2012 में उसे आतंकी गतिविधियों के लिए जेल की सजा सुनाई गई थी। अब हमें यह पता लगाना है कि किस तरह उसने शुक्रवार के हमले को अंजाम दिया।

ब्रिटिश मीडिया के अनुसार, उस्मान खान का जन्म ब्रिटेन में हुआ और वह यहां का नागरिक था। बिना किसी शिक्षा के उसने स्कूल छोड़ दिया। किशोरावस्था में वह पाकिस्तान चला गया, जहां वह अपनी मां के साथ रहता था। ब्रिटेन लौटने के बाद उसने इंटरनेट पर कट्टरपंथी विचारधारा का प्रचार-प्रसार करना शुरू कर दिया और बड़ी संख्या में लोग उसके विचारों से प्रभावित हुए।

खबरों के मुताबिक, 2012 में उस्मान का संबंध अलकायदा से था। उस समय उसका संपर्क संभवतः आइएस से भी था। उसका एक रिकॉर्ड सामने आया है, जिसमें वह ब्रिटेन के कट्टरपंथियों को अपने आतंकी शिविर में प्रशिक्षण लेने के लिए भड़का रहा है। उसने एक समय कहा था कि हमें उम्मीद है कि हमारी जीत होगी। या तो हमें शहादत मिलेगी या फिर जेल जाना पड़ेगा।

2010 में बम हमले की साजिश में उस्मान खान समेत नौ लोगों को गिरफ्तार किया गया था। उस समय एक अभियुक्त के घर से एक हिट लिस्ट बरामद हुई थी। इसमें उस समय लंदन के मेयर बोरिस जॉनसन का नाम भी था। जॉनसन के अलावा अमेरिकन दूतावास और लंदन स्टॉक एक्सचेंज का नाम भी हिट लिस्ट में था।

लंदन ब्रिज हमला ऐसे समय में हुआ जब ब्रिटेन के आम चुनाव को महज दो सप्ताह बाकी है। आतंकी हमले में मारे गए लोगों की याद में सभी बड़ी राजनीतिक पार्टियों ने अपना चुनाव प्रचार स्थगित कर दिया है।

लंदन ब्रिज इलाके में हुई चाकूबाजी के बाद पुलिस सर्तक हो गई है। स्टैफोर्डशायर इलाके में पुलिस टैंट लगा कर आतंकी के घर के आसपास की हर गतिविधि पर नजर रख रही है। एएफपी

नीदरलैंड के हेग में भी हुई चाकूबाजी तीन नाबालिग घायल, चेतावनी जारी

द हेग, एएफपी : ब्रिटेन के मशहूर लंदन ब्रिज की तरह ही नीदरलैंड के हेग में भी एक हमलावर ने अचानक चाकू से लोगों पर हमला बोल दिया। शुक्रवार शाम हेग के प्रमुख शॉपिंग इलाके में हुई चाकूबाजी की इस घटना में तीन नाबालिग घायल हो गए। एक डिपार्टमेंटल स्टोर में हुई इस वारदात को अंजाम देने के बाद जहां हमलावर फरार हो गया, वहीं घटना के बाद दुकानदार दहशत में हैं। अमेरिका ने अपने नागरिकों को चेतावनी जारी करते हुए घटनास्थल से दूर रहने को कहा है।

बता दें कि इस घटना से कुछ घंटे पहले ही ब्रिटेन के लंदन ब्रिज पर भी चाकूबाजी की घटना हुई थी, जिसमें दो लोगों की मौत हो गई थी। लंदन पुलिस ने इसे आतंकी हमला करार दिया था। पुलिस ने संदिग्ध हमलावर उस्मान खान को भी मार गिराया। हालांकि नीदरलैंड पुलिस हेग हमले का फिलहाल कोई आतंकी कनेक्शन नहीं खोज पा रही है। हेग में घटी यह घटना संसद से कुछ दूरी पर स्थित शहर के ग्रोट बाजार के चौक इलाके में हडसन वे डिपार्टमेंटल स्टोर में हुई। वहां पर सभी बड़े ब्रांड की दुकानें हैं। हमले के संदर्भ में पुलिस प्रवक्ता मरिजे कुइपर ने कहा है सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर जांच की जा रही है। घायल हुए सभी नाबालिग हैं और घटना के बाद इन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था, लेकिन प्राथमिक उपचार के बाद सभी को घर जाने की इजाजत दे दी गई। घायलों की उम्र के संदर्भ में उन्होंने कोई जानकारी नहीं दी है। इस समय वारदात के पीछे किसी आतंकी साजिश की बात दिखाई नहीं दे रही है। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि चाकूबाजी के बाद दो किशोर लड़कियां भागते हुए स्टोर में आईं। वहीं एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि उसने दो लड़कियों को चीखते और भागते हुए देखा। प्रत्यक्षदर्शी के मुताबिक, वारदात को अंजाम देने के बाद हमलावर चीते की फुर्ती से भाग निकला। शुरुआत में पुलिस ने हमलावर की उम्र 40 से 50 के आसपास बताई थी, लेकिन बाद में उसने अपना बयान यह कहते हुए वापस ले लिया कि अभी जांच की जा रही है।

डच पुलिस ने दो आतंकियों को पकड़ा : पिछले कुछ दिनों में नीदरलैंड में कई आतंकी हमले हुए हैं। मार्च में यूट्रेक्ट शहर की ट्राम में फायरिंग के दौरान चार लोग मारे गए थे। इस घटना को तुर्की में जन्में एक व्यक्ति ने अंजाम दिया था।

'ट्रंप बताएं महाभियोग प्रक्रिया में अपना वकील भेजेंगे या नहीं'

डोनाल्ड ट्रंप की फाइल फोटो। एएफपी

वाशिंगटन, एपी: अमेरिकी संसद की न्याय समिति के अध्यक्ष जेरोल्ड नैडलर ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से पूछा है कि वह महाभियोग प्रक्रिया में पक्ष रखने के लिए कमेटी के समक्ष अपना वकील भेजेंगे या नहीं। उन्होंने राष्ट्रपति ट्रंप और जार्जिया के शीर्ष रिपब्लिकन नेता डॉग कोलिन्स को अगले सप्ताह के अंत तक जवाब देने का निर्देश दिया है। न्यूयार्क के डेमोक्रेटिक सांसद नैडलर ने यह पत्र ऐसे समय भेजा है, जब महाभियोग की प्रक्रिया एक नए चरण में पहुंच गई है।

दरअसल, ट्रंप पर अपने विरोधी और पूर्व उपराष्ट्रपति जो बिडेन और उनके बेटे के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले की जांच के लिए यूक्रेन पर दबाव डालने का आरोप है। प्रतिनिधि सभा की छह समितियां राष्ट्रपति ट्रंप पर महाभियोग चलाने के मामले की जांच करेंगी। सबसे मजबूत मामलों को न्यायिक समिति के पास भेजा जाएगा। ट्रंप लगातार अपने खिलाफ लाए गए महाभियोग को विपक्षी डेमोक्रेट्स की साजिश बता रहे हैं।

जापानी पीएम एबी पर भड़का उत्तर कोरिया, कहा-बेवकूफ

सियोल, एएफपी : अपने मल्टीपल रॉकेट लांचर के परीक्षण को बैलिस्टिक मिसाइल परीक्षण कहे जाने से भड़के उत्तर कोरिया ने जापान के प्रधानमंत्री एबी शिंजो को इतिहास का सबसे बड़ा बेवकूफ व्यक्ति करार दिया है। साथ ही यह धमकी भी दी है कि वह जल्द ही असली बैलिस्टिक मिसाइल परीक्षण भी देख सकते हैं।

दक्षिण कोरिया ने गुरुवार को यह खबर दी थी कि उत्तर कोरिया की ओर से कम दूरी की दो मिसाइलें समुद्र में दागी गई हैं। इसे प्योंगयांग ने नए सुपर-लार्ज मल्टीपल रॉकेट लांचर का परीक्षण करार दिया था। यह परीक्षण उत्तर कोरिया के सर्वोच्च नेता किम जोंग उन की निगरानी में हुई थी। इस परीक्षण पर किम ने संतुष्टि जताई थी। विशेषज्ञों का यह मानना है कि उत्तर कोरिया ने तेजी से रॉकेट दागने की क्षमता हासिल कर ली है। जबकि जापान के प्रधानमंत्री एबी ने इसे बैलिस्टिक मिसाइल परीक्षण करार देते हुए कहा था कि यह संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों का उल्लंघन है। इस टिप्पणी पर उत्तर कोरिया की सरकारी न्यूज एजेंसी केसीएनए ने शनिवार को विदेश मंत्रालय के एक बयान के हवाले से कहा, 'यह कहा जा सकता है कि एबी दुनिया में ऐसे इकलौते बेवकूफ हैं, जो मल्टीपल रॉकेट लांचर से दागी गई मिसाइल को पहचान नहीं पाते हैं। एबी यह जल्द ही देख सकेंगे कि असली बैलिस्टिक मिसाइल कैसी होती है?'

- शिंजो ने प्योंगयांग के मल्टीपल रॉकेट लांचर परीक्षण को बताया था बैलिस्टिक मिसाइल परीक्षण
- उत्तर कोरिया ने दी धमकी, कहा- वह जल्द ही असली बैलिस्टिक मिसाइल परीक्षण भी देख सकते हैं

एबी शिंजो। रायटर

हांगकांग के आंदोलन को बुजुर्गों का साथ

हांगकांग, एजेंसियां: हांगकांग के लोकतंत्र समर्थक आंदोलनकारियों को बुजुर्गों का भी साथ मिला है। शनिवार को आयोजित एकता रैली में सैकड़ों बुजुर्गों ने भी हिस्सा लिया। इस दौरान आंदोलनकारियों ने कहा कि जब तक उन्हें पहले के मुकाबले अधिक लोकतांत्रिक अधिकार नहीं मिलते, तब तक आंदोलन खत्म नहीं होगा। स्थानीय चुनावों में जीत और अमेरिका का समर्थन हासिल करने के बाद उत्साहित प्रदर्शनकारियों ने सरकार पर दबाव बनाए रखने के लिए रैलियां करने का एलान किया था। शनिवार की रैली उन्हीं में से एक थी।

शहर के चैटर गार्डन पर आयोजित रैली को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि यह समय जश्न मनाने का नहीं है। वास्तविक स्वायत्तता मिलने तक हमें लड़ाई जारी रखनी होगी। रैली के आयोजक 64 वर्षीय टैम क्वाक सन ने कहा कि सरकार प्रदर्शनकारियों की शुरुआती पंक्ति के नेताओं और युवा प्रदर्शनकारियों को अलग-अलग करना चाहती है, लेकिन हम हर हालत में साथ रहेंगे। यह बात ठीक है कि कई बार युवाओं की प्रतिक्रियाएं हिंसक और आक्रामक होती हैं, लेकिन हम सरकार के व्यवहार से अधिक नाखुश हैं। प्रदर्शनकारियों में शामिल 71 वर्षीय एक महिला ने कहा, 'मैंने जून में होने वाले शांतिपूर्ण प्रदर्शन में हिस्सा लिया था, लेकिन हमारी मांगों को सरकार ने नहीं सुना।' उधर, इस पूरे संकट से निपटने के लिए हांगकांग की सरकार स्वतंत्र समिति बनाने पर विचार कर रही है। यह बात चीफ सेक्रेटरी मैथ्यू चुंग ने तब कही जब उनसे स्वतंत्र समीक्षा समिति के बारे में पूछा गया।

चीन ने बेल्जियम के नागरिक को पकड़ा : चीन के कम्यूनिस्ट पार्टी के समाचार पत्र ने सरकार के हवाले से बताया है कि ग्वांझाऊ में बेल्जियम के एक नागरिक को पकड़ा गया है। उस पर अमेरिका में लोगों के साथ मिलकर हांगकांग के मामलों को उठाने का आरोप है। हांगकांग के साउथ चाइना मार्निंग पोस्ट समाचार पत्र ने एक लेख में कहा है कि संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग की उच्चायुक्त मिशेल बैचलेट ने भी अत्यधिक पुलिस बल के प्रयोग की जांच के लिए कहा।

हांगकांग में शनिवार को शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे युवाओं के साथ बुजुर्ग भी नजर आए। एपी

एशियाई सदी को साकार करने के लिए भारत-चीन मिलकर करें काम

बीजिंग, प्रेट्र : भारत और चीन के शीर्ष राजनयिक यहां एक बैठक में इस बात पर सहमत हुए कि दोनों देशों को क्षेत्रीय एवं वैश्विक स्तर पर सहयोग करना चाहिए और एशियाई सदी को साकार करने के लिए बहुआयामी संबंधों को अवश्य कायम रखना चाहिए।

यहां शनिवार को संपन्न हुए चौथे भारत-चीन थिंक टैंक फोरम में दोनों देशों के राजनयिकों ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए कई मुद्दों पर चर्चा की। बैठक में भाग लेने वाले अधिकारियों ने सर्वसम्मति से यह विचार जाहिर किया कि दोनों देशों को द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर करीबी सहयोग करना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मई 2015 में चीन यात्रा के दौरान थिंक-टैंक फोरम की स्थापना की गई थी। इस फोरम का आयोजन इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्डर्स अफेयर्स (आइसीडब्ल्यूए) और चाइनीज एकेडमी ऑफ सोशल साइंसेज ने संयुक्त रूप से किया। भारतीय दूतावास ने यहां जारी एक बयान में कहा है 'एशियाई सदी में भारत-चीन संबंध' के तहत इस मंच ने भारत और चीन के बीच करीबी विकास साझेदारी बनाने सहित विभिन्न मुद्दों पर गहराई से चर्चा की। ये चर्चा दोस्ती और खुलेपन की भावना के साथ हुई तथा इसने दोनों देशों के बीच परस्पर समझ बढ़ाने में योगदान दिया। बयान में कहा गया है, 'बैठक में भाग लेने वालों ने इसके बारे में सर्वसम्मत विचार प्रकट किया कि पड़ोसी एवं तेजी से विकास करने वाले देश होने के नाते यह जरूरी है कि भारत और चीन द्विपक्षीय रूप से और क्षेत्रीय एवं वैश्विक स्तर पर सहयोग करेंगे। भारत-चीन संबंध उभरती एशियाई सदी के लिए एक अहम संबंध है।'

- थिंक टैंक फोरम में दोनों देशों के बीच बहुआयामी संबंधों की मजबूती पर भी बल

बैठक में हिस्सा लेने वाले 15 सदस्यीय भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व आइसीडब्ल्यूए के महानिदेशक टीसीए राघवन ने किया। राघवन ने कहा कि उपमहाद्वीप की दो बड़ी शक्तियां, भारत और चीन को अवश्य ही बहुआयामी संबंध कायम रखना चाहिए। चीन में नियुक्त भारत के उप राजदूत ए. विमल ने कहा कि यह समझना जरूरी है कि यह सदी बेशक भारत और चीन की है। उन्होंने कहा, 'हमें शोध कार्यों के लिए युवा विद्वानों की एक दूसरे देशों के शोध केंद्रों में संक्षिप्त यात्रा पर विचार करना चाहिए।'

जलवायु शिखर सम्मेलन से पहले दुनियाभर में सड़कों पर उतरे लोग

बर्लिन, एएफपी : संयुक्त राष्ट्र (यूएन) जलवायु शिखर सम्मेलन से पहले वैश्विक तापमान में वृद्धि के खिलाफ नए सिरे से कदम उठाने और दुनियाभर के नेताओं पर दबाव बनाने के लिए शुक्रवार को यूरोप और एशिया में लाखों लोग सड़कों पर उतर आए। बर्लिन के 'ब्रांडेनबर्ग गेट' पर लोग तख्तियां लिए नजर आए जिस पर लिखा था, 'एक ग्रह, एक लड़ाई।' 'फ्राइडे फॉर फ्यूचर' के ताजा प्रदर्शन में जर्मनी के 500 से अधिक शहरों में छह लाख लोगों ने प्रदर्शन किया।

पुलिस ने बताया कि हेमबर्ग में कुल 30 हजार लोग और म्यूनिख में 17 हजार लोग एकत्रित हुए, जिन्होंने बढ़ते तापमान के खिलाफ आवाज उठाई। मैड्रिड में 1700 लोग एकत्रित हुए। वहीं, दिल्ली में लगभग 50 स्कूलों और कॉलेज के छात्रों ने हाथ में तख्तियां लेकर नारेबाजी करते हुए मार्च किया और सरकार से पर्यावरण आपातकाल घोषित करने की मांग भी की। 'फ्राइडे फॉर फ्यूचर' की डच शाखा ने कहा कि 15 शहरों में प्रदर्शन जारी है। एम्स्टर्डम में शाम को एक पदयात्रा का आयोजन किया गया, जहां प्रदर्शनकारियों ने जलवायु संकट के पीड़ितों के लिए मौन भी रखा।

हत्या मामले में सूरीनाम के राष्ट्रपति को 20 साल की कैद

परमारिबो, रायटर : सूरीनाम की एक सैन्य अदालत ने राष्ट्रपति डेसी बोउटर्सी को 15 विरोधियों की हत्या के 37 साल पुराने मामले में दोषी करार देते हुए 20 साल कैद की सजा सुनाई है। हालांकि कोर्ट ने उनकी गिरफ्तारी का आदेश नहीं दिया है। वह इस समय चीन के दौरे पर हैं। जबकि कोर्ट के फैसले के बाद विपक्षी पार्टियों ने बोउटर्सी के इस्तीफे की मांग की है।

सत्तारूढ़ नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी के उपाध्यक्ष रेमन अब्राहम ने बताया, 'राष्ट्रपति बोउटर्सी टेलीफोन के जरिये संपर्क में हैं। उन्होंने पार्टी की आपात बैठक बुलाई है। वह रविवार तक स्वदेश लौट सकते हैं।' वर्ष 2010 से राष्ट्रपति पद पर काबिज बोउटर्सी इस दक्षिणी अमेरिकी देश में बीती सदी के नौवें दशक में सैन्य सरकार के प्रमुख थे। 1982 में उन्हीं के शासन के दौरान वकीलों, पत्रकारों और शिक्षकों समेत 15 विरोधियों की हत्या की गई थी। सैन्य अदालत ने अपने फैसले में कहा कि बोउटर्सी की निगरानी में विरोधियों के खिलाफ चलाए गए अभियान के तहत सैनिकों ने सरकार की आलोचना करने वाले 16 प्रमुख लोगों को अगवा किया था। इनमें से 15 को मौत के घाट उतार दिया गया था। जबकि एक ट्रेड यूनियन नेता बच गया था। बाद में उसी नेता ने बोउटर्सी के खिलाफ गवाही दी थी। 74 वर्षीय बोउटर्सी इस फैसले को चुनौती दे सकते हैं। हालांकि उनके वकीलों की ओर से अभी तक कोई बयान नहीं आया है।

15 विरोधियों की हत्या के 37 साल पुराने मामले में सैन्य कोर्ट ने सुनाया फैसला

2010 से सत्ता पर काबिज हैं डेसी बोउटर्सी

डेसी बोउटर्सी फाइल

पीएम के इस्तीफे के एलान पर भी इराक में थम नहीं रहा बवाल

बगदाद, एएफपी : प्रधानमंत्री अदेल अब्दुल महदी के इस्तीफे के एलान के बावजूद इराक में बवाल थमने का नाम नहीं ले रहा है। राजधानी बगदाद समेत कई शहरों में शनिवार को भी सरकार विरोधी प्रदर्शनों का दौर जारी रहा। प्रदर्शनकारियों का कहना है, 'हम पूरे सरकारी तंत्र में आमूल-चूल परिवर्तन चाहते हैं। सभी भ्रष्ट नेताओं के हटने तक हमारा आंदोलन जारी रहेगा।'

सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार और बेरोजगारी के खिलाफ बगदाद में अक्टूबर के प्रारंभ से शुरू हुआ विरोध प्रदर्शन अब पूरे देश में फैल चुका है। करीब दो माह से जारी विरोध प्रदर्शनों ने कई बार हिंसक रूप भी ले लिया। सुरक्षा बलों के साथ हुई झड़पों में अब तक 420 से ज्यादा लोग मारे गए और करीब 15 हजार घायल हुए।

बगदाद, शिया समुदाय के पवित्र शहर नजफ और प्रधानमंत्री अदेल के जन्मस्थान नसीरिया में इस हफ्ते उग्र प्रदर्शनकारियों पर सुरक्षा बलों की फायरिंग में दर्जनों लोगों की जान चली गई। विरोध प्रदर्शनों के चलते बढ़ते दबाव और शिया धर्म गुरु अयातुल्ला अली अल-सिस्तानी की अपील पर प्रधानमंत्री अदेल ने शुक्रवार को यह एलान किया था कि वह संसद को अपना इस्तीफा सौंप देंगे। संसद की कार्यवाही रविवार से शुरू होने वाली है। लेकिन इस एलान के बावजूद प्रदर्शनकारी शांत नहीं हुए हैं। वे शासन व्यवस्था में पूरे बदलाव की मांग पर अड़े हुए हैं। दिवानिया शहर में शनिवार को जमा हुए हजारों प्रदर्शनकारियों में से एक ने कहा, 'हम इस आंदोलन को जारी रखेंगे। अदेल का इस्तीफा महज पहला कदम है और अब सभी भ्रष्ट नेताओं को हटना होगा।' नसीरिया के सिटी सेंटर में सैकड़ों प्रदर्शनकारी जुटे और शहर के तीन पुलों पर टायर फूंककर अपने इरादे को जाहिर किया। बता दें कि सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार, नौकरियों की कमी सहित विभिन्न मांगों को लेकर लोग प्रदर्शन कर रहे हैं। इसी सप्ताह सुरक्षा बलों की गोलीबारी में यहां 18 प्रदर्शनकारियों की मौत हो गई थी।

पीएम बनने की दौड़ में जिदान भी : सर्वोच्च न्यायिक परिषद की जांच समिति में चीफ जस्टिस फैक जिदान भी हैं। जिदान का नाम उन लोगों में बताया जा रहा है, जो अदेल की जगह लेने की दौड़ में बताए जा रहे हैं।

- प्रदर्शनकारी बोले, सभी भ्रष्ट नेताओं के हटने तक जारी रहेगा आंदोलन
- दो माह से जारी विरोध प्रदर्शनों में 420 से ज्यादा लोगों की गई जान

इराक में सरकार विरोधी प्रदर्शन के दौरान पवित्र शहर कर्बला में हिंसा भड़क गई। प्रदर्शनकारियों ने कई स्थानों पर आगजनी की और सुरक्षा बलों के साथ झड़पें हुईं। एएफपी

झड़पों से दहला कर्बला

इराक के पवित्र शहर कर्बला में शुक्रवार रात से शनिवार सुबह तक प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़पें होती रहीं। इस दौरान बम धमाकों और गोलियों की आवाज भी सुनाई दी। जबकि नजफ में शनिवार को शांति रही। इस शहर में गत बुधवार को प्रदर्शनकारियों ने ईरान के वाणिज्य दूतावास को फूंक दिया था।

जांच के लिए बनाई गई समिति

इराक की सर्वोच्च न्यायिक परिषद ने शनिवार को यह एलान किया कि मामले की तह में जाने के लिए एक समिति गठित की गई है। यह समिति पूरे घटनाक्रम की जांच करेगी। परिषद ने यह वादा भी किया है कि प्रदर्शनकारियों पर हमला करने वालों को दंडित किया जाएगा।

चिंताजनक

तेहरान में छाई गहरी धुंध, वायु गुणवत्ता बेहद खराब, निजी वाहनों की संख्या सीमित करने के लिए प्रशासन ने लागू की ऑड-इवेन योजना

ईरान में प्रदूषण का कहर, शिक्षण संस्थान बंद

तेहरान, एएफपी: ईरान में भी वायु प्रदूषण का कहर देखने को मिल रहा है। इसी के चलते शनिवार को राजधानी तेहरान सहित कई शहरों में स्कूल और विश्वविद्यालय बंद रखे गए। तेहरान के ऊपर आसमान में जहां गहरी धुंध छाई रही, वहीं भारी ट्रैफिक, फैक्ट्रियों से होने वाले प्रदूषण और बारिश की कमी के कारण हवा की गुणवत्ता बेहद खराब हो गई है। बता दें कि वायु प्रदूषण पर बुलाई गई आपातकालीन समिति की बैठक के बाद तेहरान में स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों को बंद रखने का आदेश शुक्रवार देर रात डिप्टी गवर्नर मुहम्मद तागीजादेह ने जारी किए।

सरकारी समाचार एजेंसी इरना ने डिप्टी गवर्नर के हवाले से बताया है कि बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण स्कूल और विश्वविद्यालय सहित तेहरान प्रांत के सभी उच्च शिक्षण संस्थान बंद रहेंगे। साथ ही तेहरान की सड़कों पर निजी वाहनों की संख्या को सीमित करने के लिए ऑड-इवेन योजना को लागू किया गया है। इतना ही नहीं तेहरान की सीमा के अंदर ट्रक आने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। एहतियात के तौर पर युवाओं और बुजुर्गों के साथ-साथ जिन लोगों को सांस की बीमारी है, उन्हें घर के अंदर रहने की हिदायत दी गई है। साथ सभी खेल गतिविधियों को भी स्थगित कर दिया गया है। सरकार से जुड़ी वेबसाइट के मुताबिक, अस्सी लाख की जनसंख्या वाले तेहरान शहर में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है।

सरकारी मीडिया ने इस साल की शुरुआत में स्वास्थ्य मंत्रालय के हवाले से बताया था कि वायु प्रदूषण के चलते ईरान के शहरों में प्रत्येक साल लगभग तीस हजार लोगों की मौत हो रही है। सर्दियों के दौरान तेहरान में समस्या और भी बदतर हो जाती है। पिछले साल जारी विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, तेहरान में होने वाले अधिकांश प्रदूषण की वजह भारी वाहन, वाइक, रिफाइनरी और बिजली संयंत्र हैं।

पश्चिमी तेहरान को इन दिनों गहरी धुंध ने अपनी चपेट में ले रखा है, जिसके कारण लोग परेशान हैं। एएफपी

एआइ के जरिये फेक न्यूज बनाने पर चीन ने लगाई रोक

बीजिंग, एएफपी: चीन ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) का प्रयोग करके फेक न्यूज बनाने वालों पर प्रतिबंध लगाते हुए इस संबंध में नए नियम जारी किए हैं। शुक्रवार को जारी किए गए नियमों में कहा गया है कि एआइ का प्रयोग करके फेक न्यूज के लिए ऑनलाइन वीडियो और आडियो बनाने, उसे वितरित करने और प्रसारित करने की अनुमति नहीं होगी। अगर कोई व्यक्ति इन नियमों के उल्लंघन का दोषी पाया जाता है तो उसे आपराधिक कृत्य का दोषी माना जाएगा। यह नियम एक जनवरी 2020 से प्रभावी होंगे।

नए नियमों में कहा गया है कि अगर कोई वीडियो या आडियो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या आभासी तकनीक के माध्यम से बनाया गया है तो इसके लिए स्पष्ट तौर पर चेतावनी जारी करनी होगी। बनाए गए नए नियमों में विशेष तौर पर 'डीपफेक' तकनीक के खतरों पर चिंता जताई गई है। चीन की साइबरस्पेस अथॉरिटी ने चेतावनी दी है कि 'डीपफेक' तकनीक से जहां सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न होने का खतरा बढ़ा है, वहीं देश की राजनीतिक स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है। 2016 के अमेरिकी चुनाव अभियान के दौरान बड़ी संख्या में ऑनलाइन फेक न्यूज के इस्तेमाल के बाद इसको लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। बता दें कि चीन में एक फेस स्वैपिंग एप 'जाओ' का प्रयोग होता है, जिसमें आप किसी अभिनेता के चेहरे पर अपना पसंदीदा चेहरा लगा सकते हैं।

क्या होता है डीपफेक

डीपफेक दो शब्दों के मेल से बनता है। 'डीप लर्निंग' और 'फेक'। डीप लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का एक हिस्सा है। डीपफेक 'ह्यूमन इमेज सिंथेसिस' नाम की तकनीक पर काम करता है। जैसे हम किसी भी चीज की फोटो कॉपी कर लेते हैं, वैसे ही ये तकनीक चलती-फिरती चीजों की कॉपी कर सकती है। यानी स्क्रीन पर एक इंसान को आप चलते-फिरते, बोलते देख सकते हैं, जो नकली होगा।

जॉनसन ने किया ऑस्ट्रेलिया की तर्ज पर वीजा नीति का वादा

लंदन, प्रेट्र : ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने ब्रेक्जिट के बाद एक जनवरी, 2021 तक ऑस्ट्रेलिया की तर्ज पर प्वाइंट आधारित वीजा नीति लाने का वादा किया है। इसके तहत अकुशल लोगों का ब्रिटेन में प्रवेश रुक जाएगा और अप्रवासियों की संख्या में कमी आएगी।

लंदन में आम चुनाव के प्रचार अभियान में जॉनसन ने मतदाताओं से 12 दिसंबर के मतदान में कंजरवेटिव पार्टी की बहुमत की सरकार बनाने का आह्वान किया ताकि 31 जनवरी, 2020 तक ब्रेक्जिट का काम पूरा किया जा सके और प्रस्ताव में सभी जरूरी बदलाव किए जा सकें। पार्टी ने ब्रेक्जिट के बाद कौशल आधारित ऐसी वीजा नीति का प्रस्ताव किया है जो सभी देशों के नागरिकों पर समान रूप से लागू होगी। इसमें भारतीय भी शामिल हैं।

जॉनसन ने कहा, 'हमारा पहला कदम क्रिसमस से पहले विदड्राल एग्रीमेंट बिल को वापस लेना और 31 जनवरी से पहले यूरोपीय यूनियन छोड़ना होगा। इसमें कोई किंतु-परंतु नहीं होगा, हम इसे करके ही रहेंगे।'

ऑस्ट्रेलिया में किस तरह से परिस्थितियों का फायदा उठाया जाता है, इसका पाक गेंदबाजों को अनुभव नहीं है।
— शोएब अख्तर, पूर्व पाकिस्तानी तेज गेंदबाज

गेल ने ट्रिपल क्लब में वार्नर का स्वागत किया

नई दिल्ली, आइएएनएस : वेस्टइंडीज के धुरंधर बल्लेबाज क्रिस गेल ने टेस्ट क्रिकेट में तिहरा शतक लगाने वाले ऑस्ट्रेलियाई सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर को बधाई दी है। वार्नर टेस्ट क्रिकेट में तिहरा शतक लगाने वाले सातवें ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज बन गए हैं। वार्नर ने पाकिस्तान के साथ यहां जारी दूसरे टेस्ट मैच में नाबाद 335 रन बनाए। गेल ने ट्विटर पर लिखा कि ट्रिपल क्लब में डेविड वार्नर का स्वागत।

ऑस्ट्रेलिया ने एडिलेड में दूसरे टेस्ट में पाकिस्तान पर कसा शिकंजा, कंगारू टीम ने 589 रन पर की पहली पारी घोषित

डे-नाइट टेस्ट में वार्नर का तिहरा शतक, स्मिथ ने तोड़ा रिकॉर्ड

एडिलेड, एएफपी: ऑस्ट्रेलिया ने यहां एडिलेड ओवल मैदान पर खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन पाकिस्तान की हालत खराब कर दी है। दिन का खेल खत्म होने तक पाकिस्तान ने अपने छह विकेट 96 रनों पर खो दिए हैं। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान टिम पेन ने ऐसे समय टीम की पारी घोषित की जब उनका एक खिलाड़ी इतिहास रचने के करीब बढ़ रहा था। पेन ने तीन विकेट पर 589 के कुल स्कोर पर पारी घोषित कर दी। उस समय सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर 335 रनों पर खेल रहे थे। वहीं स्टीव स्मिथ ने टेस्ट क्रिकेट में सबसे तेज 7000 रन बनाने का रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने 73 वर्ष पुराने रिकॉर्ड को तोड़ दिया है।

वार्नर जिस तरह से बल्लेबाजी कर रहे थे उससे लग रहा था कि वह आसानी से 400 का आंकड़ा छू लेंगे, लेकिन पेन ने उनसे यह मौका छीन लिया। ऑस्ट्रेलिया के विशाल स्कोर के लिहाज से पाकिस्तान अभी भी उससे 493 रन पीछे है। पाकिस्तानी बल्लेबाजी की धुरी बाबर आजम एक छोर पर 43 रन बनाकर खड़े हुए हैं। उनके साथ लेग स्पिनर यासिर शाह चार रन बनाकर नाबाद हैं।

स्टार्क ने हालत की पतली: पाकिस्तान के बल्लेबाज पहली पारी में मिशेल स्टार्क की गेंदों के सामने संघर्ष करते दिखे। स्टार्क ने सबसे पहले इमाम उल हक (2) को पवेलियन भेजा। कप्तान अजहर अली नौ के निजी स्कोर पर पैट कमिंस की गेंद पर स्टीव स्मिथ द्वारा लपके गए। दूसरे सलामी बल्लेबाज शान मसूद को जोश हेजलवुड (19) को पवेलियन भेजा। 38 रनों पर तीन विकेट गंवाने के बाद पाकिस्तान संकट में थी। बाबर ने एक छोर संभाला लेकिन दूसरे छोर से स्टार्क उन्हें निराश करते रहे। स्टार्क ने अशद शफीक (9), इफ्तिखार अहमद (10), मुहम्मद रिजवान (0) को आउट कर पाकिस्तान का स्कोर 89 रन पर छह विकेट कर दिया।

वार्नर का तिहरा प्रहार: इससे पहले, ऑस्ट्रेलिया ने दिन की शुरुआत एक विकेट के नुकसान पर 302 रनों के साथ की थी। वार्नर ने अपनी पारी को 166 रनों से आगे बढ़ाया और मार्नस लाबुशाने ने 126 रनों से। लाबुशाने 162 के निजी स्कोर पर शाहीन शाह अफरीदी की गेंद पर बोल्ड हो गए। लाबुशाने ने 238 गेंदों का सामना किया और 22 चौके मारे। स्टीव स्मिथ 64 गेंदों पर 32 रन बनाकर आउट हो गए। इस बीच वार्नर दूसरे छोर से पाकिस्तानी गेंदबाजों की खबर ले रहे थे। वह 300 रन पूरे कर चुके थे। उन्होंने यह आंकड़ा पहली बार छुआ था।

डे-नाइट टेस्ट में बनाया सर्वोच्च स्कोर

एडिलेड: बायें हाथ के बल्लेबाज वार्नर ने 418 गेंदों का सामना किया और 39 चौकों के अलावा एक छक्का लगाया। इसी के साथ वार्नर डे-नाइट टेस्ट में सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर बनाने वाले बल्लेबाज भी बन गए हैं। उन्होंने पाकिस्तान के मौजूदा कप्तान अजहर अली को इस मामले में पीछे किया है। अजहर अली ने 2016 में दुबई में वेस्टइंडीज के खिलाफ तिहरा शतक लगाया था। उस मैच में अजहर ने नाबाद 302 रनों की पारी खेली थी।

स्मिथ ने तोड़ा 73 वर्ष पुराना रिकॉर्ड

एडिलेड: ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान स्टीव स्मिथ ने दूसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन एक उपलब्धि अपने नाम कर ली। स्मिथ टेस्ट में सबसे कम पारियों में 7000 रन पूरे करने वाले बल्लेबाज बन गए। स्मिथ ने अपने 70वें टेस्ट मैच की 126वीं पारी में वॉली हेमंड का 73 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा। इंग्लैंड के इस पूर्व बल्लेबाज ने भारत के खिलाफ ओवल में साल 1946 में यह कीर्तिमान हासिल किया था। हेमंड ने 131 टेस्ट पारियों में 7000 रन पूरे किए थे।

टेस्ट में सबसे तेज 7000 रन

बल्लेबाज	टीम	कब	मैच	पारी
स्टीव स्मिथ	ऑस्ट्रेलिया	29 नवंबर 2019	70	126
वॉली हेमंड	इंग्लैंड	17 अगस्त 1946	80	131
वीरेंद्र सहवाग	भारत	3 अगस्त 2010	79	134
सचिन तेंदुलकर	भारत	3 नवंबर 2001	85	136
गैरी सोबर्स	वेस्टइंडीज	19 मार्च 1971	79	138
कुमार संगकारा	श्रीलंका	20 जुलाई 2009	83	138
विराट कोहली	भारत	10 अक्टूबर 2019	81	138

टेस्ट में सबसे तेज एक हजार रन पूरे करने वाले खिलाड़ी

आंकड़ा	खिलाड़ी	पारी
1000	हर्बर्ट सटक्लिफ	12
2000	डॉन ब्रैडमैन	22
3000	डॉन ब्रैडमैन	33
4000	डॉन ब्रैडमैन	48
5000	डॉन ब्रैडमैन	56
6000	डॉन ब्रैडमैन	68
7000	स्टीव स्मिथ	126
8000	कुमार संगकारा	152
9000	कुमार संगकारा	172
10000	लारा/सचिन/संगकारा	195

संक्षिप्त स्कोर बोर्ड

ऑस्ट्रेलिया (पहली पारी): 589/3 पारी घोषित (127 ओवर), डेविड वार्नर 335*, मार्नस लाबुशाने 162, स्टीव स्मिथ 36, शाहीन शाह अफरीदी 88/3,

पाकिस्तान (पहली पारी): 96/6 (35 ओवर), बाबर आजम 43*, शान मसूद 19, मिशेल स्टार्क 22/4

तिहरा शतक लगाने वाले सातवें ऑस्ट्रेलियाई

एडिलेड: इसी के साथ वार्नर टेस्ट क्रिकेट में तिहरा शतक लगाने वाले सातवें ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज बन गए हैं। वार्नर के अलावा टेस्ट मैचों में डॉन ब्रैडमैन (334, 304), आरबी सिंपसन (311), आरएम कूपर (307), मार्क टेलर (334 नाबाद), मैथ्यू हेडन (380), माइकल क्लार्क (329 नाबाद) ने तिहरे शतक लगाए हैं।

कप्तान विराट कोहली काफी पीछे

एडिलेड: कप्तान विराट कोहली ने यह मुकाम पिछले महीने ही हासिल किया था लेकिन उन्होंने इसके लिए 138 पारियां खेलीं। विराट ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पुणे में खेले गए टेस्ट मैच में यह उपलब्धि हासिल की थी। साल 2011 में अपना पहला टेस्ट मैच खेलने वाले विराट का वह 81वां मैच था। स्मिथ ने दिग्गज डॉन ब्रैडमैन को भी पीछे छोड़ दिया। ब्रैडमैन के टेस्ट करियर में 6996 रन हैं, जबकि स्मिथ ने 7000 रन का आंकड़ा पार कर लिया है। हालांकि ब्रैडमैन ने केवल 52 टेस्ट मैचों में 99.94 की औसत से ही 6996 रन बनाए थे।

50 वें बल्लेबाज बने स्मिथ टेस्ट में 7000 रन बनाने वाले

पाकिस्तान के खिलाफ एडिलेड टेस्ट में तिहरा शतक जड़ने के बाद जश्न मनाते ऑस्ट्रेलिया के डेविड वार्नर • एपी

335 नाबाद रन बनाकर वार्नर एडिलेड में सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर बनाने वाले खिलाड़ी बने। उन्होंने 299 रन बनाने वाले डॉन ब्रैडमैन को पछाड़ा। ऑस्ट्रेलिया की ओर से सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर बनाने का रिकॉर्ड मैथ्यू हेडन (380) के नाम है

02 खिलाड़ियों ने डे-नाइट टेस्ट में तिहरे शतक लगाए हैं। वार्नर से पहले यह कारनामा पाकिस्तान के बल्लेबाज अजहर अली ने वेस्टइंडीज के खिलाफ किया था

2012 में ऑस्ट्रेलिया की ओर से पिछली बार तिहरा शतक जड़ा गया था, जो माइकल क्लार्क ने लगाया था

300 से ज्यादा रन की पारी पाकिस्तान के खिलाफ खेलने वाले चौथे बल्लेबाज बने वार्नर। इससे पहले वीरेंद्र सहवाग ने मुल्तान में तिहरा शतक लगाया था

21 वीं बार किसी मैदान पर सबसे ज्यादा 200 या उससे ज्यादा रनों की पारी खेली गई है। इससे पहले इंग्लैंड का ओवल (20) और एडिलेड (20) के साथ बराबरी पर थे

इंग्लिश टीम के खिलाफ न्यूजीलैंड की पकड़ मजबूत

हैमिल्टन, एएफपी: टॉम लाथम (105) के शतक के बाद बीजे वाटलिंग (55) और डेरिल मिशेल (73) के अर्धशतकों की मदद से न्यूजीलैंड ने यहां सेडन पार्क मैदान पर खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन शनिवार को अपनी पहली पारी में 375 रन का अच्छा स्कोर बना लिया। इंग्लैंड ने इसके जवाब में दिन का खेल समाप्त होने तक दो विकेट पर 39 रन बना लिए हैं। इंग्लैंड अभी न्यूजीलैंड के स्कोर से 336 रन पीछे हैं। दूसरे दिन का खेल खत्म होने तक रोरी बर्न्स 51 गेंदों पर चार चौकों की मदद से 24 और कप्तान जो रूट 29 गेंदों पर एक चौके की मदद से छह रन बनाकर नाबाद लौटे।

उनके अलावा डोमिनिक सिब्ले और जो डेनली ने चार-चार रन बनाए। न्यूजीलैंड के लिए टिम साउदी और मैट हेनरी को अब तक एक-एक सफलता मिली है। इससे पहले, मेजबान न्यूजीलैंड ने अपने पहले दिन के स्कोर तीन विकेट के नुकसान पर 173 रनों से आगे खेलना शुरू किया। दिन का खेल शुरू होने के कुछ देर बाद ही लाथम आउट हो गए। उन्होंने 172 गेंदों पर 16 चौके लगाए।

लाथम के आउट होने के बाद वाटलिंग और डेरिल ने छठे विकेट के लिए 124 रनों की साझेदारी करके कीवी टीम को 300 के करीब पहुंचाया।

दूसरा टेस्ट

- मेजबानों ने पहली पारी में बनाए 375 रन, मिशेल ने जड़ा पचासा
- मेहमान टीम ने 39 रनों के अंदर गंवाए दो अहम विकेट

वाटलिंग ने 192 गेंदों पर सात चौके और डेरिल ने 159 गेंदों पर आठ चौके और एक छक्का लगाया। इंग्लैंड की ओर से स्टुअर्ट ब्रॉड ने चार, क्रिस वोक्स ने तीन, सैम कुर्रन ने दो और जोफ्रा आर्चर ने एक विकेट हासिल किए।

इंग्लैंड के स्पिनर जैक लीच अस्पताल में भर्ती: इंग्लैंड के स्पिनर जैक लीच को पेट में गैस की समस्या के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया है। लीच न्यूजीलैंड के खिलाफ यहां खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच के लिए इंग्लैंड की टीम का हिस्सा थे और लेकिन उन्हें अंतिम एकादश से बाहर रखा गया था। लीच हालांकि शनिवार को खेल के पहले सत्र के आखिर में बीमार हो गए थे। इंग्लैंड के मेडिकल स्टाफ ने लीच को अस्पताल ले जाने का फैसला किया और उम्मीद है कि वह रात भर वहीं रहेंगे। तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड ने लीच की हालत के बारे में कहा कि हमें उनकी देखभाल के लिए अच्छा मेडिकल स्टाफ मिला है।

भारत के आगे पाकिस्तान चारों खाने चित

4-0 की एकतरफा जीत से भारत ने 2020 के क्वालीफायर में बनाई जगह पेस ने अपने डेविस कप रिकॉर्ड को बेहतर किया

नूर सुल्तान, प्रेट्र: डेविस कप में भारतीय टेनिस टीम ने अपने शानदार लय को आगे बढ़ाते हुए शनिवार को शुरुआती दोनों मुकाबले आसानी से जीतकर पाकिस्तान को 4-0 से हराया और 2020 के क्वालीफायर में जगह बनाई। इस दौरान भारत के अनुभवी टेनिस स्टार लिएंडर पेस ने अपने डेविस कप रिकॉर्ड को बेहतर करते हुए 44वीं डबल्स की जीत हासिल की। पेस और जीवन नेदुचेझियन की भारतीय जोड़ी ने शनिवार को पाकिस्तान के मुहम्मद शोएब और हुफैजा अब्दुल रहमान की जोड़ी को महज 53 मिनट चले मुकाबले में 6-1, 6-3 से हरा दिया।

पिछले साल बनाया था रिकॉर्ड: पिछले साल अपना 43वां डबल्स मैच जीतकर डेविस कप के इतिहास में सफलतम खिलाड़ी बने पेस ने इटली के निकोला पीटरेंगेली को पछाड़ा था। पेस ने 56वें मुकाबले में 43वीं जीत दर्ज की थी, जबकि निकोला को 42 मुकाबले जीतने में 66 मैच लगे थे। पेस का यह रिकॉर्ड टूटना हाल के समय में टूटना संभव नजर नहीं आ रहा क्योंकि कोई भी मौजूदा डबल्स खिलाड़ी शीर्ष 10 की सूची में नहीं है। बेलारूस के मैक्स मिर्नेई तीसरे नंबर पर हैं जिनके नाम 36 जीत दर्ज है लेकिन वह 2018 से टूर में नहीं खेल रहे हैं।

नागल ने यूसुफ को हराया: उधर शनिवार को रिवर्स सिंगल्स मुकाबले में सुमित नागल ने यूसुफ खलील को 6-1, 6-0 से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की। दोनों टीमों ने औपचारिक हो चुका पांचवां मुकाबला नहीं खेलने का फैसला किया। पहले तीन मैच जीतने पर भी टीम के लिए चौथा मैच खेलना जरूरी था लेकिन नियम केवल पांचवां मैच छोड़ने की इजाजत देते हैं।

भारत की क्रोएशिया से भिड़ंत: अब क्वालीफायर्स में भारत का सामना क्रोएशिया से होगा और यह मुकाबला छह से सात मार्च को खेला जाएगा। डेविस कप फाइनल्स में 12 क्वालीफाइंग स्थानों के लिए 24 टीमें आपस में भिड़ेंगी। वहीं हारने वाली 12 टीमें सितंबर 2020 में विश्व ग्रुप एक में खेलेंगी। विजेता टीमें फाइनल्स में खेलेंगी जिसके लिए कनाडा, ब्रिटेन, रूस, स्पेन, फ्रांस और सर्बिया पहले ही क्वालीफाई कर चुके हैं।

नूर-सुल्तान में पाकिस्तान को शिकस्त देने के बाद भारतीय डेविस कप टीम • प्रेट्र

डेविस कप

> यह मेरी 44वीं जीत थी लेकिन पहली जीत की तरह लग रही है। मेरी सभी जीत खास हैं। जीवन नेदुचेझियन के साथ उसके पहले डेविस कप मुकाबले में खेलना शानदार रहा। शुरू से उसने उम्दा प्रदर्शन किया। ये लड़के मुझे युवा, तरोताजा और उत्साहित बनाए रखते हैं। मैं उनके साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर पाता हूं।
> **लिएंडर पेस,** भारतीय टेनिस खिलाड़ी

2014 के बाद पहली बार डेविस कप में भारत ने सारे मैच जीते हैं। पांच साल पहले इंदौर में भारत ने चीनी ताइपे को 5-0 से हराया था

57 मैचों में से 44 डबल्स मुकाबले डेविस कप में लिएंडर पेस ने जीते हैं। उन्होंने पिछले साल इटली के निकोला पीटरेंगेली के सर्वाधिक 42 डबल्स मुकाबले जीतने का रिकॉर्ड तोड़ा था

आसान रहे मुकाबले: तीसरे मैच में हुफैजा और शोएब ने पहले गेम में सर्विस बरकरार रखी, लेकिन भारतीय जोड़ी ने तीसरे गेम में उनकी सर्विस तोड़कर 3-1 से बढ़त बना ली। पांचवें गेम में फिर उनकी सर्विस तोड़कर पेस और जीवन ने दबाव बनाया। जीवन ने 30-15 पर डबल फाल्ट किया, लेकिन पाकिस्तानी खिलाड़ी दबाव नहीं बना सके और भारत ने बढ़त बना ली। पहला सेट जीतने केबाद भारतीयों ने दूसरा सेट भी आसानी से जीत लिया। पहले दिन रामकुमार रामनाथन और सुमित नागल ने अपने-अपने सिंगल्स मुकाबले बेहद आसानी से जीते थे। पाकिस्तान की टीम भारत के खिलाफ चारों मुकाबलों में महज सात गेम जीते।

राजपाल ने सेना को जीत की समर्पित: भारतीय टीम के गैर खिलाड़ी कप्तान रोहित राजपाल ने इस जीत को भारतीय सेना को समर्पित किया। राजपाल ने कहा कि हमें इस जीत को सशस्त्र बलों को समर्पित करना चाहिए। खासतौर से उन परिवार वालों को यह जीत समर्पित है जिन्होंने हमारे परिवार की रक्षा में सीमा पर अपने चहेतों की जान गंवाई। इसलिए हम इस जीत को भारतीय सेना को समर्पित करना चाहते हैं।

टोक्यो ओलंपिक : नया राष्ट्रीय स्टेडियम तैयार

टोक्यो, एएफपी : जापान में अगले साल होने वाले टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक गेम्स के लिए मुख्य स्टेडियम का पुनर्निर्माण पूरा हो गया है। इस मुख्य स्टेडियम को 'नया राष्ट्रीय स्टेडियम नाम' दिया गया है। जापान खेल परिषद के अनुसार, यह स्टेडियम आगामी ओलंपिक के लिए मुख्य आयोजन स्थल में से एक होगा। आयोजन समिति और टोक्यो सरकार को सौंपने के लिए शनिवार को इसकी आवश्यक प्रक्रियाएं भी पूरी कर ली गईं। टोक्यो ओलंपिक गेम्स का आयोजन अगले साल 24 जुलाई से नौ अगस्त तक जबकि पैरालंपिक गेम्स 25 अगस्त से छह सितंबर तक होंगे।

1958
में यह राष्ट्रीय स्टेडियम खुला था और फिर इसे 2014 में बंद कर दिया गया। 2016 से इस स्टेडियम को फिर से तैयार किया गया है

1958
में इस स्टेडियम में पहले बड़े टूर्नामेंट एशियन गेम्स का आयोजन हुआ था

1964
में इस स्टेडियम ने पहली बार ओलंपिक की मेजबानी की थी

60000
लोगों के बैठने की क्षमता नए राष्ट्रीय स्टेडियम में है और जापान के वास्तुकार केंगो कुमार ने इसका डिजाइन तैयार किया है

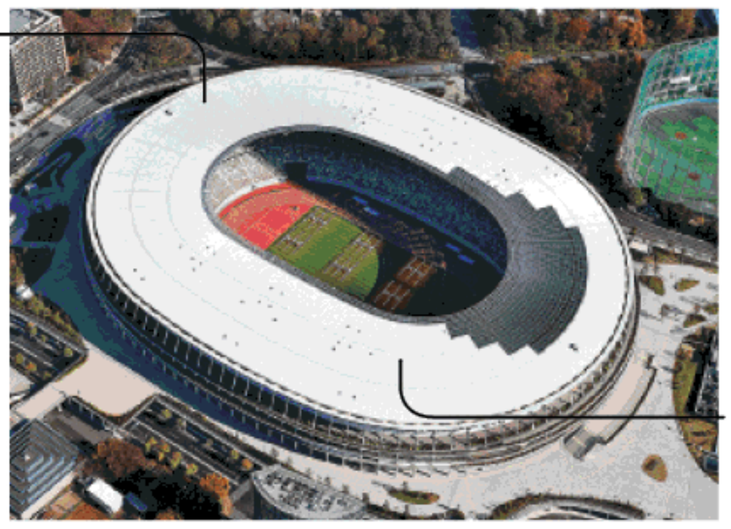

टोक्यो में होने वाले 2020 ओलंपिक और पैरालंपिक गेम्स के लिए तैयार हुआ नया राष्ट्रीय स्टेडियम • एपी

1.4 बिलियन डॉलर (करीब एक खरब रुपये) की लागत इस स्टेडियम के पुनर्निमाण में लगी है

2020 टोक्यो ओलंपिक का उद्घाटन और समापन समारोह इसी स्टेडियम में होगा

22 जुलाई से फुटबॉल और 31 जुलाई से एथलेटिक्स के मैच यहां आयोजित किए जाएंगे

21 दिसंबर को स्टेडियम का आधिकारिक उद्घाटन होगा

2000 घन मीटर मीटर देवदार की लकड़ी स्टेडियम के लिए जापान के 47 प्रांतों ली गई

40 डिग्री सेल्सियस तक तापमान गेम्स के दौरान रह सकता है

युवा चेहरों के सहारे उत्तर प्रदेश रणजी टीम

निखिल शर्मा • नई दिल्ली

पिछले दो सत्रों में रणजी खिताब जीतने वाली विदर्भ की टीम के लिए सफलता तक का सफर आसान नहीं रहा था। टीम के लिए सबसे ज्यादा काम मुंबई के अनुभवी बल्लेबाज वसीम जाफर और कोच चंद्रकांत पंडित ने किया। इसके उलट उत्तर प्रदेश टीम नए नामों के सहारे रणजी खिताब जीतने के लिए आगामी सत्र में उतरेगी। उत्तर प्रदेश का पहला मैच मेरठ में नौ दिसंबर को रेलवे से होगा।

उप्र टीम में सुरेश रैना नहीं है। बताया जा रहा है कि वह अभी भी अनफिट हैं। वहीं भुवनेश्वर और कुलदीप टीम इंडिया के साथ व्यस्त होने की वजह से प्रदेश की टीम का हिस्सा नहीं है। अब सवाल है कि जहां अन्य राज्यों के पास अनुभवी खिलाड़ियों की फौज है, तो वहीं कई अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी पैदा करने वाली उप्र की टीम युवाओं के सहारे है।

युवाओं से उम्मीद : मौजूदा टीम का कप्तान प्रियम गर्ग को बनाया गया है जो हाल ही में अफगानिस्तान के खिलाफ खत्म हुई पांच मैचों की सीरीज के शुरुआती तीन मैचों में कप्तान थे। पूर्व कप्तान अक्षदीप नाथ भी इस टीम में हैं। वह आइपीएल के साथ अंडर-19 विश्व कप खेल चुके हैं।

दिग्गजों ने साथ छोड़ा: दरअसल, उत्तर प्रदेश के पास कभी मुहम्मद कैफ, सुरेश रैना, पीयूष चावला, प्रवीण कुमार, आरपी सिंह जैसे अनुभवी खिलाड़ी थे। इन सभी खिलाड़ियों की अगुआई में उत्तर प्रदेश ने रणजी इतिहास में स्वर्णिम दौर देखा। 2005-06 का खिताब जीतने के बाद टीम 2007-08 और 2008-09 में उप विजेता भी रही। 2013 के बाद सब बदलता चला गया जब कैफ ने उत्तर प्रदेश को छोड़ छत्तीसगढ़, पीयूष चावला और आरपी सिंह ने गुजरात का दामन थाम लिया।

यूपीसीए टीम: प्रियम गर्ग (कप्तान), अलमास शौकत, आर्यन जुयाल, माधव कौशिक, मुहम्मद सैफ, अक्शदीप नाथ, रिंकू सिंह, उपेंद्र यादव, शानू सैनी, अंकित राजपूत, शिवम मावी, सौरभ कुमार, मोहसिन खान, यश दयाल, जीशान अंसारी। अभ्यास गेंदबाज : इसरार खान, योगिंदर डोयला।

मुश्किल

- प्रियम गर्ग करेंगे उत्तर प्रदेश की रणजी टीम की कप्तानी
- रैना का नाम नहीं, कुलदीप और भुवनेश्वर भारतीय टीम का हिस्सा

अनुष्का व शास्त्री के बचाव में आए कोहली

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: भारतीय कप्तान विराट कोहली ने पूर्व खिलाड़ी फारूख इंजीनियर के दावे पर चुप्पी तोड़ते हुए शनिवार को कहा कि उनकी पत्नी और अभिनेत्री अनुष्का शर्मा आसान निशाना बनती हैं। इंजीनियर ने हाल में पांच सदस्यीय चयन पैनल का उपहास करते हुए कहा था कि उन्होंने इनमें से एक को अनुष्का को इंग्लैंड में विश्व कप के दौरान चाय परोसते हुए देखा था।

कोहली ने एक कार्यक्रम में कहा कि अनुष्का का नाम इसमें घसीटना सही नहीं था। वह विश्व कप में श्रीलंका के खिलाफ एक विश्व कप मैच के लिए आईं थीं। फैमिली बॉक्स और चयनकर्ताओं के बॉक्स अलग-अलग थे। उस समय बॉक्स में कोई चयनकर्ता नहीं था। वह दो दोस्तों के साथ आईं। जैसा कि मैंने कहा कि वह मशहूर हैं और जब लोग उनका नाम लेते हैं तो सभी का ध्यान इस पर जाता है।

• विकेटकीपर फारूख ने विवाद में घसीटा था अनुष्का का नाम

कोहली बोले, कोच शास्त्री को एजेंडे के तहत किया जा रहा है ट्रोल: कोहली ने कोच रवि शास्त्री को लगातार ट्रोल किए जाने को एजेंडे से प्रभावित बताया और कहा कि भारतीय कोच इस धारणा से सबसे कम प्रभावित हैं कि वह कप्तान की हां में हां मिलाते हैं। कोहली ने कहा कि शास्त्री ने 'साहस' के साथ 'बिना हेलमेट' के तेज गेंदबाजों का सामना किया और सलामी बल्लेबाज के रूप में 41 की औसत से रन बनाए जो मौजूदा कोच के आलोचकों को कड़ा जवाब है। कोहली ने एक कार्यक्रम में कहा कि मुझे लगता है कि इनमें से अधिकांश चीजें एजेंडे से प्रभावित हैं और मुझे नहीं पता कि कोई ऐसा क्यों और किस लिए कर रहा है। उन्होंने कहा कि भाग्य से रवि भाई ऐसे व्यक्ति हैं जो इन चीजों की बिलकुल परवाह नहीं करते। बायें हाथ के स्पिनर के रूप में आगाज करने वाले शास्त्री ने बाद में भारत के लिए पारी का आगाज भी किया और 1985 विश्व सीरीज क्रिकेट में उन्हें 'चैंपियन ऑफ चैंपियंस' का प्रतिष्ठित पुरस्कार भी मिला।

बीसीसीआइ एजीएम आज बैठक में लोढ़ा सुधारों की ढिलाई से पूर्व कप्तान को होगा फायदा, आइसीसी में बोर्ड का प्रतिनिधि नियुक्त करने पर भी चर्चा होगी

सौरव गांगुली के कार्यकाल को बढ़ाने पर रहेगी नजर

मुंबई, प्रेट्र: सौरव गांगुली की अध्यक्षता में बीसीसीआइ रविवार को जब यहां अपनी पहली वार्षिक आम बैठक (एजीएम) का आयोजन करेगा तो इसमें सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्वीकृत कुछ सुधारवादी कदमों में ढिलाई बरतने, क्रिकेट सलाहकार समिति जैसी समितियों का गठन और आइसीसी में बोर्ड का प्रतिनिधि नियुक्त करने पर चर्चा होगी।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त प्रशासकों की समिति (सीओए) ने 33 महीने तक बीसीसीआइ का संचालन किया जिसके बाद पिछले महीने गांगुली की अगुआई में नए पदाधिकारियों ने प्रभार संभाला। बीसीसीआइ अगर लोढ़ा समिति के सुधारवादी कदमों में ढिलाई देता है तो गांगुली का नौ महीने का मौजूदा कार्यकाल बढ़ सकता है। लोढ़ा समिति के सुधारवादी कदमों को सुप्रीम कोर्ट से स्वीकृति मिली हुई है।

शाह का भी बढ़ेगा कार्यकाल: एजीएम के लिए जारी एजेंडे में बीसीसीआइ के मौजूदा संविधान में अहम बदलाव का प्रस्ताव रखा गया है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्वीकृत मौजूदा संविधान के अनुसार, अगर कोई पदाधिकारी बीसीसीआइ या राज्य संघ में तीन साल के दो कार्यकाल पूरा कर लेता है तो उसे तीन साल का अनिवार्य ब्रेक लेना होगा। मौजूदा पदाधिकारी चाहते हैं कि यह अनिवार्य ब्रेक बोर्ड और राज्य संघ में दो कार्यकाल अलग-अलग पूरे करने पर हो। अगर यह प्रस्ताव तीन-चौथाई बहुमत से पारित होता है तो गांगुली और सचिव जय शाह का कार्यकाल बढ़ जाएगा। अब प्रस्ताव दिया गया है भविष्य में एजीएम में तीन-चौथाई बहुमत ही संविधान में किसी संशोधन को स्वीकृत देने के लिए पर्याप्त होगा।

बैठक के अन्य पहलू

- एजीएम में पिछले तीन वित्तीय वर्ष के खातों को भी स्वीकृति दी जाएगी
- नए लोकपाल और आचरण अधिकारी की भी नियुक्ति की जाएगी
- एजीएम में हितों के टकराव के विवादास्पद मुद्दे पर भी चर्चा होने की उम्मीद है
- बीसीसीआइ के पूर्व अध्यक्ष एन. श्रीनिवासन की बेटी रूपा एजीएम में हिस्सा ले सकती हैं
- डीडीसीए के पूर्व अध्यक्ष रजत शर्मा की जगह सचिव विनोद तिहारा प्रतिनिधित्व करेंगे

बीसीसीआइ अध्यक्ष सौरव गांगुली • फाइल फोटो, प्रेट्र

जौहरी के मी-टू मुद्दे को उठाया जाएगा

मुंबई: बीसीसीआइ एजीएम में मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) राहुल जौहरी पर लगे यौन शोषण आरोप और महाप्रबंधक (क्रिकेट संचालन) सबा करीम के बोर्ड के स्कोरिंग ऐप संभालने वाले जैसे मुद्दों पर भी चर्चा हो सकती है। मी-टू मूवमेंट के दौरान जौहरी पर कई महिलाओं ने आरोप लगाए थे जिसकी जांच भी हुई थी लेकिन अब बीसीसीआइ के अधिकारी चाहते हैं कि उस रिपोर्ट को सबके सामने लाया जाए। करीम के मार्गदर्शन में स्कोरिंग ऐप संचालित होता है। बीसीसीआइ के अधिकारियों को इस ऐप के डिजाइन में बदलाव समझ में नहीं आया है और इससे कई तरह की गलत जानकारी जा रही है। कुल मिलाकर एक बार फिर जौहरी और सबा बोर्ड के निशाने पर होंगे।

टी-20 ब्लास्ट के तीसरे सत्र में ससेक्स के लिए खेलेंगे राशिद

लंदन, आइएएनएस : इंग्लैंड के क्लब ससेक्स ने टी-20 ब्लास्ट के लिए अफगानिस्तान के लेग स्पिनर राशिद खान को तीसरे साल अपनी टीम में शामिल किया है। राशिद ने कहा कि अगले साल ब्लास्ट के लिए लौटने पर मैं बेहद खुश हूं। ससेक्स मेरे लिए दूसरा घर है और मैं अपनी टीम के साथियों के साथ जुड़ने का इंतजार नहीं कर सकता। ससेक्स ने राशिद के अलावा ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड को दूसरे विदेशी खिलाड़ी के तौर पर चुना है।

टेस्ट चैंपियनशिप के अंत तक हमारा लक्ष्य रैंकिंग में चौथे या पांचवें स्थान पर आना है। –जेसन होल्डर, कप्तान वेस्टइंडीज टीम

न्यूज गैलरी

दक्षिण एशियाई खेलों में भारत के ध्वजवाहक होंगे तूर

नई दिल्ली : गोला फेंक के स्टार खिलाड़ी तेजिंदर पाल सिंह तूर नेपाल की राजधानी काठमांडू में रविवार को होने वाले दक्षिण एशियाई खेलों (सैग) के उद्घाटन समारोह में भारत के ध्वजवाहक होंगे। 25 वर्षीय तूर एशियन गेम्स के गत चैंपियन हैं। भारतीय ओलंपिक संघ के महासचिव राजीव मेहता ने तूर को भेजे पत्र में कहा कि आइओए आपको 13वें दक्षिण एशियाई खेल 2019 के उद्घाटन समारोह में भारतीय दल का ध्वजवाहक बनाकर सम्मानित महसूस कर रहा है। इन खेलो का आयोजन एक से 10 दिसंबर तक किया जाएगा। इसके अलावा तूर और दो बार की एशियाई 1500 मीटर चैंपियन पीयू चित्रा 75 सदस्यीय भारतीय एथलेटिक्स टीम की अगुआई करेंगे। (प्रेट्र)

जी साथियान टेबल टेनिस विश्व कप से बाहर

चेंगदू (चीन) : भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ी जी साथियान का सफर आइटीटीएफ पुरुष विश्व कप में खत्म हो गया जब वह शनिवार को प्री-क्वार्टर फाइनल में हारकर टूर्नामेंट से बाहर हो गए। विश्व के 30वें नंबर के खिलाड़ी साथियान विश्व कप में पदार्पण कर रहे हैं और वह टिमो बॉल से 1-4 (11-7, 8-11, 5-11, 9-11, 8-11) से हार गए। (प्रेट्र)

जेके टायर फेस्टिवल ऑफ स्पीड में दिखा रोमांच

ग्रेटर नोएडा : बुद्ध इंटर नेशनल सर्किट में जेके टायर फेस्टिवल ऑफ स्पीड का आयोजन किया गया। पहले दिन एक्स-वन (एक हजार सीसी की मोटरसाइकिल) व फॉर्मूला-4 की लीग रेस का आयोजन किया गया। इस दौरान तीन सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से बाइक व कार ने फर्राटा भरा। सुपर बाइक एक हजार सीसी में भूमिका लालवानी व सुजुकी जिक्सर कप में मुजम्मिल अली ने जीत दर्ज की। रविवार को फाइनल मुकाबले का आयोजन किया जाएगा। साथ ही कार व मोटर साइकिल स्टंट भी देखने को मिलेंगे। दो दिन तक चलने वाली प्रतियोगिता के पहले दिन लीग चरण का आयोजन किया गया। इसमें सबसे पहले जेके एलजीबी फार्मूला-4 रेस का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता में दिलजीत ने सभी को पीछे छोड़ दिया। दूसरे नंबर पर रघु रंगासामी व तीसरे पर अश्विन दत्ता रहे। रविवार को होने वाले फाइनल मुकाबले में तीनों हिस्सा लेंगे। जेके टायर सुपर बाइक लीग रेस-3 प्रतियोगिता में सैय्यद मुजम्मिल अली पहले स्थान पर रहे। वहीं, संजीव ने दूसरा व अमूल अंगदी ने तीसरा स्थान हासिल किया। (जासं)

न्यूकैसल ने मैनचेस्टर सिटी को बराबरी पर रोका

फुटबॉल डायरी ▸ ईपीएल के मौजूदा चैंपियन को न्यूकैसल युनाइटेड से खेलना पड़ा 2-2 से ड्रॉ

निर्धारित समय से दो मिनट पहले शेल्वी ने दागा बराबरी का गोल

न्यूकैसल, एएफपी : मौजूदा चैंपियन मैनचेस्टर सिटी को दो बार बढ़त लेने के बावजूद इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) में शनिवार को न्यूकैसल युनाइटेड के खिलाफ 2-2 से ड्रॉ खेलने पर मजबूर होना पड़ा। इस ड्रॉ मुकाबले की वजह से सिटी की खिताबी जीत की उम्मीदों को झटका लगा।

ईपीएल में शनिवार को खेले गए इस मुकाबले में रहीम स्टर्लिंग (22वें मिनट) की गोल की बदौलत सिटी ने शुरुआती बढ़त बनाई लेकिन तीन मिनट बाद ही जेट्रो विलेंस ने गोल करके न्यूकैसल को बराबरी दिलाई। इसके बाद खेल के 82वें मिनट में केविन डि ब्रूने की गोल की बदौलत फिर से सिटी ने बढ़त हासिल की लेकिन निर्धारित समय से दो मिनट पहले जोंजो शेल्वी ने फ्री किक पर गोल करके अपनी टीम को बराबरी दिलाई। इस मुकाबले में एकबार फिर सिटी के डिफेंस की कलई खोल दी। सिटी अंक तालिका में 14 मुकाबलों के बाद 29 अंक लेकर दूसरे स्थान पर है लेकिन शीर्ष पर काबिज लिवरपूल से वह अंकों के मामले में काफी पीछे है। सिटी को इस मुकाबले में अपने स्टार स्ट्राइकर सर्जियो अग्यूरो की कमी खली जो चोट की वजह से कुछ सप्ताह नहीं खेल पाएंगे।

2021 के बाद भी सिटी के साथ रहना चाहते हैं गॉर्डियोला

मैनचेस्टर : मैनेजर पेप गॉर्डियोला 2021 में समाप्त हो रहे अपने करार बाद भी मैनचेस्टर सिटी के साथ रहना चाहते हैं। सिटी में आगे भी बने रहने के सवाल पर गॉर्डियोला ने कहा कि मैंने इस पर अपना फैसला खुला रखा है। इस क्लब के साथ काम करने में मुझे कोई परेशानी नहीं है। हालांकि यह नतीजों पर निर्भर करेगा। गॉर्डियोला 2016 में जर्मन क्लब बायर्न म्यूनिख को छोड़कर सिटी से जुड़े थे। उधर गॉर्डियोला ने कहा है कि उन्हें अपने सहायक मैनेजर और नजदीकी दोस्त मिकेल अर्टेटा के दूसरे जगह जाने से कोई परेशानी नहीं है और वह नौकरी के लिए दूसरे विकल्प तलाशने के लिए स्वतंत्र हैं। रिपोर्टों के मुताबिक हाल ही में खाली पड़े आर्सेनल और एवर्टन के मैनेजर को लेकर अर्टेटा नाम सामने आ रहा है।

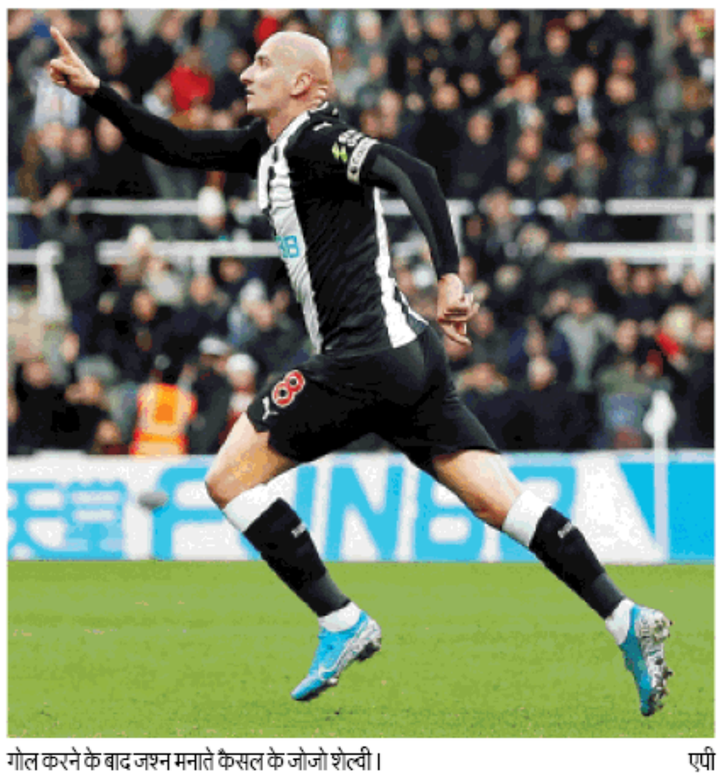

गोल करने के बाद जश्न मनाते कैसल के जोजो शेल्वी। एपी

इमेरी का भावुक संदेश

लंदन : महज 18 महीने के अंदर इंग्लिश क्लब आर्सेनल के मैनेजर के पद से हटाए गए उनाई इमेरी ने संदेश लिखा। उन्होंने लंदन के इस दिग्गज क्लब के साथ मैनेजर के तौर पर जुड़ना सम्मान की बात बताया। इमेरी ने कहा कि यह करीब डेढ़ साल का समय भावनाओं से भरा रहा जिसमें कुछ अच्छे और कुछ खराब समय थे। मैंने हर दिन खुद को इन खिलाड़ियों के साथ काम करने के लिए सौभाग्यशाली समझा।

गोलरहित रहा आइ-लीग का उद्घाटन मैच

आइजल : आइ-लीग के 13वें संस्करण में आइजल एफसी और मोहन बागान के बीच खेला गया सत्र का उद्घाटन मुकाबला गोलरहित (0-0) रहा। दो पूर्व चैंपियनों के बीच आइजल के राजीव गांधी स्टेडियम में शनिवार को हुई इस भिड़ंत में दोनों टीमें तमाम कोशिशों के बावजूद गोल नहीं कर सकीं। हालांकि इस मुकाबले में दोनों टीमों को गोल करने के कई मौके मिले।

शाल्के की यूनियन बर्लिन पर रोचक जीत

बर्लिन : सुआत सेरडर द्वारा आखिरी लम्हों में लगाए गए गोल की बदौलत जर्मन फुटबॉल लीग बुंडिशलीगा में शाल्के ने यूनियन बर्लिन पर 2-1 की रोचक जीत हासिल की। इस जीत के साथ ही डेविड वेगनर की टीम बुंडिशलीगा की अंक तालिका में संयुक्त रूप से शीर्ष पर पहुंच गई। शाल्के ने सत्र में सातवीं जीत के साथ अपने अंकों को बोरुसिया मोइंचेंगलाडबाक के कुल 25 के बराबर पहुंचा दिया लेकिन गोल अंतर की वजह से उसे दूसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। पिछले पांच मुकाबलों में से चार जीतने वाली यूनियन बर्लिन की टीम खेल के 23वें मिनट में ही पिछड़ गई। शाल्के के बेनितो रमन ने गोल करके अपनी टीम को बढ़त दिलाई। 36वें मिनट में मार्कस इंगवार्स्टेन ने पेनाल्टी किक के जरिये गोल करके यूनियन बर्लिन को बराबरी दिलाई लेकिन निर्धारित समय से चार मिनट पहले सेरडर ने सत्र का अपना पांचवां गोल करके शाल्के को जीत दिलाई।

भारतीय अंडर-19 टीम का सीरीज पर कब्जा

खेल संवाददाता, लखनऊ : शानदार गेंदबाजी और सूझबूझ भरी बल्लेबाजी की बदौलत अफगानिस्तान ने यहां अंडर-19 वनडे सीरीज के आखिरी मुकाबले में भारत को दो विकेट से हरा दिया। हालांकि, इसके बावजूद टीम इंडिया ने सीरीज पर 3-2 से कब्जा जमाया।

लखनऊ के अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में शनिवार को खेले गए मुकाबले में भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया, लेकिन शीर्ष क्रम के फेल होने से पूरी टीम 49.3 ओवर में सिर्फ 157 रनों पर आउट हो गई। जवाब में अफगानिस्तान ने 45.3 ओवर में आठ विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। भारत की शुरुआत अच्छी नहीं रही और महज 63 रन के स्कोर पर उसकी आधी टीम पवेलियन लौट गई। मध्य क्रम में विक्रांत भदौरिया ने सबसे ज्यादा 29 रनों का योगदान दिया। जबकि ऋषभ बंसल ने 14 और सीटीएल रक्षण ने 15 रन बनाए। अफगानिस्तान की तरफ से नूर अहमद ने 39 रन देकर तीन विकेट लिए। इसके अलावा शफीक उल्ला गफ्फारी और आबिद मुहम्मदी को दो-दो विकेट मिले। छोटे लक्ष्य का पीछा करने उतरी अफगान टीम की भी शुरुआत खराब रही।

दोनों ओपनरों के असफल रहने के बाद इमरान मीर (31) और आसिफ मुसाजई (42) ने पारी को संभाला और तीसरे विकेट के लिए महत्वपूर्ण 49 रन जोड़े। हालांकि, इसके बाद अफगानिस्तान के सात विकेट सिर्फ 106 रन पर गिर गए। अब्दुल रहमान रहमानी (17) और गफ्फारी (25) ने छोटी मगर उपयोगी पारी खेलकर टीम को जीत दिलाई।

विनेश और साक्षी ने जीते स्वर्ण

भारतीय महिला पहलवान साक्षी और विनेश। फाइल फोटो, प्रेट्र

जागरण संवाददाता, जालंधर : टोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुकीं महिला पहलवान विनेश फोगाट और ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता साक्षी मलिक ने शनिवार को यहां पीएपी के इंडोर स्टेडियम में सीनियर राष्ट्रीय कुश्ती चैंपियनशिप के फ्रीस्टाइल वर्ग में स्वर्ण पदक हासिल किए।

हरियाणा की विनेश ने 55 किलोग्राम भार वर्ग में अपने ही प्रदेश की अंजू को 7-3 मात देकर स्वर्ण पदक जीता। दर्शकों के उत्साह के बीच विनेश पूरे मुकाबले में अंजू पर हावी रहीं और बड़े स्कोर से उसे मात दी। इस भार वर्ग में मध्य प्रदेश की रानी व दिल्ली की बंटी ने संयुक्त रूप से कांस्य पदक जीते। उधर पहलवान सत्यव्रत कादियान की पत्नी साक्षी मलिक ने 62 किग्रा में हरियाणा की राधिका को रोमांचक मुकाबले में 4-2 से पटखनी दी। इसी चैंपियनशिप में शुक्रवार को सत्यव्रत ने भी स्वर्ण पदक जीता था। अभी तक के अंकों के आधार पर महिला वर्ग में हरियाणा 215 अंकों के साथ पहले, रेलवे 196 अंकों के साथ दूसरे और दिल्ली 107 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर है। वहीं पुरुष वर्ग में रेलवे 149 अंकों के साथ पहले, एसएससीबी 148 अंकों के साथ दूसरे और हरियाणा 141 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर काबिज है।

रोमांचक जीत के साथ सौरभ फाइनल में

बैडमिंटन

खेल संवाददाता, लखनऊ

गैर वरीय सौरभ वर्मा ने यहां अपने विजय अभियान को जारी रखते हुए सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन चैंपियनशिप फाइनल में अपनी जगह सुनिश्चित कर ली। शनिवार को पुरुष सिंगल्स के रोमांचक सेमीफाइनल में भारतीय खिलाड़ी ने कोरिया के हियो क्वांग ही को मैराथन संघर्ष के बाद 21-17, 16-21 और 21-18 से शिकस्त दी। सौरभ रविवार को खिताबी मुकाबले में चीनी ताइपे के वांग त्जू वेई से भिड़ेंगे, जिन्होंने एक अन्य पुरुष सिंगल्स के मुकाबले में पूर्व विश्व नंबर एक कोरिया के सोन वान हो को 21-9, 21-7 से मात दी। पूर्व राष्ट्रीय चैंपियन रितुपर्णा दास थाईलैंड की फिटायापोर्ण चाइवान से 24-22, 21-15 के अंतर से हार गईं। इसके अलावा ओलंपिक चैंपियन स्पेन की कैरोलिना मारिन भी फाइनल में जगह बनाने में कामयाब रहीं। मारिन ने सेमीफाइनल में कोरिया की किम गा यून को 22-20, 21-16 के अंतर से हराया।

प्राजक्ता ने बैडमिंटन टीम के चयन पर सवाल उठाए

नई दिल्ली, प्रेट्र : डबल्स खिलाड़ी प्राजक्ता सावंत ने नेपाल में होने वाले दक्षिण एशियाई खेलों (सैग) की भारतीय बैडमिंटन टीम के चयन पर सवाल उठाते हुए शनिवार को कहा कि इस प्रतियोगिता के लिए ऐसे खिलाड़ियों को चुना गया जो घरेलू टूर्नामेंट भी नहीं खेले। प्राजक्ता ने कई ट्वीट करते हुए टीम के चयन पर सवाल उठाए और भारतीय बैडमिंटन संघ (बीई) के अध्यक्ष हेमंत बिस्वा सरमा से इस मामले को देखने की अपील की। प्राजक्ता ने लिखा, 'अनौपचारिक रूप से सैग खेलों की टीम पर पहले ही फैसला हो चुका है। खिलाड़ी नेपाल पहुंचने की कहानियां इंस्टाग्राम और फेसबुक पर डाल रहे हैं। किस आधार पर चयन किया गया?' प्राजक्ता ने शिखा और अश्विनी की गैरमौजूदगी को अन्याय करार दिया। उन्होंने ट्वीट किया, 'बार-बार अन्याय हो रहा है। राष्ट्रीय चैंपियनशिप 2019 की महिला डबल्स चैंपियन को सैग खेलों के लिए भारतीय टीम में जगह नहीं मिली। आधिकारिक घोषणा से पहले ही टूर्नामेंट के लिए टीमों की सूची भेज दी गई। बाई के अध्यक्ष क्या कर रहे हैं। क्या टीम के लिए सिर्फ गोपीचंद अकादमी के खिलाड़ी खेलेंगे? जिन्होंने अखिल भारतीय टूर्नामेंटों तक में हिस्सा नहीं लिया और उन्हें सीधा भारतीय टीम में चुना गया।

विविध

उत्तराखंड में तीर्थ पुरोहितों ने चार धाम श्राइन बोर्ड गठन का विरोध किया तेज

जागरण संवाददाता, देहरादून

▸ चार धामों में व्यावसायिक गतिविधियां नहीं चलने देने की चेतावनी

▸ पिछले दो दिनों से महापंचायत मुख्यमंत्री से वार्ता का समय मांग रही है

उत्तराखंड सरकार के श्राइन बोर्ड गठन के निर्णय के खिलाफ मोर्चा खोल चुके तीर्थ पुरोहितों ने अनादिकाल से चली आ रही परंपरा को तोड़ने का एलान किया है। उन्होंने आगामी वसंत पंचमी को तेल कलश बदरीनाथ न ले जाने की बात कही है। साथ ही सरकार को चेतावनी दी है कि यात्रा काल में चारों धामों में कोई व्यावसायिक गतिविधि संचालित नहीं होने दी जाएगी।

प्रदेश सरकार की ओर से चार धाम मंदिर श्राइन बोर्ड के गठन का प्रस्ताव कैबिनेट में पास होने के बाद से प्रदेशभर के तीर्थ पुरोहित और हक हकूकधारियों में उबाल है। ऐसे में देवभूमि तीर्थ पुरोहित हक हकूकधारी महापंचायत के बैनर तले तीर्थ पुरोहितों ने भी सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला है। उनकी सरकार के से यह निर्णय वापस लेने की एक सूत्रीय मांग है। बीते दो दिन से महापंचायत मुख्यमंत्री से वार्ता का समय मांग रही है, लेकिन अभी तक कोई बातचीत नहीं हो पाई है। विरोध के क्रम में शनिवार को आयोजित महापंचायत की एक अहम बैठक में निर्णय लिया गया कि आगामी यात्राकाल से पूर्व वसंत पंचमी को तेल कलश बदरीनाथ ले जाने की परंपरा का पालन नहीं किया जाएगा।

महापंचायत के संयोजक सुरेश सेमवाल ने कहा कि किसी कीमत पर श्राइन बोर्ड का गठन नहीं होने दिया जाएगा। महापंचायत के महामंत्री हरीश डिमरी ने कहा कि शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती और उनके शिष्य स्वामी अभिमुक्तेश्वरानंद भी तीर्थ पुरोहितों का समर्थन कर रहे हैं।

चारधाम में बरकरार रहेंगी परंपराएं : कौशिक

उत्तराखंड में चारधाम श्राइन बोर्ड के गठन के कैबिनेट के फैसले को लेकर उठ रहे विरोध के सुरों के बीच सरकार ने फिर साफ किया है कि चारधाम बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री में सभी हक-हकूकधारियों के अधिकार सुरक्षित रखे जाएंगे। सरकार के प्रवक्ता एवं कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने कहा कि श्राइन बोर्ड के अस्तित्व में आने पर चारधाम में सभी परंपराएं बरकरार रहेंगी।

साथ ही हितधारकों के हितों से कोई छेड़छाड़ नहीं होगी। चारधाम श्राइन बोर्ड को लेकर पुरोहित समाज में उबाल पर कौशिक का कहना है कि चारधाम श्राइन बोर्ड के अस्तित्व में आने पर चारधाम व इनके नजदीकी अन्य मंदिरों के विकास के साथ ही यात्रा व्यवस्थाओं का प्रबंधन बेहतर ढंग से हो सकेगा। उन्होंने कहा कि बोर्ड में चारधाम की परंपराएं, पूजा पद्धति बरकरार रहेंगी। साथ ही किसी भी हक-हकूकधारी के हित को प्रभावित नहीं होने दिया जाएगा।

गुरु नानक देव जी को भूमि दान करने वाले परिवार को भारत ने नहीं दिया वीजा

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़ : लगभग पांच शताब्दी पहले गुरु नानक देव जी को हजारों एकड़ जमीन दान में देने वाले पाकिस्तान के राय बुलार भट्टी परिवार के वंशजों को वीजा देने से भारत सरकार ने इन्कार कर दिया। पाकिस्तान के ननकाना साहिब में रहने वाले राय बुलार भट्टी परिवार की 19वीं पीढ़ी के सलीम भट्टी को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) ने गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाशोत्सव पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम में आमंत्रित किया था।

भट्टी ने मीडिया को बताया कि उन्हें एसजीपीसी, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर के अलावा पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट के वकीलों की एक संस्था द्वारा आमंत्रित किया गया था। यह कार्यक्रम आयोजित हो चुका है, लेकिन उन्हें उम्मीद थी कि भारत सरकार द्वारा वीजा मिलने पर वह सुल्तानपुर लोधी के दर्शन करने पंजाब अवश्य पहुंचेंगे। भट्टी ने बताया कि उनके साथ उनके पिता और पुत्र भी पंजाब पहुंचने की योजना बना रहे थे, परंतु अब उन्हें भारत सरकार द्वारा भेजे पत्र से पता चला है कि उनके वीजा आवेदन को रद कर दिया गया। इससे उन्हें निराशा हुई है। गौरतलब है कि गुरु नानक देव जी के समकालीन राय बुलार भट्टी ने उनकी आध्यात्मिक शक्ति को पहचान कर उन्हें लगभग 18,500 एकड़ भूमि दान में दी थी। इस परिवार को अब धार्मिक सद्भाव का प्रतीक माना जाता है। केंद्र सरकार द्वारा राय सलीम भट्टी को वीजा न देने पर पंजाब के मंत्री सुखजिंदर सिंह रंधावा ने कहा है कि यह खेदजनक है कि सिखों के पहले गुरु को सैकड़ों एकड़ भूमि देने वाले परिवार को भारत का दौरा करने से केंद्र सरकार ने इन्कार कर दिया।

कश्मीर में रिकॉर्ड हिमपात से बागवानी को 2250 करोड़ रुपये का नुकसान

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

▸ सात नवंबर को बर्फबारी ने तोड़ा पिछले 50 साल का रिकॉर्ड

कश्मीर घाटी में इस माह सात नवंबर को हुए हिमपात ने 50 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया है। यह हिमपात अगले मौसम के लिए बागवानी और कृषि क्षेत्र के लिए भी वरदान साबित होगा। यह बात अलग है कि इससे वादी में बागवानी क्षेत्र को करीब 2250 करोड़ रुपये का नुकसान बताया जा रहा है।

मौसम विभाग के अनुसार, इस साल पूरे नवंबर माह के दौरान राज्य में हिमपात बीते साल की तुलना में ज्यादा रहा है। नवंबर 2018 में सिर्फ 116.7 मिलीमीटर हिमपात रिकॉर्ड किया गया था, जबकि इस साल नवंबर माह के दौरान 131.8 मिलीमीटर हिमपात हुआ है। मौसम विभाग के निदेशक सोनम लोटस के अनुसार, इस बार नवंबर माह के दौरान हुआ हिमपात न सिर्फ बीते साल की तुलना में ज्यादा रहा है, बल्कि इसने 50 साल का नवंबर माह के दौरान 24 घंटे के दौरान होने वाले सबसे ज्यादा हिमपात का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया है। इससे पूर्व 1969 में श्रीनगर व उसके साथ सटे इलाकों में 24 घंटे के दौरान 64.3 मिलीमीटर बर्फ रिकॉर्ड की गई थी, जबकि इस साल सात नवंबर को श्रीनगर और उसके साथ सटे इलाकों में 76.8 मिलीमीटर बर्फ रिकॉर्ड की गई।

शेर-ए-कश्मीर कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय स्कॉस्ट कश्मीर में वैज्ञानिक डॉ. संदीप ने कहा कि इस नवंबर में हिमपात और बारिश ने यहां बागवानी और कृषि क्षेत्र को बेशक नुकसान पहुंचाया है। खेतों में तैयार खड़ी धान की फसल और बागों में पेड़ टूट गए, लेकिन हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि नवंबर-दिसंबर में होने वाला हिमपात ही पहाड़ों पर ज्यादा दिनों तक टिका रहता है। ग्लेशियरों को मजबूती देता है। इसके अलावा इसी बारिश और हिमपात से यहां जमीनों की नमी बढ़ेगी, जो आगामी सीजन में बागों व फसलों के लिए बेहतर होगा। जमीन जितनी ज्यादा नम होगी, कश्मीर में पैदा होने वाला सेब उतना ही ज्यादा मीठा व रसीला होगा। इसके अलावा केसर के खेतों को भी इससे फायदा पहुंचेगा। गर्मियों में नदी-नालों का जलस्तर भी पर्याप्त रहेगा।

बागवानी विभाग से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि नवंबर माह के दौरान अलग-अलग दिनों के दौरान और सात नवंबर को हुए भीषण हिमपात से कश्मीर घाटी में सबसे ज्यादा बागवानी क्षेत्र को नुकसान पहुंचा है। शुरुआती आकलन में यह नुकसान करीब 2250 करोड़ रुपये का है। अधिकांश बागों में जवान और वयस्क फलदार पेड़ टूटे हैं। राजस्व विभाग के अधिकारियों और बागवानी जगत से जुड़े लोगों के साथ मिलकर इस नुकसान की अंतिम रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

शराबी दूल्हे को बरात समेत दूल्हन ने बैरंग लौटाया

जासं, ऋषिकेश : उत्तराखंड के ऋषिकेश में आइडीपीएल से सटी कृष्णा नगर कॉलोनी में एक युवती के विवाह की सभी तैयारियां पूर्ण हो गई थी। बरात वधू के द्वार पहुंची, तो दूल्हा शराब के नशे में धुत मिला। यजब वधू व उसके परिजनों को पता चला कि दूल्हे ने अत्यधिक शराब पी है, तो उसने शादी से इन्कार कर दिया। उल्टा वर पक्ष के लोगों को वधू पक्ष के लोगों को विवाह की तैयारी में खर्च 3.50 लाख रुपये देने की सहमति पर हस्ताक्षर करने पड़े।

कृष्णा नगर कॉलोनी में शनिवार को श्यामपुर के एक धर्मशाला में विवाह संस्कार पूर्ण होने थे। वधू के यहां पीली पड़ाव लालढांग हरिद्वार से बरात आई थी। दूल्हा गाड़ी में बैठ कर बरातियों के साथ धर्मशाला पहुंचा, मौके पर मौजूद लोगों के मुताबिक जब वह गाड़ी से उतरा तो खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। यही नहीं दो लोगों ने उसे किसी तरह खड़ा किया और वधू के भाई ने उसकी हालत देख नींबू पानी पिलाया और उसके इस हाल की जानकारी ली।

दून के कॉलेजों में विलंब शुल्क से कश्मीरी छात्रों में आक्रोश

जासं, देहरादून : देहरादून के विभिन्न कॉलेजों में पढ़ रहे जम्मू-कश्मीर के छात्र-छात्राओं में विलंब शुल्क को लेकर आक्रोश है। छात्र-छात्राओं का आरोप है कि अनुच्छेद-370 हटने के बाद अवकाश पर गए सैकड़ों बच्चों को करीब दो माह घरों में रुकना पड़ा। ऐसे में कॉलेज प्रशासन का विलंब शुल्क वसूलना उचित नहीं है। दूसरी ओर उच्च शिक्षा राज्य मंत्री धन सिंह रावत ने बताया कि मामले में जल्द ही बैठक बुलाई जा रही है। जम्मू एंड कश्मीर स्टूडेंट एसोसिएशन के प्रवक्ता नासिर खुहेमानी ने बताया कि देहरादून में दो हजार से ज्यादा छात्र-छात्राएं विभिन्न कॉलेज में पढ़ाई कर रहे हैं।

मौसम विशेष

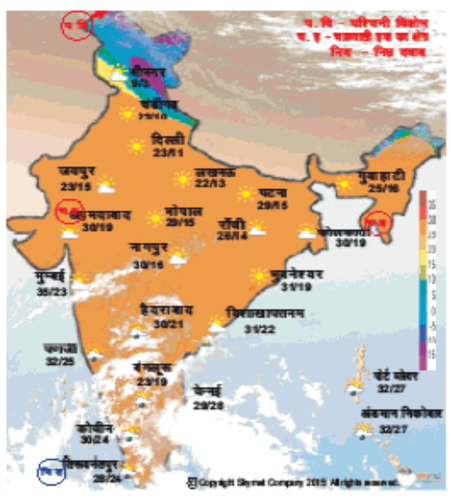

जम्मू-कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में मौसम शुष्क व ठंडा बना रहेगा। कश्मीर घाटी में सुबह में कंपकंपाती ठंड रहेगी। राजस्थान, हरियाणा व पंजाब में शीतल सुबह में कुछ स्थानों पर कोहरा व कुहासा छाया रहेगा। दिल्ली में शुष्क मौसम के साथ प्रदूषण स्तर सामान्य बना रहेगा।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	34/23/आ	अहमदाबाद	32/18/आंब
कोलकाता	29/18/आ	कोटा	[illegible]
चेन्नई	[illegible]	नागपुर	30/17/आ
हैदराबाद	[illegible]	इंदौर	[illegible]
बेंगलुरु	[illegible]	रांची	[illegible]
तिरुवनंतपुरम	31/23/आ	पटना	[illegible]
गुवाहाटी	25/16/आंब	[illegible]	[illegible]
गंगटोक	10/-2/आ	पुणे	29/18/आ

साप्ताहिक राशिफल

रविवार 1 दिसंबर, 2019 से शनिवार 7 दिसंबर, 2019 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,आ) व्यापार, नौकरी व उद्योग में प्रगति, अर्थ साधन में प्रयास, आत्म विश्वास की वृद्धि, कार्य करने वालों पर ध्यान दें, पारिवारिक जनों का सहयोग, साधनों की वृद्धि, उपहार सम्मान की प्राप्ति, सन्तान से सहयोग, मित्रों से अनबन, ससुराल से सहयोग, अधिकारी से सहयोग, यात्रा में सावधानी, शुभ अंक 5

वृष (इ,ऊ,ए,ओ,पा,वी,वू,वे,वो) व्यापारिक, उद्योग, नौकरी के कार्य में सहयोग से सफलता, धनागम में प्रयास, सामाजिक कार्य में यश, सदस्य के प्रति चिन्ता, मनोरंजन के साधन, सन्तान से सहयोग, चयन में देरी, दाम्पत्य में सुख, यात्रा का योग, धर्म में रूचि, भविष्य के प्रति योजना, आय में प्रयास, शुभ अंक 4

मिथुन (का,की,कू,घ,ङ,छ,के,को,हा) व्यापारिक, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम में प्रयास, आत्म विश्वास की वृद्धि, विदेश कार्य में प्रगति, दिनचर्या व्यस्ततम, निर्माण वाहन योग में अवरोध, सन्तान के लिये योजना, शत्रुपक्ष प्रभावी, दाम्पत्य में सुख, यात्रा में सावधानी, अधिकारी से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 2

कर्क (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो) व्यापारिक, उद्योग, नौकरी के कार्य में प्रयास से सफलत, निर्णय सलाह से करें, चिन्ता की समाप्ति, भूमि भवन सजावट का योग, अध्ययन में रूचि, खानपान पर ध्यान रखें, ससुराल से सहयोग, वाहन में सावधानी, अनुबन्ध की प्राप्ति, अधिकारी से अनबन, यन्त्र विस्तार, व्यय अधिक, शुभ अंक 1

सिंह (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे) नौकरी, उद्योग, व्यापार के कार्य में प्रगति, अर्थ साधन अच्छा, सामाजिक कार्य में यश, पूंजी निवेश में सावधानी, पारिवारिक असन्तोष, भूमि कार्य में देरी, सन्तान की सफलता, वाद विवाद से बचें, नेत्र त्वचा, विकार योग, नये साथी का मिलन, प्रणय में सुख, भ्रमण योग, आय में सुधार, शुभ अंक 2

कन्या (टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो) व्यापारिक, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, अर्थ साधन में प्रयास, आत्मविश्वास की कमी, विदेश से समाचार, प्रतिस्पर्धा से चिन्ता, निजी मतभेद, सन्तान से अनबन, शत्रु पक्ष प्रभावी, दाम्पत्य में सुख, वाहन में सावधानी, सम्पूर्ति का अनुबन्ध, राजनैतिक जनों को यश, व्यय अधिक, शुभ अंक 2

तुला (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते) व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम में सफलता, कार्य करने वालों से सतर्क, महिला से सहयोग, पूंजी निवेश में सावधनी, भूमि भवन कार्य में देरी, सन्तान से चिन्तित, शिक्षा में एकाग्रता, शत्रु पक्ष से सावधान, प्रणय में सुख, यात्रा में सावधानी, व्यय पर नियन्त्रण करें, शुभ अंक 4

वृश्चिक (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू) व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रयास से सफलता, धनागम में सुधार, सामाजिक कार्य का योग, विदेश से अनुबन्ध, मन में शान्ति, पारिवारिक सहयोग, भूमि विवाद से चिन्ता, सन्तान से मतभेद, चयन में देरी, खानपान पर ध्यान दें, प्रणय में सुख, सम्पूर्ति का अनुबन्ध, यन्त्र स्थापन योजना, शुभ अंक 5

धनु (ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढा,भे) व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में श्रम से सफलता, अर्थ साधन में प्रयास, निर्णय सलाह से करें, कार्य विस्तार की योजना, विदेश कार्य में सफलता, चिन्ता का समाधान, सन्तान से सहयोग, शिक्षा में रुचि, दाम्पत्य में सुख, वाहन में सावधानी, यन्त्र स्थापन योग, व्यय अधिक, शुभ अंक 5

मकर (भो,जा,ज,खी,खू,खे,खो,गा,गी) व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, अर्थ साधन में प्रगति, पूंजी निवेश में सावधानी, मन में शरीर के प्रति चिन्ता, सन्तान से सहयोग, चयन में देरी, कुसंग से बचें, पुराने साथी का मिलन, रक्षा साधन कार्य में प्रगति, राजनैतिक जन को अपयश, शुभ अंक 5

कुम्भ (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सा,दा) नौकरी, व्यापार, उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम में प्रयास, सामाजिक कार्य में यश, धन निवेश में सावधानी, चिन्ता का समाधान, वाहन भूमि कार्य में देरी, सन्तान से सहयोग, चयन में देरी, वाद में विजय, दाम्पत्य में सुख, भ्रमण योग, धर्म में रूचि, व्यय अधिक, शुभ अंक 4

मीन (दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची) व्यापारिक, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, अर्थ साधन अच्छा, उपहार यश तथा सम्मान योग, विदेश कार्य में प्रगति, वाहन निर्माण कार्य में देरी, सन्तान की प्रगति, शिक्षा में एकाग्रता, ससुराल से सहयोग, वाहन में सावधानी, रक्षा साधन कार्य में योजना, व्यय अधिक, शुभ अंक 2

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

रविवार 1 दिसंबर 2019

आजकल

16

www.jagran.com

भारत का 16वां राज्य बना नगालैंड

जुलाई, 1960 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और नगा पीपुल्स कंवेंशन के नेताओं के बीच 16 बिंदुओं पर सहमति बनने के बाद 1963 में आज ही नगालैंड भारत का 16वां राज्य बना था। कोहिमा इसकी राजधानी बनी। आजादी के बाद नगालैंड असम का हिस्सा था।

सीमा सुरक्षा बल का गठन हुआ

1965 में आज ही बीएसएफ का गठन हुआ था। यह विश्व का सबसे बड़ा सीमा सुरक्षा बल है। इस समय बीएसएफ की 188 बटालियन हैं। सीमा सुरक्षा के अलावा वहां होने वाले अपराधों जैसे तस्करी/घुसपैठ और अन्य अवैध गतिविधियों को रोकने की जवाबदेही भी इसी पर है।

शहीद मेजर शैतान सिंह के नाम से डरती थी चीनी सेना

शहीद मेजर शैतान सिंह का जन्म 1924 में आज ही राजस्थान में हुआ था। 18 नवंबर, 1962 भारत-चीन युद्ध में 13वीं कुमाऊंनी बटालियन की सी कंपनी ने रेजांग ला दर्रे में चीनी सैनिकों का सामना किया, जिसकी नेतृत्व मेजर शैतान सिंह कर रहे थे। गोलियों से घायल होने के बावजूद वह एक पोस्ट से दूसरी पोस्ट पर जाकर सैनिकों का हौसला बढ़ाते देश पर न्यौछावर हो गए। उनके साहसिक नेतृत्व की वजह से इस मोर्चे पर भारतीय सेना ने 1000 से अधिक चीनी सैनिकों को मार गिराया। मरणोपरांत उन्हें परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

इधर-उधर की

कुत्तों की देखभाल के लिए मिलता है लाखों का वेतन

लंदन,एजेंसी : अगर आप भी कुत्तों से प्यार करते हैं और उनकी हर छोटी-बड़ी जरूरतों को तुरंत समझ जाते हैं तो आपको लंदन का एक परिवार सालाना (32 हजार यूरो) करीब 29 लाख रुपये देने को तैयार है। दरअसल लंदन के नाइट्सब्रिज में रहने वाले एक युगल ने अपने दो गोल्डन रिट्रीवर की देखभाल के लिए विज्ञापन दिया है। इस विज्ञापन के साथ केयरटेकर में किस तरह की खूबी होनी चाहिए, इसका भी जिक्र किया गया है। यह कपल ज्यादातर अपने काम के सिलसिले में घर से बाहर रहता है, जिस कारण वह अपने कुत्तों (मिलो और ऑस्कर) की देखभाल अच्छे तरीके से नहीं कर पाता है। विज्ञापन में कहा गया है कि जो कोई भी मिलो और ऑस्कर की देखभाल करेगा उसे हफ्ते में सिर्फ पांच दिन काम करना होगा और उसकी एवज में उसे सालाना 29 लाख रुपये दिए जाएंगे।

शोध अनुसंधान

स्मार्टफोन का ज्यादा इस्तेमाल बच्चों के लिए नुकसानदेह

बच्चों में टेलीविजन या मोबाइल फोन की बढ़ती आदत माता-पिता के लिए चिंता की वजह बनती जा रही है। इस विषय पर किए गए अध्ययन से भी यह जाहिर हो चुका है कि बहुत ज्यादा टीवी देखना या स्मार्टफोन का इस्तेमाल करना बच्चों के लिए नुकसानदेह हो सकता है। इसका उनके विकास पर गंभीर असर पड़ सकता है। अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ और न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी लैंगोन मेडिकल सेंटर के शोधकर्ताओं की ओर से किए गए एक हालिया अध्ययन से यह पता चला कि बच्चे स्क्रीन पर रोजाना औसतन 150 मिनट व्यतीत करते हैं। यह तय सीमा से बहुत ज्यादा है। उनके अनुसार, 18 माह से कम उम्र के बच्चों को डिजिटल मीडिया से दूर रखना चाहिए। जबकि दो से पांच साल की उम्र के बच्चों को रोजाना एक घंटे से ज्यादा इनका इस्तेमाल नहीं करने देना चाहिए। इससे बच्चों के विकास पर गंभीर असर पड़ने की आशंकाओं को दूर किया जा सकता है। -एएनआइ

हृदय को दुरुस्त कर सकती है स्टेम सेल थेरेपी

शोधकर्ताओं ने एक नई स्टेम सेल थेरेपी विकसित की है। हार्ट अटैक के बाद इस थेरेपी की मदद से हृदय को दुरुस्त किया जा सकता है। हार्ट अटैक के दौरान रक्त का संचार प्रभावित होने से ऑक्सीजन की कमी पड़ जाती है और टिश्यू क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। जर्नल नेचर में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, हार्ट अटैक प्रभावित चूहे के हृदय में हार्ट स्टेम सेल्स पहुंचाने से एक ऐसी प्रक्रिया प्रेरित होती है, जो जख्म को भरने जैसी प्रतिक्रिया को शुरू कर देती है। इससे प्रभावित हिस्सा फिर चंगा हो सकता है। अमेरिका के हावर्ड ह्यूजेस मेडिकल इंस्टीट्यूट के प्रोफेसर और इस अध्ययन के प्रमुख शोधकर्ता जेफरी मोल्केंटिन ने कहा कि हार्ट अटैक के बाद जख्म भरने की इस प्रक्रिया से हृदय की कार्यक्षमता को कुछ हद तक फायदा हो सकता है। -एएनआइ

पृथ्वी को गर्म ग्रह में तब्दील कर सकती है ग्लोबल वार्मिंग

- लगातार बढ़ती गर्मी पर वैज्ञानिकों ने जताई चिंता
- कहा-एक दशक पहले पहचाने गए जलवायु टिपिंग बिंदुओं में से आधे से अधिक अब भी है सक्रिय

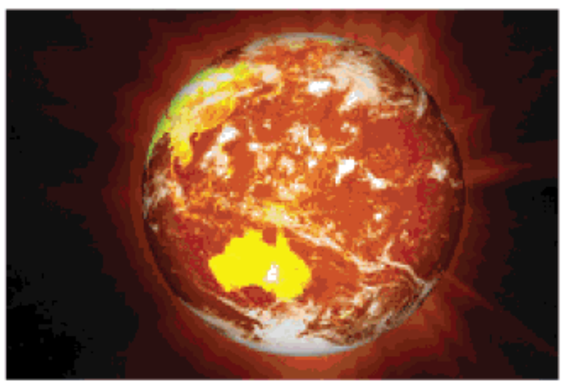

ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी पर गर्मी लगातार बढ़ रही है। प्रतीकात्मक

लंदन, प्रेट्र : ग्लोबल वार्मिंग से वातावरण में होने वाले परिवर्तनों से मानवता के भविष्य को खतरा हो सकता है। एक अध्ययन में वैज्ञानिकों ने चेतावनी देते हुए कहा है कि एक दशक पहले पहचाने गए जलवायु टिपिंग बिंदुओं में से आधे से अधिक अब भी सक्रिय हैं। जलवायु प्रणाली में टिपिंग बिंदु एक सीमा है, जो जब पार हो जाती है तो पूरे सिस्टम में बड़े परिवर्तनों की आशंका बढ़ जाती है।

नेचर नामक जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में शोधकर्ताओं ने बताया है कि जलवायु परिवर्तन के कारण अमेजन के वर्षावनों को नुकसान पहुंचा है और अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड की बर्फ की चादरें भी खतरे में हैं। पुराने अध्ययनों के मुकाबले वर्तमान में ये क्षेत्र अभूतपूर्व परिवर्तन से गुजर रहे हैं। शोधकर्ताओं ने कहा, 'सक्रिय टिपिंग बिंदुओं में आर्कटिक की समुद्री बर्फ, गर्म-पानी के कोरल, बोरियल वन और अटलांटिक मेरिडेशनल ओवरवर्टिंग सर्कुलेशन यानी समुद्र के पानी की सतह और गहरे धाराओं का प्रवाह) शामिल है, जिनमें समय के साथ-साथ जबरदस्त परिवर्तन देखने को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ने का असर ग्लेशियरों और वर्षावनों में साफ देखने को मिल रहा है। बीते दिनों अमेजन के वर्षावनों में लगी भयावह आग और लगातार पिघलते ग्लेशियर इस बात का सुबूत हैं कि ग्लोबल वार्मिंग का असर दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। वैज्ञानिकों के मुताबिक, समय-समय पर घटित होने वाली चरम मौसमी आपदाएं इसका अहसास जरूर करवा जाती हैं कि मनुष्य द्वारा पृथ्वी का दोहन किस कर बढ़ रहा है। इस तरह की घटनाएं साल-दर-साल भयावह रूप ले रही हैं।

बढ़ता मानव दबाव भी है कारण : जर्मनी के पोस्टडैम इंस्टीट्यूट फॉर क्लाइमेट इम्पेक्ट रिसर्च के निदेशक जोहान रॉकस्ट्रॉम ने कहा, 'ये घटनाएं पृथ्वी पर मानव दबाव के कारण घट रही हैं, जो समय से साथ-साथ बढ़ती जा रही हैं।' एक बयान में रॉकस्ट्रॉम ने कहा कि हम यह भी स्वीकार करना चाहिए कि हम ग्लोबल वार्मिंग के खतरों की भयावहता का सही आकलन नहीं कर पाए। यदि हम समय रहते सटीक अनुमान लगा पाते तो शायद स्थिति आज इतनी खराब नहीं होती। उन्होंने कहा कि हालांकि, अब भी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। यदि आज भी हम अपने ग्रह को बचाने के लिए प्रतिबद्ध हो जाएं और इस दिशा में सही तरीके से काम करने लगें तो परिस्थितियां बहुत हद तक बदल सकती हैं।

गैसों के उत्सर्जन में कटौती जरूरी : रॉकस्ट्रॉम ने कहा, 'टिपिंग प्वाइंट को बचाने के लिए वैज्ञानिकों को चाहिए कि वह तत्काल ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए उपयुक्त सुझाव दें ताकि पृथ्वी को गर्म ग्रह बनने से रोका जा सके।' उन्होंने कहा कि यदि हम इस दिशा में उचित कदम नहीं उठा पाए तो वह दिन दूर नहीं होगा, जब पूरी पृथ्वी आग के गोले के समान हो जाएगी।

बगैर पायलट उड़ेगा एयरोप्लेन इंसानी दिमाग पढ़ेगी मशीन

जागरण संवाददाता, बरेली

स्पेक्ट्रम

- रुविवि में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में वैज्ञानिकों ने दी जानकारी
- इंसान की तरह स्मार्ट होगी मशीन, खुद सोचेगी, खुद करेगी काम

प्रतीकात्मक

अब वह दिन दूर नहीं, जब आप बगैर पायलट वाले हवाई जहाज, ट्रेन और बसों में बैठेंगे। चौंकिए नहीं, ऐसा बहुत जल्द शुरू होने वाला है। यह सब कुछ होगा मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की तकनीक से। इस पर दुनियाभर के वैज्ञानिकों ने काफी काम किया है। गूगल ने तो बगैर ड्राइवर वाले ऑटो लांच करने की तैयारी भी कर ली है। यह जानकारी शनिवार को हरकोर्ट बटलर टेक्निकल यूनिवर्सिटी (एचबीटीयू) कानपुर के कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के विशेषज्ञ प्रो. नरेंद्र कोहली ने दी। प्रो. कोहली बरेली के रुहेलखंड विश्वविद्यालय (रुविवि) में आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस के समापन समारोह में बोल रहे थे।

उन्होंने 'एडवांस इन कंप्यूटिंग, कम्यूनिकेशन एंड ऑटोमेशन' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आने वाले समय में इंसान की जिंदगी काफी सरल हो जाएगी। जो काम पहले कई दिन में होते थे, वह पलक झपकते ही हो जाएंगे। बड़ी से बड़ी बीमारी की वजह तुरंत पता चल जाएगी। उसका इलाज खोजने में भी मशीन लर्निंग काफी कारगर साबित होगा।

गूगल सिखाएगा सही शब्द बोलने का तरीका : प्रो. कोहली ने बताया कि हाल ही में गूगल ने मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का प्रयोग करते हुए नया फीचर शुरू किया है। इसके तहत आप उन शब्दों का सही उच्चारण करना सीख सकेंगे, जो आपको कठिन लगता है या पहले आपकी समझ से बाहर हुआ करता था। गूगल न केवल आपको बोलकर सिखाएगा बल्कि उसे इस तरह से समझाएगा कि आप कभी भूल भी नहीं सकते।

मशीन की बढ़ेगी सोचने-समझने की क्षमता : प्रो. कोहली ने बताया कि आने वाले दिनों में मशीन बिल्कुल इंसान की तरह काम करेगी। मतलब मशीन में सोचने-समझने की क्षमता भी मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की मदद से विकसित हो जाएगी। यही नहीं अगर आप मशीन से कुछ काम भी कराना चाहेंगे तो केवल आपके सोचनेभर की बात होगी...मशीन आपका दिमाग पढ़कर वह काम कर दिखाएगी।

समुद्र में बिछाए गए टेलीफोन के तार देंगे भूकंप के संकेत

तकनीक ▶ तूफान का पता लगाने में भी किया जा सकता है इसका उपयोग

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने किया दावा

प्रतीकात्मक

लॉस एंजिलिस, प्रेट्र : समुद्र के नीचे बिछाई गई फाइबर-ऑप्टिक केबल्स जो वैश्विक दूरसंचार नेटवर्क का निर्माण करते हैं, भूकंप की निगरानी के साथ-साथ छिपी हुई भूगर्भिक संरचनाओं का आकलन करने में मदद कर सकते हैं। एक नए अध्ययन में यह दावा किया है। साइंस नामक जर्नल में प्रकाशित इस अध्ययन में बताया गया है कि एक प्रयोग के दौरान शोधकर्ताओं ने समुद्र के नीचे 20 किलोमीटर के एक खंड में फैली फाइबर-ऑप्टिक केबल्स को 10 हजार भूकंप की निगरानी करने वाले स्टेशनों के बराबर पाया।

अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय बर्कले के शोधकर्ताओं ने इन केबल्स की मदद से अपने चार दिवसीय प्रयोग के दौरान 3.5 तीव्रता के भूकंप और पानी के नीचे के भूकंप से हुई तबाही का आकलन किया। इसका पता लगाने के लिए उन्होंने एक ऐसी तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें एक डिवाइस के जरिये प्रकाश का पता लगाया जा सकता है और भूकंप की तरंगों की पहचान भी की जा सकती है। साथ ही इससे यह भी पता लग सकता है कि भूकंप के कारण केबल में खिंचाव होने पर बैकस्कैटर इलेक्ट्रॉन कैसे काम करते हैं।

शोधकर्ताओं ने केबल के प्रत्येक दो मीटर पर हुए परिवर्तनों को मापा और 20 किलोमीटर के खंड को 10,000 व्यक्तिगत भूकंपीय सेंसरों में बदल दिया। शोधकर्ताओं ने कहा, 'इस तकनीक के जरिये ऐसे फॉल्ट सिस्टम की पहचान भी की गई है, जिनका अब तक पता नहीं लग पाया था। इसके अलावा इसका उपयोग ज्वार और तूफान का निरीक्षण करने के लिए भी किया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने इस तकनीक को 'डिस्ट्रीब्यूटेड एकॉस्टिक सेंसिंग' नामक दिया है। इसका इस्तेमाल पहले जमीन पर फाइबर-ऑप्टिक केबल के साथ परीक्षण के लिए किया गया था, लेकिन अब इसका प्रयोग उन इलाकों में समुद्र के नीचे होने वाली गतिविधियों का डाटा पाने के लिए भी किया जा सकता है, जहां भूकंप की निगरानी के लिए स्टेशन सीमित संख्या में हैं।

शोधकर्ताओं ने कहा कि नई प्रणाली केबल की लंबाई के प्रत्येक मीटर के लिए नैनोमीटर से लेकर सैकड़ों पिक्सोमेट्रेस के परिवर्तन को माप सकती है। अध्ययन के लेखक नैट लिंडसे ने यूसी हेडली से कहा, 'भूकंपीय तरंगों के अध्ययन के लिए समुद्र की सतह का अध्ययन भी जरूरी है। नई विधि इस दिशा में बहुत बड़ा बदलाव ला सकती है।'

फिलहाल निष्क्रिय अकाउंट को डिलीट नहीं करेगा ट्विटर

सैन फ्रांसिस्को, आइएएनएस : जब तक मृत व्यक्तियों के अकाउंट का पता नहीं चल जाता है तब तक ट्विटर निष्क्रिय अकाउंट को डिलीट नहीं करेगा। बता दें कि माइक्रो-ब्लॉगिंग साइट ने 26 नवंबर को ऐसे सभी निष्क्रिय अकाउंट बंद करने की घोषणा की थी, जिनका पिछले छह महीने से उपयोग नहीं किया जा रहा है। इसकी शुरुआत 11 दिसंबर से होनी थी।

ट्विटर ने एक बयान में कहा कि यह हमारी तरफ से चूक थी। हम तब तक कोई भी निष्क्रिय अकाउंट नहीं हटाएंगे जब तक मृत लोगों के अकाउंट का पता नहीं चल जाता है। हमारी निष्क्रिय अकाउंट को डिलीट करने की नीति रही है, लेकिन हमने इसे लागू नहीं किया है। स्थानीय प्राइवेसी नियमों (जीडीपीआर) के चलते हम यूरोपीय संघ से इसकी शुरुआत कर रहे हैं।

एक ताजा पोस्ट में कंपनी ने कहा कि जीडीपीआर के अनुपालन के अलावा हम भविष्य में निष्क्रिय अकाउंट को डिलीट करने की नीति को विस्तार देने के साथ ही अन्य नियमों का पालन करेंगे। दिग्गज सोशल मीडिया कंपनी ने कहा कि हमारी घोषणा की वजह से फैले भ्रम और चिंताओं के लिए माफी मांगते हैं।

अनुमानों से ज्यादा स्वास्थ्य पर असर डालता है वायु प्रदूषण

नई दिल्ली, आइएएनएस: यह तो लगभग सब जानते हैं कि वायु प्रदूषण के कारण हृदय संबंधी रोग, स्ट्रोक, गर्भपात और मानसिक समस्याएं जन्म लेती हैं और ये बीमारियां लंबे समय तक हमारे शरीर को जकड़ लेती है। अब एक नए अध्ययन में शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि वायु प्रदूषण के कारण हमारे स्वास्थ्य पर पुराने अनुमानों से कहीं ज्यादा प्रभाव पड़ता है। गार्डियन में प्रकाशित शोध में दावा किया गया है कि वायु प्रदूषण के कारण हमारे शरीर की हर कोशिका प्रभावित होती है और जितने लंबे समय तक हमारा वातावरण प्रदूषित रहेगा, हमारी कोशिकाओं पर उसका असर उतना ही अधिक होगा।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर और इस अध्ययन के सह-लेखक फ्रांसेस्का डोमिनिकी ने कहा, 'इस शोध का उद्देश्य यह पता लगाना था कि हमारे वातावरण में फैले महीन कण लोगों को अस्पतालों में भर्ती कराने के लिए कितने जिम्मेदार हो सकते हैं।' इस अध्ययन के लिए शोधार्थियों ने वर्ष 2000 से 2012 तक अस्पतालों में भर्ती हुए 9.5 लाख लोगों के स्वास्थ्य बीमा के डाटा की जांच की। इस दौरान उन्होंने पाया कि ज्यादा तक लोग पीएम 2.5 के कारण कई बीमारियों का शिकार हुए थे।

रूसी आर्टिस्ट एलेक्सी ने बनाई नोटों की कुर्सी

दुनिया में लोगों में अजीबो-गरीब शौक हैं। ऐसे ही रूस के एक उद्यमी इगोर रयबाकोव ने नोटों की विशाल कुर्सी बनवाई है। इसे तैयार किया है रूसी आर्टिस्ट एलेक्सी सर्जेनको ने। 'मनी सिंहासन एक्स 10' के इस आर्ट वर्क में पूरा फ्रेम मोटे कांच से बना है और उसके अंदर एक मिलियन डॉलर (करीब 70 लाख रुपये) के नोटों की गड्डियां रखी गई हैं। इस कुर्सी को राजधानी मास्को में एक प्रदर्शनी में रखा गया है। इसे देखने के लिए दूर-दराज से लोग यहां पहुंच रहे हैं। नोटों की गड्डियों और कांच की प्लेटों से बनी यह कुर्सी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। रायटर

जलवायु परिवर्तन को लेकर प्रदर्शन

पश्चिमी जर्मनी में लॉजिट्स क्षेत्र में जेस्क्वाल्ड के समीप हजारों की संख्या में जलवायु परिवर्तन कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया और पटरियों पर धरना देकर रेल यातायात ठप कर दिया। वैश्विक आंदोलन 'फ्राइडे फॉर फ्यूचर' के अंतर्गत जलवायु कार्यकर्ता यहां खनन कार्य शुरू किए जाने का विरोध कर रहे थे। इस क्षेत्र में काफी मात्रा में खनिज पदार्थ मिलते हैं। रायटर

स्क्रीन शॉट

भूमि पेडणेकर बनेंगी 'हीरो'

अपनी पहली फिल्म 'दम लगाके हईसा' से ही भूमि पेडणेकर अपने किरदारों के साथ प्रयोग करती आई हैं। 'टॉयलेट: एक प्रेम कथा', 'शुभ मंगल सावधान', 'सांड की आंख' और 'बाला' जैसी फिल्मों में उनका किरदार गैर-पारंपरिक और मजबूत रहा है। अब भूमि अपनी आगामी फिल्म में हीरोइन नहीं, बल्कि 'हीरो' होंगी। थ्रिलर फिल्म 'दुर्गावती' में भूमि हीरो का किरदार निभाएंगी। इस फिल्म के प्रेजेंटर अक्षय कुमार ने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर साझा की है, जिसमें भूमि हाथ में हीरो का बोर्ड लेकर कुर्सी पर बैठी हैं, जबकि उनके पीछे अक्षय कुमार और भूषण कुमार प्रेजेंटर का बोर्ड पकड़े हुए खड़े हैं। भूमि के पास निर्देशक और निर्माता का बोर्ड पकड़े साउथ की फिल्मों के निर्देशक अशोक और विक्रम मल्होत्रा बैठे हुए हैं। अक्षय ने इस तस्वीर के साथ लिखा, 'यह घोषणा करने के लिए उत्सुक हूं कि भूमि पेडणेकर दुर्गावती फिल्म में होंगी। फिल्म की शूटिंग जनवरी के मध्य से आरंभ होगी।' इस बार अक्षय फिल्म से केवल प्रेजेंटर के तौर पर जुड़े हैं। इससे पहले भूमि और अक्षय 'टॉयलेट : एक प्रेम कथा' में साथ काम कर चुके हैं। भूमि जल्द ही 'पति, पत्नी और वो', 'भूत पार्ट वनः द ह्वॉन्टेड शिप' और 'तख्त' में नजर आएंगी।

कैंप का हिस्सा बनने से डर लगता है : शोभिता

बॉलीवुड में कई कैंप हैं। इनमें रहने के अपने फायदे और नुकसान हैं। बात करें अगर अभिनेत्री शोभिता धूलिपाला की, तो उनका मानना है कि उन्हें किसी कैंप का हिस्सा नहीं बनना है। 'मेड इन हेवन' वेब सीरीज में हाल में नजर आईं शोभिता इसके पीछे की वजह बताते हुए कहती हैं कि मैं सामाजिक तौर पर थोड़ी अजीब हूं। अगर मेरे सामने दस लोग आकर बैठ जाएं, तो मैं स्कूल का डरा हुआ बच्चा बन जाती हूं। मैं बात तक नहीं कर पाती हूं। मैं हमेशा से ऐसी ही रही हूं। वैसे भी मैं किसी कैंप में घुलमिल नहीं पाऊंगी। कुछ दोस्तों और परिवार के बीच ही मैं सहज रह पाती हूं। सामाजिक होना भी कला है, यह कला मुझमें नहीं है। वैसे भी यह सब मुझे समय की बर्बादी लगती है। सेट पर इतने लोगों के बीच काम करने के सवाल के जवाब में शोभिता ने बताया कि सेट मेरा अड्डा है। मैं वहां एक उद्देश्य के साथ जाती हूं। वहां जाने के पीछे मकसद होता है। मैं अपने काम की पूरी तैयारी करके वहां पहुंचती हूं। ऐसे में वहां मुझ में कोई डर नहीं होता है। 'रमन राघव 2.0', 'कालाकांडी' जैसी फिल्मों में अभिनय कर चुकीं शोभिता स्पैनिश फिल्म 'द बॉडी' की आधिकारिक हिंदी रीमेक में इमरान हाशमी और ऋषि कपूर के साथ नजर आएंगी।

अध्ययन

वैज्ञानिकों ने तैयार किया इको-फ्रेंडली पैकेजिंग मैटेरियल, इससे शॉपिंग बैग समेत बनाई जा सकती हैं कई प्रकार की सामग्रियां

पॉलीथिन का विकल्प दे सकते हैं केले के पौधे

- केले के पौधे से बड़ी मात्रा में निकलता है जैविक अपशिष्ट
- टेक्सटाइल और खाद के रूप में किया जाता है इस्तेमाल

शोधकर्ताओं ने केले के पौधों की मदद से तैयार किया शॉपिंग बैग। फाइल

मेलबर्न, प्रेट्र : भविष्य में केले के पौधे पॉलीथिन का एक अच्छा विकल्प दे सकते हैं। वैज्ञानिकों ने केले के पौधों से एक ऐसा पैकेजिंग मैटेरियल तैयार किया है जो पर्यावरण के अनुकूल तो है ही। साथ ही इसे रिसाइकल भी किया जा सकता है। ऑस्ट्रेलिया की यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू साउथ वेल्स (यूएनएसडब्ल्यू) के शोधकर्ताओं के अनुसार, केले के बढ़ते उद्योग में बड़ी मात्रा में जैविक अपशिष्ट का उत्पादन होता है, जिसमें केवल 12 फीसद पौधे का उपयोग किया जाता है जबकि बाकी को फसल की कटाई के बाद छोड़ दिया जाता है।

यूएनएसडब्ल्यू के एसोसिएट प्रोफेसर जयश्री आरकोट ने कहा, 'अन्य फसलों की तलुना में केले की फसल की कटाई के बाद उसका एक बड़ा हिस्सा फेंक दिया जाता है। जबकि उसका कई तरह से उपयोग किया जा सकता है।' उन्होंने कहा कि पौधे से केले और उसकी पत्तियों की कटाई के बाद पौधे को काट कर फेंक दिया जाता है या खेत में ही सड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। लेकिन इसे फेंकने की बजाय एक नए उद्योग की शक्ल दी जा सकती है।

आरकोट ने कहा कि हालांकि बेकार हिस्से का कुछ लोग टेक्सटाइल और खाद के रूप में इस्तेमाल करते हैं। लेकिन यह काम बहुत छोटे स्तर पर किया जाता है। केले के फेंक दिए जाने वाले हिस्से का इस्तेमाल बढ़ाने के लिए यूएनएसडब्ल्यू की प्रोफेसर मार्टिना स्टेनजेल और आरकोट ने मिलकर काम किया और केले के पौधे के सेलूलोज का इस्तेमाल कर पैकेजिंग मैटिरियल तैयार किया।

शोधकर्ताओं ने कहा कि सेलूलोज का इस्तेमाल पैकेजिंग, कागज के उत्पाद, टेक्सटाइल और यहां तक कि चिकित्सा अनुप्रयोगों जैसे घाव भरने और दवा वितरण में भी किया जा सकता है। रॉयल बॉटेनिक गार्डन सिडनी में उगाए गए केले के पौधों से स्यूडोस्टेम (छाल) का उपयोग करते हुए शोधकर्ताओं ने पैकेजिंग विकल्प के रूप में इसकी उपयुक्तता का परीक्षण करने के लिए सेल्यूलोज को निकाला। आरकोट ने कहा, 'स्यूडोस्टेम में 90 फीसदी पानी होता है। पैकेजिंग मैटेरियल तैयार करने के लिए हमने पहले स्यूडोस्टेम को प्रयोगशाला में ओवन के जरिये सुखाया और फिर इसे बहुत महीन पाउडर में मिलाया। कई रासायनिक प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद इससे पैकेजिंग मैटेरियल तैयार किया। उन्होंने कहा कि इसकी मदद से मजबूत शॉपिंग बैग समेत कई प्रकार की सामग्रियां बनाई जा सकती हैं।

पढ़ाई को गंभीरता से लिया था : आयुष्मान खुराना

फिल्म इंडस्ट्री में ऐसे कई कलाकार हैं, जो लोकप्रिय तो हैं, पर उनके पास डिग्री नहीं है। अक्सर कम उम्र में शुरुआत करने वाले कलाकारों के पास इतना वक्त नहीं होता कि वे पढ़ाई पूरी कर पाएं। वहीं अमिताभ बच्चन, शाह रुख खान, जॉन अब्राहम, तापसी पन्नू, कृति सैनन, के के मेनन, परिणीति चोपड़ा जैसे कई कलाकारों ने पढ़ाई पूरी करने के बाद फिल्मों में कदम रखा। मास कम्युनिकेशन में परास्नातक आयुष्मान खुराना का मानना है कि फिल्मों का व्यवसाय अच्छी तरह से समझने के लिए पढ़ा-लिखा होना बहुत जरूरी है। वह शाह रुख खान के फैन रहे हैं, जिन्हें देखकर लगता था कि सिर्फ अभिनेता ही नहीं, बल्कि बुद्धिमान अभिनेता बनना जरूरी है। यही वजह है कि मैंने पढ़ाई को गंभीरता से लिया था। कॉलेज में टॉप भी किया, ताकि उनकी तरह बुद्धिमान अभिनेता बन सकूं।

धारावाहिक के रूप में दिखाया जाएगा डॉ. आंबेडकर का सफर

इन दिनों लोकप्रिय हस्तियों की बॉयोपिक बनाने का चलन जोरों पर है। सिनेमा के बाद टीवी इंडस्ट्री भी इस चलन को भुनाने का कोई मौका नहीं छोड़ रही है। अब भारत के संविधान निर्माता, चिंतक, समाज सुधारक डॉ. भीमराव आंबेडकर की जिंदगी 'एक महानायक : बीआर आंबेडकर' धारावाहिक के रूप में टीवी पर दिखाई जाएगी।

स्मृति शिंदे की सोबो फिल्म्स के प्रोडक्शन में बन रहे इस धारावाहिक को 17 दिसंबर से एंड टीवी पर प्रसारित किया जाएगा। धारावाहिक में डॉ. भीमराव की किशोरावस्था से लेकर भारतीय संविधान समिति के कर्ता-धर्ता बनने तक उनके सफर को दिखाया जाएगा। डॉक्टर आंबेडकर अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। उन्होंने छुआ-छूत और जातिवाद को खत्म करने के लिए कई आंदोलन भी किए। बाबा साहेब ने अपना पूरा जीवन समाज के पिछड़े वर्ग के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। इस धारावाहिक में उनकी जिंदगी से जुड़ी कई अनसुनी कहानियों को दिखाया-बताया जाएगा। शो में भीमराव की भूमिका को मराठी कलाकार प्रसाद जवाडे अभिनीत करेंगे।